ग्रथमाला नवर ६ ठो

श्रीमद्विजयानदसूरी (आत्मारामजी महाराज)

विरचीत

श्री

जैनधर्म विषयिक प्रश्नोत्तर.

छपावी प्रसिद्ध करनार,

श्री जैन आत्मानद सभा

भावनगर

वीर सवत २४३३ आत्म सं ११ वि स १९६३

अमदावाद.

युनियन प्रिन्टिंग प्रेस कपनी लीमीटेडमा

मोतीलाल शामलदासे छाप्या,

कींमत आठ आना

शेठ खजांभाइ देवराजना तरफथी भेट

प्रस्तावना.

परोपकारी महात्माउना लेखोनी महत्वता अपूर्व होय छे. तेना ज्ञोक्ता थवानो आधार तेना ग्राहकना अधिकार उपर रहे छे, एवा अपूर्व लेखोनु रहस्य आदर-पूर्वक अन्यासथीज प्रगट थाय छे, अने तेनुं आदर पूर्वक श्रवण पठन अने मनन करवाथीज अते ते फलदायी नीवमे छे

पवित्र जैन दर्शन जणावे छे के आ जगतमा अनादि कालथीज मिथात्व छे. जे मानवाने आपणने प्रत्यक्ष आदि कारणो मोजुद छे, आवा मिथ्यात्वना कारणरुप अज्ञानरुपी अंधकारनो नाश करवा परम उपकारी पूज्यपाद गुरु श्री विजयानंदसूरी (आत्मारामजो)ए आ जेनधर्म विपयोक प्रश्नोत्तर नामनो ग्रंथ रच्यो छे, आ अने आ सिवायना बीजा आ महात्माए बनावेला ग्रंथो प्रथमथीज प्रशंसनीय थता आवेला छे.

आ हित धर्मनो जे न्नावना तेमना मगजमा जन्म पामेली ते लेख रुपे बाहार आवताज आखो डुनीयाना पंमीतो—ज्ञानीउ धर्म गुरुउ—

शेठ रवजीभाई देवराजना तरफथी भेट

प्रस्तावना.

परोपकारी महात्माउना लेखोनी महत्वता अपूर्व होय छे तेना जोक्ता थवानो आधार तेना ग्राहकना अधिकार उपर रहे छे, एवा अपूर्व लेखोनु रहस्य आदर पूर्वक अभ्यासथीज प्रघट थाय छे, अने तेनु आदर पूर्वक श्रवण पठन अने मनन करवाथीज अते ते फलदायी नीवडे छे

पवित्र जैन दर्शन जणावे छे के आ जगतमा अनादि कालथीज मिथात्व छे जे मानवाने आपणने प्रत्यक्ष आदि कारणो मोजुद छे, आवा मिथ्यात्वना कारणरुप अज्ञानरुपी अंधकारनो नाश करवा परम उपकारी पूज्यपाद गुरु श्री विजयानदसूरी (आत्मारामजो)ए आ जैनधर्म विषयीक प्रश्नोत्तर नामनो ग्रंथ रच्यो छे, आ अने आ सिवायना बीजा आ महात्माए बनावेला ग्रथो प्रथमथीज प्रशंसनीय थता आवेला छे.

आ हित धर्मनी जे भावना तेमना मगजमा जन्म पामेली ते लेख रुपे बाहार आवतांज आखो दुनीयाना पंडीतो—ज्ञानीउ धर्म गुरुउ—

ाखको अने सामान्य लोको उपर जे असर करे
ा तेज तेनी उपयोगिता दर्शाववाने बस छे

जैनधर्म अनादि कालथीज छे, अने ते बौ
द्धधर्मथी तदन अलग अने पेहेलाथीज छे, ते ते
मज जैनमतना पुस्तकोनी उत्पत्ति—कर्मनु स्व-
रूप—जीनप्रतिमानी पूजा करवानो तीर्थंकरोए
करेलो उपदेश विगेरे बीजी केटलीक उपयोगी
ाबतोनो आ ग्रथमा समावेश करेला छे

वर्तमान कालमा व्यवहारिक केलवणी लो
ेला युवको जेने जैनधर्मनु तत्व शु छे तेनाथी
अजाण छ तेओने तेमज अन्य धर्मीओने आ ग्रथ
आद्यत वाचवाथी जैनधर्मनु टुटु टुटु स्वरुप के-
टलेक अशे मालम पडे तेम छे

कोइपण निष्पक्षपाती तत्व जीज्ञासु पुरुष
आ ग्रथनु स्वरुप आद्यत अवलोकशे तो एक जै
नना महान् विद्वाने भारतवर्षनी जैन प्रजा उ-
पर आवा उत्तम ग्रथो रची महद् उपकार कीधो
े ते साथे आ विद्वान शिरोमणी महाशय पुरुष

सांप्रत काले विद्यमान नथी तेने माटे अतुल खेद प्राप्त थशे

छेवटे अमारे आनंद सहित जणाववु पडेछे के मरहुम पूज्यपादना हृदयमा अनगार धर्मनी साथे परोपकारपणानी पवित्र गाया जे पडी हतो ते गाया तेमना परिवार मंडलना हृदयमा ऊतरी छे पोताना गुरुनुं यथाशक्ति अनुकरण करवाने ते शिष्य वर्ग त्रिकरण शुद्धिथी प्रवर्त्ते छे तेनी साथे विद्या, ऐक्यता स्वार्पण अने परोपकार बुद्धि तेमना शिष्य वर्गमा प्रत्यक्ष मूर्तिमान जोवामा आवे छे अने तेओ परम सात्विक होइ सर्वने तेवाज देखे छे अने तेवाज करवा इछे छे अने तेउनु जीवन गुरु भक्तिमय छे आवा केटलाक गुणोने लइने आवा महान् ग्रंथोने प्रसिद्धीमा लावी जैन समुहमा मूकी जैनधर्मनुं अजवाळु पाडवा आ ग्रंथनो आवृती करवानो समय आव्यो छे जो के आ ग्रथनो प्रथम आवृती आजथी अढार वर्ष उपर सवत १९४५ नी सालमां मरहुम गुरुराज नी समत्तीथी राजेश्री गीरधरलाल हीराभाई

पालणपुर दरबारी न्यायाधीशे बाहार पाडी हती, परतु तेनी एक नकल हालमा नहीं मलवाथी ते पूज्यपाद गुरुराजना परिवार मन्डलनी आज्ञानुसार तेनी आ बीजी आवृत्ती प्रमाणे बाहार पाडीलोछे

आवा उपयोगी महान ग्रंथ अमारी सभा तरफथी बहार पडे तेमा अमोने मोटु मान छे जेथी ते बाबतमा अमोने आज्ञा आपनार ए महान गुरुराजना परिवार मन्डलनो अमो उपकार मानवो आ स्थले चूको जता नथी

छेवटे आ ग्रथनो प्रथम आवृती प्रकट करावनार राजश्री गोरधनलाल हीराभाइए अमारी सभा तरफथी बीजी आवृती प्रकट करवानी आपेल मान भरेलो परवानगी माटे तेमनो पण उपकार मानीए छीए,

आ ग्रथ छपावताना दरम्यान कच्छ मोटी खाखरना रहेनार शेठ रणसीभाइ तेमज रवजी भाइ तथा नेणसीभाइ देवराजे तेनी सारी सख्यामा कोपीओ लेवानो इच्छा जणाववाथी आवा ज्ञान खाताना कार्यना उत्तेजनार्थे आ तेमए क-

रेली मदद माटे अमो तेउने धन्यवाद आपीए छीये अने तेमा शेठ रवजीभाइ देवराजे खरीदेल बुको तमाम पोते पोता तरफथी वगर कीमते आपवाना होवाथी तेमना आवा स्तुती भरेला कार्यने माटे अमोने वधारे आनद थाय छे

ग्रंथनी शुद्धता अने निर्दोषता करवानी सावधानी राख्या छतां कदी कोइ स्थले दृष्टी दोपथी के प्रमादथी भूल थयेली मालम पडे तो सुज्ञ पुरुषो सुधारी वाचशो अने अमोने लखी जणावशो तो तेउनो उपकार मानीशुं

संवत १९०३ ना फागण सुद ५ रविवार देहीरोड

श्री जैन आत्मानंद सभा.
भावनगर.

—*०+०*—

अर्पणपत्रिका.

सद्गुण संपन्न स्वधर्म प्रेमी गुरुभक्त
सुज्ञ शेठ श्री रणशीभाई देवराज
मु मोटी खाखर.
(कच्छ)

आप एक उदार अने श्रीमान जैन गृहस्थ छो जैनधर्म प्रत्येनो तेमज मुनि महाराजाउ प्रत्येनो आपनो अवर्णनीय प्रेम, श्रद्धा, अने लागणी प्रसशनीय छे. जैनधर्मना ज्ञाननो वहोळो फेलावो थाय तेवा यत्न करवामा आप प्रयत्नशील छो, अने तेवा उत्तम कार्यना नमुनारुपे आपे आ ग्रंथ छपाववामा योग्य मदद आपी छे तेमज अमारी आ सभा उपर अत्यत प्रीति धरावो छो. विगेरे कारणोथी आ ग्रथ अमे आपने अर्पण करवानी रजा लइए छीए

प्रसिद्धकर्त्ता.

जैन प्रश्नोत्तर.

अनुक्रमणिका.

॥ श्री अर्हं नमः ॥

श्री जैन धर्म विषयिक प्रश्नोत्तर.

प्रश्न–जिन और जिनशासन इन दोनो शब्दोंका अर्थ क्याहै

उत्तर–जो राग द्वेष क्रोध मान माया लोभ काम अज्ञान रति अरति शोक हास्य जुगुप्सा अर्थात् घिणा मिथ्यात्व इत्यादि भाव शत्रुयोंकों जीते तिसकों जिन कहते है यह जिन शब्दका अर्थहै ऐसे पूर्वोक्त जिनकी जो शिक्षा अर्थात् उत्सर्गापवादरूप मार्गद्वारा हितको प्राप्ति अहितका परिहार अंगीकार और त्याग करना तिसका नाम जिनशासन कहतेहै. तात्पर्य यहहैकि जिनके कहे प्रमाण चलना यह जिनशासन शब्दका अर्थहै अभिधान चिंतामणि और अनुयोगद्वार वृत्यादिमेंहै.

प्र २–जिनशासनका सार क्याहै.

उ—जिनशासन और द्वादशांग यह एकहीके दो नामहै इस वास्ते द्वादशांगका सार आचारंगहै और आचारंगका सार तिसके अर्थका यथार्थ जानना तिस जाननेका सार तिस अर्थका यथार्थ परकों उपदेश करना तिस उपदेशका सार यह कि चारित्र अंगीकार करनं अर्थात् प्राणिवध १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ रात्रिन्नोजन ६ इनका त्याग करना इसको चारित्र कहतेहैं अथवा चरणसत्तरीके ७० सत्तर न्नेद और करण सत्तरिके ७० सत्तर न्नेद ये एकसौ चालीस १४० न्नेद मूल गुण उत्तर गुणरूप अंगीकार करे तिसकों चारित्र कहते है तिस चारित्रका सार निर्व्वाणहै अर्थात् सर्व कर्मजन्य उपाधिरूप अग्निसें रहित शीतलीन्नूत होना तिसका नाम निर्व्वाण कहतेहै तिस निर्व्वाणका सार अव्याबाध अर्थात् शारीरिक और मानसिक पीमा रहित सदा सिद्ध मुक्त स्वरूपमे रहना यह पूर्वोक्त सर्व जिनशासनका सारहै यह कथन श्री आचारंगकी निर्युक्तिमेंहै

प्र. ३–तीर्थंकर कौन होते है और किस जगं होतेहै और किस कालमे होतेहै

उ–जे जीव तीर्थंकर होनेके नवसें तोसरें नवमें पहिले वीस स्थानक अर्थात् वीस धर्मके कृत्य करे तिन कृत्योंसे वगा नारी तीर्थंकर नामकर्म रूप पुन्य निकाचित उपार्जन करे तव तहासे काल करके प्रायें स्वर्ग देवलोकमें उत्पन्न होतेहै तहासें काल कर मनुष्य क्षेत्रमे वहुत नारी रिद्धि परिवारवाले उत्तम शुद्ध राज्यकुलमें उत्पन्न होतेहै जेकर पूर्व जन्ममे निकाचित पुन्यसे नोग्य कर्म उपार्जन करा होवे तवतो तिस नोग्य कर्मानुसार राज्य नोगविलास मनोहर नोगतेहै, नही नोग्यकर्म उपार्जन करा होवे तव राज्यनोग नही करतेहै इन तीर्थंकर होनेवाले जीवाको माताके गर्नमेंही तीन ज्ञान अर्थात् मति श्रुति अवधी अवश्यमेवही होते हे, दीक्षाका समय तीर्थंकरके जीव अपने ज्ञानसेंही जान लेतेहै जेकर माता पिता विद्यमान होवें तवतो तिनकी आज्ञा लेके जेकर माता पिता विद्यमान नही होवें तव

अपने न्नाइ आदि कुटवकी आज्ञा लेके दीक्षा लें-
नेके एक वर्ष पहिले लोकातिक देवते आकर क-
हते है हे न्नगवान् ! धर्म तीर्थ प्रवर्त्तावो तद पीछे
एक वर्ष पर्यत तीनसौ कोटि अठयास्सी करोम
असीलाख इतनी सोने मोहरें दान देके वमे म-
होत्सवसे दीक्षा स्वयमेव लेतेहै किसीको गुरु
नही करतेहै क्योंकि वेतो आपही त्रैलोक्यके गुरु
होनेवालेहे और ज्ञानवतहै तद पीछे सर्व पापके
त्यागी होके महा अद्भुत तप करके घाती कर्म चार
क्षय करके केवली होतेहै तद पीछे ससार तारक
न्नपदेश देकर धर्म तीर्थके करनेवाले ऐसे पुरुष
तीर्थकर होतेहै न्नपर कहे हुए वीस धर्म कृत्योंका
स्वरूप सक्षेपसे नीचे लिखतेहै अरिहत १ सिद्द
२ प्रवचन सघ ३ गुरु आचार्य ४ स्थविर ५ व-
हुश्रुत ६ तपस्वी ७ इन सातों पदाका वात्सल्य
अनुराग करनेसें इन सातोंके यथावस्थित गुण
न्नत्कीर्तन अनुरूप न्नपचार करनेसें तीर्थकर नाम-
कर्म जीव बाधताहे इन पूर्वोक्त सातों अर्हतादि
पदोंका अपने ज्ञानमे वार वार निरतर स्वरूप

चिंतन करे तो तीर्थंकर नाम कर्म बांधे ८ दर्शन सम्यक्त ए विनय ज्ञानादि विषये १० इन दोनोकों निरतिचार पालेतो तीर्थंकर नाम कर्म बांधे जो जो संयमके अवश्य करने योग्य व्यापारहै तिसकों आवश्यक कहतेहै तिसमें अतिचार न लगावे तो तीर्थंकर नाम कर्म बांधे ११ मूल गुण पाच महाव्रतमें और उत्तर गुण पिंड विशुद्ध्यादिक ये दोनो निरतिचार पाले तो तीर्थंकर नाम कर्म बांधे १२ क्षण लव मूहुर्त्तादि कालमें संवेग भावना शुभ ध्यान करनेसें तीर्थंकर नाम कर्म बांधताहै १३ उपवासादि तप करनेसें यति साधु जनको उचित दान देनेसें तीर्थंकर नाम कर्म बांधताहै १४ दश प्रकारकी वैयावृत्य करनेसें ती० १५ गुरुआदिकाकों तिनके कार्य करणेसे गुरु आदिकोके चित्त स्वास्थ रूप समाधि उपजावनेसें ती० १६ अपूर्व अर्थात् नवा नवा ज्ञान पढनेसें ती० १७ श्रुत भक्ति प्रवचन विषये प्रभावना करनेसें ती० १८ शास्त्रका बहुमान करनेसें ती० १९ यथाशक्ति अर्हदुपदिष्ट मार्गकी देशनादि क-

रके शासनकी प्रभावना करे तो तीर्थंकर नाम कर्म बांधेहै २० कोई जीव इन वीसों कृत्योंमे चाहो कोइ एक कृत्यसें तीर्थंकर नाम कर्म बांधे है कोइ दो कृत्योंसे कोइ तीनसे एव यावत् कोइएक जीव वीस कृत्योंसे बांधेहै यह उपरका कथन ज्ञाता धर्मकथा १ कल्पसूत्र २ आवस्यकादि शास्त्रोंमे है और तीर्थंकर पांच महाविदेह पांच भरतपांच ऐरवत इन पदरा क्षेत्रोंमे उत्पन्न होते है और इस भरतखन्डमें आर्य देश साढे पच्चीसमे उत्पन्न होतेहै वे देश २५॥ साढे पचचीस ऐसेहै

उत्तर तर्फ हिमालय पर्वत और दक्षिण तर्फ विंध्याचल पर्वत और पूर्व पश्चिम समुद्रांत तक इसकों आर्यावर्त्त कहते है इसके वीचही साढे-पचवीश देशहै तिनमें तीर्थंकर उत्पन्न होतेहै यह कथन अभिधान चिंतामणि तथा पन्नवणाआदि शास्त्रोंमेहै अवसर्प्पिणि कालके ६ आरे अर्थात् ६ हिस्से है तिनमे तीसरे चौथे विभागमे तीर्थंकर उत्पन्न होतेहै और उत्सर्प्पिणि कालके ६ विभागोंमेंसें तीसरे चौथे विभागमे उत्पन्न होतेहै.

यह कथन जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति आदि शास्त्रोंमेंहै

प्र. ४–तीर्थंकर क्या करतेहै और तीर्थंकरोंके गुणाका वरनन करो.

उ.–तीर्थंकर भगवंत बदलेके उपकारकी इच्छा रहित राजा रंक ब्राह्मण और चंडाल प्रमुख सर्व जातिके योग्य पुरुषाको एकात हितकारक संसार समुद्रकी तारक धर्मदेशना करतेहै और तीर्थंकर भगवतके गुणतो इंद्रादिभी सर्व वरनन नही करसक्तेहै तो फर मेरे अल्प बुद्धीवालेकी तो क्या शक्तिहै तोभी संक्षेपसें भव्यजीवाके जानने वास्ते थोडासा वरनन करतेहै अनत केवल ज्ञान १ अनत केवल दर्शन २ अनंत चारित्र ३ अनंत तप ४ अनंत वीर्य ५ अनंत पाच लब्धि ६ क्षमा ७ निर्लोभता ८ सरलता ९ निरभिमानता १० लाघवता ११ सत्य १२ संयम १३ निरिछकता १४ ब्रह्मचर्य १५ दया १६ परोपकारता १७ राग द्वेष रहित १८ शत्रु मित्रभाव रहित १९ कनक पथर इन दोनो ऊपर सम भाव २० स्त्री और तृण ऊपर समभाव २१ मांसाहार रहित २२ मदिरा-

पान रहित २३ अन्नक्ष्य न्नक्षण रहित २४ अगम्य गमन रहित २५ करुणा समुड २६ सूर २७ वीर २८ धीर २ए अक्षोन्न्य ३० परनिंदा रहित ३१ अपनी स्तुति न करे ३२ जो कोइ तिनके साथ विरोध करे तिसकोंन्नी तारनेकी इछावाले ३३ इत्यादि अनत गुण तीर्थंकर न्नगवंतोमेंहे सो कोइन्नी शक्तिमान नहीहै जो सर्व गुण कह सके और लिख सके

प्र ५–जैन मतमें जे क्षेत्र माहाविदेहादि- कहै तहा इहाका कोइ मनुष्य जा सक्ताहै कि नही

उ –नही जा सकताहै क्योंकी रस्तेमें वर्फ पाणी जम गयाहै और वम्रे वम्रे ऊचे पर्वत रस्तेमेंहै वम्री वम्री नदीयों और उजाम जगल रस्तेमेंहे अन्य वहुत विघ्नहै इस वास्ते नही जासक्ताहै

प्र ६–न्नरत क्षेत्र कोनसाहै और कितना लावा चौम्राहै.

उ.–जिसमे हम रहेतेहै यही न्नरतखम्रहै इसकी चौम्राइ दक्षिणसे उत्तर तक ५२६० किंचित् अधिक उत्सेधागुलके हिसावसें कोस होतेहै

और वैताढ्य प्रवर्तके पास लंबाइ कुछक अधिक ए0000 नवे हजार नरतेवागुलके हिसावसे कोस होतेहै चीन रूसादि देश सर्व जैन मतवाले नरतखंमके वीचही मानतेहे यह कथन अनुयोगद्वारकी चूर्णि तथा अंगुल सत्तरी ग्रथानुसारहे कितनेक आचार्य नरतखंमका प्रमाण अन्यतरेके योजनोसें मानतेहै परं अनुयोगद्वारकी चूर्णि कर्त्ता श्री जिनदासगणि क्षमाश्रमणजी तिनके मतकों सिद्धांतका मत नही कहतेहै

प्र ७–नरत क्षेत्रमे आजके कालसें पहिला कितने तीर्थंकर हूएहै

उ.–इस अवसर्प्पिणि कालमें आज पहिलां चोवीस तीर्थंकर हूएहै जेकर समुच्चय अतीत कालका प्रश्न पूछतेहो तब तो अनत तीर्थंकर इस नरत खंममे होगएहै.

प्र ८–इस अवसर्प्पिणि कालमे इस नरतखममे चोवोस तीर्थंकर हूएहै तिनके नाम कहो.

उ –प्रथम श्री ऋषनदेव १ श्री अजीतनाथ २ श्री सन्नवनाथ ३ श्री अन्नि-

श्री सुमतिस्वामी ५ श्री पद्मप्रभ ६ सुपार्श्वनाथ ७ श्री चंद्रप्रभ ८ श्री सुविधिनाथ पुष्पदंत ९ श्री शीतलनाथ१० श्री श्रेयांसनाथ११ श्रीवासुपूज्य१२ श्रीविमलनाथ१३ श्री अनंतनाथ१४ श्री धर्मनाथ १५ श्रीशांतिनाथ१६ श्री कुंथुनाथ१७ श्रीअरनाथ १८ श्री मल्लिनाथ १९ श्री मुनिसुव्रतस्वामी २० श्रीनमिनाथ२१ श्री अरिष्टनेमि२२ श्री पार्श्वनाथ २३ श्रीवर्द्धमानस्वामी महावीरजी २४ ये नामहैं

प्र ९–इन चौवीस तीर्थकरोंके माता पिताके नाम क्या क्याथे

उ.–नाभि कुलकर पिता श्रीमरूदेवी माता १ जितशत्रु पिता विजय माता २ जितारि पिता सेना माता ३ संवर पिता सिद्धार्था माता ४ मेघ पिता मंगला माता ५ धर पिता सुसीमा माता ६ प्रतिष्ट पिता पृथ्वी माता ७ महसेन पिता लक्ष्मणा माता ८ सुग्रीव पिता रामा माता ९ दृढरथ पिता नंदामाता १० विष्णु पिता विष्णुश्री माता ११ वसुपूज्य पिता जया माता १२ कृतवर्मा पिता श्यामा माता १३ सिंहसेन पिता सु

यशा माता १४ न्नानु पिता सुव्रता माता १५ विश्वसेन पिता अचिरा माता १६ सूर पिता श्री माता १७ सुदर्शन पिता देवी माता १८ कुन्न पिता प्रन्नावति माता १ए सुमित्र पिता पदमावति माता २० विजयसेन पिता वप्रा माता २१ समुद्रविजय पिता शिवा माता २२ अश्वसेन पिता वामा माता २३ सिद्धार्थ पिता त्रिशला माता २४ ये चौवीस तीर्थकरोंके क्रमसे माता पिताके नाम जान लेने चोवीसही तीर्थकरोंके पिता राजेथे. वीसमा २० और बावीसमा ये दोनो हरिवंश कुलमे उत्पन्न हुएथे और गौतम गोत्री थे शेष २२ वावीस तीर्थकर ईक्ष्वाकुवंशमें उत्पन्न हुएथे और काश्यप गोत्री थे

प्र १०—श्री ऋषन्नदेवजीसें पहिला इस न्नरतखन्डमे जैन धर्म था के नही.

उ.—श्री ऋषन्नदेवजीसे पहिला इस अवसर्पिणि कालमे इस न्नरतखन्डमे जैनधर्मादि कोइ मतकान्नी धर्म नहीथा इस कथनमें जैन शास्त्रही प्रमाणहै

प्र ११–जेसा धर्म श्रीऋषभदेवस्वामीने चलायाथा तैसाही आज पर्यंत चलाआताहै वा कुछ फेरफार तिसमें हूआहै

उ –श्रीऋषभदेवजीने जैसा धर्म चलायाथा तैसाही श्री महावीर भगवते धर्म चलाया इसमें किंचित्मात्रभी फरक नहीहै सोइ धर्म आजकाल जैन मतमें चलताहै

प्र –१२–श्री महावीरस्वामी किस जगे जन्मेथे ओर तिनके जन्म हुआको आज पर्यंत १९४५ संवत तक कितने वर्ष हुएहै

उ –श्रीमाहावीरस्वामी क्षत्रियकुंडग्राम नगरमें उत्पन्न हुएथे और आज संवत १९४५ तक २४८७ वर्षके लगभग हुएहे विक्रमसें ५४२ वर्ष पहिले चैत्र शुदि १३ मंगलवारकी रात्रि और उत्तराफाल्गुनि नक्षत्रके प्रथम पादमे जन्म हुआथा

प्र १३–क्षत्रियकुंडग्राम नगर किस जगेंथा

उ –पूर्व देशमें सूबेविहार अर्थात् बहार तिसके पास कुंडलपुरके निजदीक अर्थात् पासहोथा

प्र १४–महावीर भगवंत देवानंदा ब्राह्म-

णीकी कूखमें किस वास्ते उत्पन्न हूये.

उ—श्रीमहावीर भगवतके जीवने मरीचीके भवमें अपने उंच गोत्र कुलका मद अर्थात् अभिमान कराथा तिस्से नीच गोत्र वाध्याथा सो नीच गोत्रकर्म बहुत भवोंमें भोगना पडा तिसमेंसे थोमासा नीच गोत्र भोगना रह गयाथा तिसके प्रभावसे देवानंदाकी कूखमे उत्पन्न हुए उर नीच गोत्र भोगा

प्र १५—तो फेर जेकर हम लोक अपनी जात उर कुलका मद करे तो अछा फल होवेगा के नही, मद करना अछाहै के नही

उ.—जेकर कोइभी जीव जातिका १ कुलका २ बलका ३ रूपका ४ तपका ५ ज्ञानका ६ लाभका ७ अपनी ठकुराइका ८ ये आठ प्रकारका मद करेगा सो जीव घणे भवा तक ये पूर्वोक्त आठहो वस्तु अछी नही पावेगा अर्थात् आठोही वस्तु नीच तुछ मिलेगा इस वास्ते वुद्धिमान पुरुषकों पूर्वोक्त आठहो वस्तुका मद करना अछा नहीहे.

प्र १६–जितने मनुष्य जैनधर्म पालते होवे तिन सर्व मनुष्योको अपने न्नाइ समान मानना चाहियेके नही जेकर न्नाइसमान मानेतो तिनके साथ खाने पीनेकी कुछ अम्चलहै के नही

उ जितने मनुष्य जैन धर्म पालते होवे तिन सर्वके साथ अपने न्नाइ करतान्नी अधिक पियार करना चाहिये यह कथन श्राद्द दिनकृत्य ग्रंथमेंहै और तिनोकी जातीया जेकर लोक व्यवहार अस्पृश्य न होवे तदा तिनके साथ खाने पीनेकी जैन शास्त्रानुसार कुछ अम्चल मालुम नही होतीहै क्योंकि जब श्रीमहावीरजीसें ७० वर्ष पीछे और श्रीपार्श्वनाथजीके पीछे छठे पाट श्रीरत्नप्रन्नसूरिजीने जब मारवाम्के श्रीमाल नगरसें जिस नगरीका नाम अब न्निन्नमाल कहेतह तिस नगरसें किसी कारणसें न्नीमसेन राजेका पुत्र श्रीपुंज तिसका पुत्र उत्पलकुमर तिसका मंत्री ऊहम् ए दोनो जणे १८ हजार कुटब सहित निकलके योधपुर जिस जगेहै तिससें वीस कोसके लगन्नग उत्तर दिशिमे लाखों आदमीयोकी

वस्ती रूप उपकेशपट्टन नामक नगर वसाया, तिस नगरमें सवालक्ष आदमीयांकों रत्नप्रभसूरिने श्रावक धर्ममे स्थाप्या तिस समय तिनके अठारह गोत्र स्थापन करे तिनके नाम तातहड गोत्र १ वापणा गोत्र २ कर्णाट गोत्र ३ वलहरा गोत्र ४ मोराक्ष गोत्र ५ कुलहट गोत्र ६ विरहट गोत्र ७ श्री श्रीमाल गोत्र ८ श्रेष्टि गोत्र ९ सुचिंती गोत्र १० आइचणाग गोत्र ११ भूरि गोत्र भटेवरा १२ भाद्र गोत्र १३ चीचट गोत्र १४ कुंभट गोत्र १५ डिडु गोत्र १६ कनोज गोत्र १७ लघुश्रेष्टी १८ येह अठारही जैनी होनेसे परस्पर पुत्र पुत्रीका विवाह करने लगे और परस्पर खाने पीने लगे इनमेंसें कितने गोत्रांवाले रजपूतथे और कितने ब्राह्मण और वनियेभी थे इस वास्ते जेकर जैन शास्त्रसे यह काम विरुद्ध होता तो आचार्य महाराज श्रीरत्नप्रभसूरिजी इन सर्वकों एकठे न करते इसी रीतीसें पीछे पोरवाड उसवालादि वंश थापन करे गये है, अन्य कोइ अडचलतो नहीहै परंतु इस कालके वैश्य लोक अपने समान किसी

दूसरी जातिवालेको नही समझतेहै यह अरूचलहै

प्र १७–जैन धर्म नही पालता होय तिसके साथ तो खाने पीने आदिकका व्यवहार न करे परंतु जो जैन धर्म पालता होवे तिसके साथ उक्त व्यवहार होसके के नही

उ –यह व्यवहार करना न करना तो वणिये लोकोंके आधीनहै और हमारा अभिप्राय तो हम ऊपरके प्रश्नोत्तरमे लिख आएहै

प्र. १८–जैन धर्म पालने वालोंमे अलग अलग जाती देखनेमें आतीहै ये जैन शास्त्रानुसार है के अन्यथाहै और ए जातियों किस वखतमे हूइहै

उ.–जैन धर्म पालने वाली जातियों शास्त्रानुसारे नही वनीहै, परतु किसी गाम, नगर पुरुप धंधेके अनुसारे प्रचलित हूइ मालम पडती है श्रीमाल उसवालकातो सवत् उपर लिख आयेहे और पोरवाड वंश श्रीहरिभद्रसूरिजीने मेवाड देशमें स्थापन करा और तिनका विक्रम सवत् स्वर्गवास होनेका ५८५ का ग्रंथोमे लिखाहै

और जैपुरके पास .खंडेला गामहै तहा वीरात् ६४३ मे वर्षे जिनसेनआचार्यने ८२ गाम रजपूतोंके और दो गाम सोनारोंके एवं सर्व गाम ८४ जैनी करे तिनके चौरासी गोत्र स्थापन करे सो सर्व खण्डेलवाल वनिये जिनकों जैपुरादिक देशोंमें सरावगी कहतेहै और संवत् विक्रम २१७ मे हंसारसें दश कोशके फासलेपर अग्रोहा नामक नगरका उज्जड टेकरा वडा भारीहै तिस अग्रोहे नगरमे विक्रम संवत् २१७ के लगभग राजा अग्रके पुत्राको और नगरवासी कितनेही हजार लोकाकों लोहाचार्यने जैनी करा, नगर उजाड हूआ पीछे राजभ्रष्ट होनेसे और व्यापार वणिज करनेसें अग्रवाल वनिये कहलाये. इसी तरे इस कालकी जैनधर्म पालने वाली सर्व जातिया श्री महावीरसे ७० वर्ष पीछेसें लेके विक्रम सवत् १५७५साल तक जैन जातियो आचार्योंने वनाइहै तिनसें पहिला चारोंही वर्ण जैन धर्म पालते थे इस समयेकी जातियो नहीथी इस प्रश्नोत्तरमे जो लेख मैंने लिखाहै सो वहुत ग्रंथोमे मैंने ऐसा लेख बां-

चाहै परतु मैने अपनी मनकल्पनासे नही लिखाहै

प्र १९–पूर्वोक्त जातीयोंमेंसें एक जाती-वाले दूसरी जाति वालोसें अपनी जातिकों उत्तम मानतेहै और जाति गर्व करतेहै तिनकों क्या फल होवेगा

उ –जो अपनी जातिकों उत्तम मानतेहै यह केवल अज्ञानसें रूढी चली हूइ मालम होती है क्योके परस्पर विवाह पुत्र पुत्रीका करना और एक न्यातमें एकठे जीमणा और फेर अपने आ-पको उचा मानना यह अज्ञानता नहीतो दूसरी क्याहै और जातिका गर्व करनेवाले जन्मातरमें नीचजाति पावेगें यह फल होवेगा

प्र २०–सर्व जैन धम पालनवालीयो वैश्य जातिया एकठी मिल जायें और जात न्यात नाम निकल जावे तो इस काममे जैनशास्त्रकी कुछ मनाइहै वा नही

उ –जैन शास्त्रमेतो जिस कामके करनेसें धर्ममें दूषण लगे सो बातकी मनाइहै शेषतो लो-कोने अपनी अपनी रुढीयों मान रखीहै उपरले

प्रश्नोमें जव उसवाल वनाएथे तव अनेक जातियोकी एक जाति वनाइथी इस वास्ते अवभी कोइ सामर्थ पुरुष सर्व जातियोंको एकठो करे तो क्या विरोधहै.

प्र २१–देवानंदा व्राह्मणीकी कूखथी त्रिशला क्षत्रियाणीकी कूखमें श्रीमहावीरस्वामीको किसने और किसतरेसें हरण किना

उ–प्रथमदेवलोकके इन्द्रकी आज्ञासें तिसके सेवक हरिनगमेषी देवतानें संहरण कीना तिसका कारण यहहैकि कदाचित् नीच गोत्रके प्रभावसें तीर्थंकर होने वाला जीव नीच कुलमें उत्पन्न होवे परंतु तिस कुलमे जन्म नही होताहै इस वास्ते अनादि लोक स्थीतीक नियमोसें इन्द्र सेवक देवतासे यह काम करवाताहै.

प्र २२–अपनी शक्तिसें महावीरस्वामी त्रिशलाकी कूखमे क्यों न गये

उ –जन्म, मरण, गर्भमे उत्पन्न होना सर्व कर्मके अधीनहै नका [illegible] य विना जेन दूर होवे ऐसे

शक्ति नही चल सकिहै और.जो लोक इश्वरावतार देहधारीकों सर्वशक्तिमान् मानतेहै सो निकेवल अपने माने ईश्वरकी महत्वता जनाने वास्ते जेकर पक्षपात छोडके विचारीये तो जो चाहेसो कर सके ऐसा कोइभी ब्रह्मा, शिव, हरि, क्रायस वगेरे मानुष्योमे नही हूयाहै 'इनोके कर्तव्योकी इनका पुस्तकें वाचीये तव यथार्थ सर्व शक्ति विकल मालुम होजावेंगे. इस कारणसें सर्व जीव अपने करे कर्माधीनहै इस हेतुसे श्रीमहावीरस्वामी अपनी शक्तिसे त्रिशला माताकी कूखमे नही जासकेहै

प्र २३—महावीरस्वामीके कितने नामथे.

उ —वीर १ चरमतीर्थंकृत २ महावीर ३ वर्द्धमान ४ देवार्य ५ ज्ञातनदन ६ येह नामहै १ वीर वहुत सूत्रोंमै नामहै १ चरमतीर्थकृत कल्पादि सूत्रें २ महावीर ३ वर्द्धमान यहतो प्रसिद्धहै वहुत शास्त्रोंमे देवार्य, आवश्यकमें ज्ञातनदन, ज्ञानपुत्र, आचारग दशाश्रुतस्कधे ६ यहाँ एकठे हेमाचार्यकृत अभिधानचितामणि नाममालामेहै

प्र २४–श्रीमहावीरस्वामीका वमा भाइ और तिनकी वहिनका क्या क्या नामथा

उ –श्री महावीरस्वामीके वमे भाइका नाम नंदिवर्द्धन और वहिनका नाम सुदर्शना था

प्र २५– श्रीमहावीरके उपर तिनके माता पिताका अत्यंत रागथा के नही

उ.–श्रीमहावीरके उपर तिनके माता पिताका अत्यंत राग था क्योंकि कल्पसूत्रमें लिखा है कि श्रीमहावीरजीने गर्भमे ऐसा विचार कराके हलने चलनेसें मेरी माता दुख पावेहै. इस वास्ते अपने शरीरकों गर्भमेही हलाना चलाना वंध करा. तब त्रिशला माताने गर्भके न चलनेसे मनमे ऐसें मानाके मेरा गर्भ चलता हलता नहीहै इस वास्ते गल गया है, तवतो त्रिसला माताने खान, पान, स्नान, राग, रंग, सब छोड़के वहुत आर्त्त ध्यान करना शुरु करा, तब सर्व राज्यभवन शोक व्याप्त हुआ राजा सिद्धार्थभी शोकवंत हुआ. तब श्रीमहावीरजीनें अवधिज्ञानसें यह वनाव देखा तब विचार कराके गर्भमे रहे मेरे ऊपर, माता

पिताका इतना बमा न्नारी स्नेहहै तो जब मे इनकी रुबरु दीक्षा लेऊगा तो मेरे माता पिता अवश्य मेरे वियोगसें मर जाएगे, तब श्रीमहावीरजीने गर्न्नमेही यह निश्चय कराकि माता पिताके जीवते हुए मै दीक्षा नही लेवुगा

प्र. २६—इन श्रीमहावीरजीका वर्द्धमान नाम किस वास्ते रखा गया

उ—जब श्रीमहावीरजी गर्न्नमे आये तबसें सिद्धार्थराजाकी सप्ताग राज्य लक्ष्मी वृद्धिमान् हुइ, तब माता पिताने विचाराके यह हमारे सर्व वस्तुकी वृद्धि गर्न्नके प्रन्नावसें हुइहै. इस वास्ते इस पुत्रका नाम हम वर्द्धमान रखेंगे, न्नगवतके जन्म पीछे सर्व न्यात वंशीयोको रुबरु पुत्रका नाम वर्द्धमान रखा

प्र २७—इनका महावीर नाम किसनें दीना

उ परीषह और उपसर्गसे इनको न्नारी मरणात कष्ट तक हुए तोन्नी किंचित मात्र अपना धीर्य और प्रतिज्ञासें नही चलायमान हुए है, इस वास्ते इड, शक्र और न्नक्त देवतायोंने

श्रीमहावीर नाम दीना, यह नाम वहुत प्रसि

प्र. २८–श्रीमहावीरकी स्त्रीका नाम
था और वह स्त्री किसकी वेटीथी.

उ–श्रीमाहावीरकी स्त्रीका नाम यशो
था, और सिद्धार्थ राजाका सामत समरवी
पुत्री थी जिसका कौण्डिन्य गोत्र था

प्र २९–श्रीमहावीरजीने यशोदा स्त्री
साथ अन्य राज्य कुमारोंकी तरे महिलोंमे
विलास कराथा

उ–श्री महावीरजीके भोग विलासकी
मभी महिल वागादि सर्वथी परतु महावीर
तो जन्मसेही संसारिक भोग विलासोंसे वैरा
वान् निस्पृह रहते थे, और यशोदा परणी सो
माता पिताके आग्रहसें और किंचित् पूर्व जन
पार्जित भोग्य कर्म निकाचित भोगने वा
अन्यथातो तिनकी भोग्य भोगनेमे रति नही

प्र ३०–श्रीमहावीरजीके कोइ सतान हु
था तिसका नाम क्याथा

उ–एक पुत्री हुइथी तिसका नाम

दर्शना था

प्र ३१—श्रीमहावीरस्वामी अपने पिताके घरमें मूलसे त्यागी वा न्नोगी रहेथे

उ —श्रीमहावीरजी २८ अठावीस वर्ष तक तो न्नोगी रहे पीछे माता पिता दोनो श्री पार्श्वनाथजी २३ मे तीर्थकरके श्रावक श्राविका थे वेह महावीरजीकी २८ मे वर्षकी जिंदगीमे स्वर्गवासी हुए पीछे श्री महावीरजीने अपने वमे न्नाइ राजा नंदिवर्द्धनको दीक्षा लेनें वास्ते पूछा, तब नंदिवर्द्धनने कहाकी अबहीतो मेरे मातापिता मरेहै और तत्कालही तुम दीक्षा लेनी चाहतेहो यह मेरेको बमा न्नारी वियोगका डुख होवेगा, इस वास्ते दो वर्ष तक तुम घरमे मेरे कहनेसे रहो, तब महावीरजी दो वरस तक साधुकी तरे त्यागी रहे

प्र ३२—महावीरजीका वेटीका किसके साथ विवाह कराथा

उ —क्षत्रियकुंमका रहने वाला कौशिक गोत्रिय जमालि नामा क्षत्रिय कुमारके साथ वि-

वाद करा था.

प्र ३३—श्रीमहावीरजीकों त्यागी होनेका क्या प्रयोजन था

उ—सर्व तीर्थकरोका यही अनादि नियम हैकि त्यागी होके केवलज्ञान उत्पन्न करके स्व परोपकारके वास्ते धर्मोपदेश करना तीर्थंकर अपने अवधिज्ञानसे देख लेतेहैकि अव हमारे संसारिक भोग्य कर्म नही रहाहै और अमुक दिन हमारे संसार गृहवास त्यागनेकाहै तिस दिनही त्यागी हो जातेहे. श्रीमहावीरस्वामोकी वावतभी इसी तरें जान लेना.

प्र. ३४—परोपकार करना यह हरेक मनुष्यकों करना उचितहै

उ —परोपकार करना यह सर्व मनुष्योंकों करना उचितहै, धर्मी पुरुषकोंतो अवश्यही करना उचितहै

प्र. ३५—श्रीमहावीरजीने किस वस्तुका त्याग करा था

उ.—सर्व सावद्य योगका अर्थात् जीव-

दर्शना था

प्र ३१–श्रीमहावीरस्वामी अपने पिताके घरमे मूलसे त्यागी वा भोगी रहेथे

उ –श्रीमहावीरजी २८ अठावीस वर्ष तक तो भोगी रहे पीछे माता पिता दोनो श्री पार्श्वनाथजी २३ मे तीर्थंकरके श्रावक श्राविका थे वेह महावीरजीकी २८ मे वर्षकी जिंदगीमे स्वर्गवासी हुए पीछे श्री महावीरजीने अपने बडे भाइ राजा नंदिवर्द्धनकों दीक्षा लेनें वास्ते पूछा, तब नंदिवर्द्धनने कहाकी अवहीतो मेरे मातापिता मरेहै और तत्कालही तुम दीक्षा लेनी चाहतेहो यह मेरेको बडा भारी वियोगका दुख होवेगा, इस वास्ते दो वर्ष तक तुम घरमे मेरे कहनेसे रहो, तब महावीरजी दो वरस तक साधुकी तरे त्यागी रहे

प्र ३२–महावीरजीका बेटीका किसके साथ विवाह कराया

उ –क्षत्रियकुंडका रहने वाला कौशिक गोत्रिय जमालि नामा क्षत्रिय कुमारके साथ वि-

वाह करा था.

प्र ३३—श्रीमहावीरजीको त्यागी होनेका क्या प्रयोजन था

उ—सर्व तीर्थकरोका यही अनादि नियम हैकि त्यागी होके केवलज्ञान उत्पन्न करके स्व परोपकारके वास्ते धर्मोपदेश करना. तीर्थंकर अपने अवधिज्ञानसे देख लेतेहैकि अव हमारे संसारिक न्नोग्य कर्म नही रहाहै और अमुक दिन हमारे संसार गृहवास त्यागनेकाहै तिस दिनही त्यागी हो जातेहै श्रीमहावीरस्वामीको वावतन्नी इसी तरें जान लेना

प्र. ३४—परोपकार करना यह हरेक मनुष्यको करना उचितहै

उ—परोपकार करना यह सर्व मनुष्योंको करनां उचितहै, धर्मी पुरुषकोंतो अवश्यही करनां उचितहै

प्र. ३५—श्रीमहावीरजीने किस वस्तुका त्याग करा था.

उ—सर्व सावद्य योगका अर्थात् जीव-

हिंसा १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन स्त्री आदिकका प्रसग ४ सर्व परिग्रह ५ इत्यादि सर्व पके कृत्य करने करावने अनुमतिका त्याग कराथा.

प्र ३६—श्रीमहावीरजीने अनगारपणा कब लीनाथा और किस जगेमे लीनाथा और कितने वर्षकी उमरमे लीनाथा

उ—विक्रमसें पहिले ५१२ वर्ष मगसिर वदी दशमीके दिन पिछले पहरमे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें विजय महुर्त्तमे चंद्रप्रजा शिवकामे बैठके चार प्रकारके देवते और नंदि वर्द्धन राजाप्रमुख हजारो मनुष्योसें परिवरे हुए नानाप्रकारके वाजित्र वजते हुए बडे जारी महोत्सवसें न्यातवनषंड नाम वागमे अशोकवृक्षके हेठे जन्मसे तीस वर्ष व्यतीत हुए दीक्षा लीनीथी. मस्तकके केश अपने हाथसे लुंचन करे और अंदरके क्रोध, मान, माया, लोजका लुचन करा

प्र ३७—श्री महावीरजीको दीक्षा लेनेसे तुरत ही किस वस्तुकी प्राप्ति हुइथी

उ—चौथा मन पर्यवज्ञान उत्पन्न हुआथा

प्र ३८—मन.पर्यवज्ञान नगवंतको गृहस्थावस्थामे क्युं न हुआ

उ.—मन पर्यवज्ञान निर्ग्रंथ संयमीकोही होताहै अन्यको नही

प्र ३९—ज्ञान कितने प्रकारकेहै.

उ—पाच प्रकारके ज्ञानहै

प्र ४०—तिन पाचो ज्ञानके नाम क्या क्याहै

उ—मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मन पर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५

प्र ४१—इन पाचो ज्ञानोंका थोमासा स्वरूप कहो

उ—मतिज्ञान विनादी सुनेके जो ज्ञान होवे तथा चार प्रकारकी जो बुद्धिहै सो मतिज्ञानहै. इसके ३३६ तीनसौ छत्तीस नेदहै जो कहने सुननेमे आवे सो श्रुतिज्ञान है, तिसके १४ चौदह नेदहै अवधिज्ञान सर्व रूपी वस्तुकों जाने देखे, तिसके ६ नेद है मन पर्यवज्ञान अढाइ द्वीपके अंदर सर्वके मन चिंतित अर्थको जाने देखे तिसके दोय २ नेदहै केवलज्ञान नूत, न-

विष्यत्, वर्त्तमानकालकी वस्तु सूक्ष्म वादर रूपी अरूपी व्यवध्यान रहित व्यवधान सहित दूर नेरे अदर वाहिर सर्व वस्तुकों जाने, देखेहै, इस ज्ञानके भेद नहीहै इन पाचो ज्ञानोका विशेष स्वरूप देखना होवेतो नंदिसूत्र मलयगिरि वृत्ति सहित वाचना वा सुन लेना

प्र ४९—श्रीमहावीरस्वामी अनगार होकर जव चलने लगेथे तब तिनके भाइ राजा नंदिवर्द्धनने जो विलाप कराथा सो थोमासा श्लोकोमें कह दिखलावो.

उ —त्वया विना वीर कथ व्रजामो ॥ गृहेधुना शून्य वनोपमाने ॥ गोष्टी सुख केन सहाचरामो । भोक्ष्यामहे केन सहाथ वंधो ॥ १ ॥ अस्यार्थ. ॥ हे वीर तेरे एकलेको छोमके हम सूने वन समान अपने घरमे तेरे विना क्युकर जावेंगे, अर्थात् तेरे विना हमारे राजमहिलमे हमारा मन जानेको नही करताहै, तथा हे वधव तेरे विना एकात बेठके अपने सुख दुखकी वाता करन रूप गोष्टी किसके साथ मै करूगा तथा हे

धव तेरे विना मै किसके साथ बैठके भोजन
जीमुगा, क्योंके तेरे विना अन्य कोइ मेरा त्रि-
लाका जाया भाइ नही है ? सर्वेषु कार्येषु च
वीर वीरे ॥ त्यामंत्रणदर्शनतस्तवार्य ॥ प्रेमप्रक-
र्षादभजामहर्षं निराश्रया श्चायकमाश्रयामः ॥१॥
अर्थ ॥ हे आर्य उत्तम सर्व कार्यके विषे वीर वीर
ऐसे हम तेरेकों बुलातेथे और हे आर्य तेरे दरश-
नेसे हम वहुत प्रेमसें हर्षकों प्राप्त होतेथे; अब
हम निराश्रय होगयेहै, सो किसकों आश्रित
होवे, अर्थात् तेरे विना हम किसकों हे वीर हे
वीर कहेंगे, और देखके हर्षित होवेंगे ॥१॥ अति
प्रियं बाधव दर्शनं ते ॥ सुधांजनं भाविक दास्म
दक्ष्णो॰ नीरागचित्तोपिकदाचिदस्मान् ॥ स्मरि-
ष्यसि प्रौढ गुणाभिराम ॥२॥ अस्यार्थः ॥ हे वां-
धव तेरा दर्शन मेरेकों अधिक प्रियहै, सो तुमारे
दर्शन रूप अमृताजन हमारी आखो में फेर कद
पडेगा हे महा गुणवान् वीर तु निराग चित्तवाला
है तोभी कदेक हम प्रिय वरवाकों स्मरण क-
रेंगा २ इत्यादि विलाप करेथे

प्र ४३—श्रीमहावीरस्वामी दीक्षा लेके जब प्रथम विहार करनें लगेथे तिस अवसरमें शक्रइन्द्रनें श्रीमहावीरजीकों क्या विनती करीथी

उ—शक्रइन्द्रनें कहाकि हे जगवन् तुमारे पूर्व जन्मोंके वहुत असाता वेदनीयादि कठिन कर्मोंके वधनहै तिनके प्रजावसें आपको छद्मस्थावस्थामें वहुत जारी उपसर्ग होवेगे जेकर आपकी अनुमति होवे तो मै तुमारे साथही साथ रहुं और तुमारे सर्व उपसर्ग टालु अर्थात् दूर करु.

प्र ४४—तव श्रीमहावीरजीने इन्द्रको क्या उत्तर दीनाथा.

उ—तव श्रीमहावीरजीने इन्द्रकों ऐसे कहा के हे इन्द्र यह वात कदापि अतीत कालमे नही हुइहै अवजी नहीहै और अनागत कालमे जी नही होवेगी के किसीजी देवेंद्र असुरेन्द्रादिके साहाय्यसें तीर्थंकर कर्मक्षय करके केवलज्ञान उत्पन्न करतेहै, किंतु सर्व तीर्थंकर अपने २ प्राक्रमसें केवलज्ञान उत्पन्न करतेहै इस वास्ते हमजी दूसरेकी साहाय्य विना अपनेही प्राक्रमसें केवल-

ज्ञान उत्पन्न करेगे.

प्र ४५—क्या श्रीमहावीरजीकी सेवामें इंद्रादि देवते रहते थे

उ—छद्मस्थावस्थामें तो एक सिद्धार्थनामा देवता इंद्रको आज्ञासे मरणांत कष्ट दुर करने वास्ते सदा साथ रहता था, और इंद्रादि देवते किसि किसि अवसरमे वंदना करने सुखसाता पूछने वास्ते और उपसर्ग निवारण वास्ते आते थे और केवलज्ञान उत्पन्न हूआ पीछेतो सदाही देवते सेवामे हाजर रहतेथे

प्र ४६—श्रीमहावीरजीने दीक्षा लीया पीछे क्या नियम धारण कराथा.

उ.—यावत् छद्मस्थ रहुं तावत् कोइ परीषह उपसर्ग मुझको होवे ते सर्व दीनता रहित अन्य जनकी साहायसें रहित सहन करु जिस स्थानमे रहनेसें तिस मकान वालेकों अप्रीति उत्पन होवे तो तदा नहीं रहेना १ सदाही कायोत्सर्ग अर्थात् सदा खडा होके दोनो बाहा शरीरके अनलगती हुइ हेठकों लांबी करके पगोमें

चार अगुल अंतर रखके थोमासा मस्तक नीचा नमावी एक किसी जीव रहित वस्तु उपर दृष्टि लगाके खमा रहुगा १, गृहस्तका विनय नही करुगा ३; मौन धारके रहुंगा ४; हाथमेही लेके न्नोजन करुंगा, पात्रमे नही ५ ये अन्निग्रह नियम धारण करेथे

प्र ४७—श्रीमहावीरस्वामीजीने उद्मस्थ कालमे कैसे कैसे परीग्रह परीपह उपसर्ग सहन करे थे तिनका सक्षेपसें व्यान करो

उ प्रथम उपसर्ग गोवालीयेने करा १ शूलपाणिके मदिरमें रहे तहा शूलपाणी यक्षने उपसर्ग करे ते ऐसे अदृष्ट हासी करके मराया १ हाथीका रूप करके उपसर्ग करा २ सर्पके रूपसे ३ पिशाचके रूपसें ४ उपसर्ग करा पीछे मस्तकमे १ कानमे २ नाकमे ३ नेत्रोंमे ४ दातोमें ५ पुठमें ६ नखेमें ७ अन्य सुकुमार अगोमे ऐसी पीमा कीनीके जेकर सामान्य पुरुप एक अगमेन्नी ऐसी पीमा होवे तो तत्काल मरण पावे, परं न्नगवतनेतो मेरुकी तरें अचल होंके अदीन मनसे सहन

करे, अंतमे देवता थकके श्री महावीरजीका सेवक बना शांत हूआ चंड कौशिक सर्पने डंक मारा पर भगवंततो मरा नही, सर्प प्रतिबोध हूआ. सुदंष्ट्र नाग कुमार देवताका उपसर्ग संबल कंबल देवतायोंने निवारा भगवंततो कायोत्सर्गमें खडेथे लोकोंने बनमे अग्नि बालो लोक तो चले गये पीछे अग्नि सूके घासादिकों बालती हूइ भगवतके पगों हेठ आ गइ, तिस्से भगवत के पग दग्ध हूए पर भगवतने तो कायोत्सर्ग छोडा नही तहांही खडे रहे. कटपूतना देवीने माघमासके दिनोंमे सारी रात भगवंतके शरीरको अत्यत शीतल जल छांटा, भगवततो चलायमान नही हुए. अतमे देवी थकके भगवतकी स्तुति करने लगी. संगम देवताने एक रात्रिमें वीस उपसर्ग करे वे एसेहै भगवंतके उपर धूलिकी वर्षा करी जिस्से भगवतके आंख कानादि श्रोत बंद होनेसें स्वासोत्सासरों रहित हो गये तोभी ध्यानसे नही चले १ पीछे वज्रमुखी कीडीयां बनाके भगवंतका शरीर चालनिवत् सछिद्र करा २

चूचवाले दशोने बहु पीमा करी ३ तीक्ष्ण चूच-
वाली घीमेल वनके खाया ४ विछु ५ सर्प्प ६ न-
ऊल ७ मूसे ८ के रूपोसें म्क मारा और मास
नोची खाधा हाथी ए हथणी १० वनके सूम
दातका घाव करा पग हेठ मर्दन करा तोन्नी ज्ञ-
गवत वज्र ऋषभ नाराच नामक सहनन वाले
होनेसे नही मरे पिशाच वनके अट्टहास्य करा
११ सिह वनके नख दाम्रायोंसे विदारचा, फाम्या
१२ सिद्धार्थ त्रिशलाका रूप करके पुत्रके स्नेहके
विलाप करे १३ स्कधावारके लोक वनाके ज्ञग-
वतके पगों ऊपर हाम्री राधी १४ चमालके रू-
पसें पखियोंके पजरे ज्ञगवंतके कान बाहु आ-
दिमे लगाये तिन पक्षीयोने शरीर नोंचा १५ पीछे
खर पवनसें ज्ञगवतकों गेंदकी तरे उछाल २ के
धरती ऊपर पटका १६ पीछे कलिका पवन क-
रके ज्ञगवतको चक्रकी तरे घुमाया १७ पीछे चक्र
मारा जिससें ज्ञगवत जानु तक ज्ञूमिमे धस गये
१८ पीछे प्रज्ञात विकुर्वी कहने लगा विहार करो
ज्ञगवततो अवधिज्ञानसें जानतेथे के अवीतो रा-

त्रिहै १९ पीछे देवागनाका रूप करके हाव भावादि करके उपसर्ग दीना २० इन वीसों उपसर्गोंसें जब भगवत किंचित् मात्रभी नही चले तब संगमदेवताने छमास तक भगवंतके साथ रहके उपसर्ग करे, अंतमे थकके अपनी प्रतिज्ञासे भ्रष्ट होके चला गया अनार्य देशमे भगवंतको बहुत परीसह उपसर्ग हुए अंतमे दोनो कानोंमे गोवालीयोंने कासकी सलीयो माली तिनसें बहुत पीमा हुइ सो मध्यम पावापुरी नगरीमे खरकवैद्य सिद्धार्थ नामा वाणियानें कांसकी सलीयो कानोमेसे काढी भगवत निरुपक्रमायुवाले थे इससें उपसर्गोमे मरे नही, अन्य सामान्य मनुष्यकी क्या शक्तिहै, जो इतने दुख होनेसे न मरे विशेप इनका देखना होवेतो आवश्यक सूत्रसे देख लेना

प्र ४८—श्रीमहावीरस्वामीकों उपसर्ग होनेका क्या कारण था.

उ —पूर्व जन्मातरोमे राज्य करणेसें अत्यंत पाप करे वे सर्व इस जन्ममेही नष्ट होने चाहिये

इस वास्ते असाता वेदनीय कर्म निकाचितने अ-
पने फल रूप उपसर्गसें कर्म जोग्य कराके दूर
होगये, इस वास्ते बहुत उपसर्ग हुए

प्र ४९—श्रीमहावीरजीने परीषहे किस वा-
स्ते सहन करे और तप किस वास्ते करा.

उ —जेकर जगवत परीषहे न सहन करते
और तप न करते तो पूर्वोपार्जित पाप, कर्म,
क्षय न होते, तबतो केवलज्ञान और निर्वाण पद
ये दोनो न प्राप्त होते इस वास्ते परीषहे उपसर्ग
सहन करे, और तपजी करा

प्र ५०—श्रीमहावीरजीने छद्मस्थावस्थामें
तप कितना करा और जोजन कितने दिन कराथा,

उ —इसका स्वरूप नीचलेयत्रसे समऊ लेना

छ मासी	छ मासी तप १	चार मासी	तीन मासी	अढाइ मास तप	दो मासी तप	डेढ मास तप	मास क्षपण तप	पखवाडीयातप
तप १	पाच दिन न्यून	ए	२	२	६	३	१२	७२
भद्र प्रतिमा तप	महा भद्र तप ४	सर्वतो भद्र तप	छठ तप	अठम तप	सर्व पारणा	दिक्षा दिन	सर्वकाल तप छर पारणा एकत्र करै	
दिन २	४	१०	२२ए	१२	३४ए	१	१२ वर्ष मास ६ दिन १५	

प्र ५१–श्रीमहावीरजीकों दीक्षा लीये पीछे कितने वर्ष गये केवलज्ञान उत्पन्न हुआथा

उ –१२ वर्ष ६ मास ऊपर १५ पदरादिन इतने काल गये पीछे केवलज्ञान ऊत्पन्न हुआथा

प्र ५२–श्रीमहावीरजीकों केवलज्ञान केसी अवस्थामें ओर किस जगे, उत्पन्न हुआथा

उ.–वेशाख शुदि १० दशमीके दिन पिछले चौथे पहरमे जृंभिक गाम नगरके बाहिर ऋजुवालुका नामे नदीके काठे ऊपर वैयावृत्त नामा व्यतर देवताके देहरेके पास श्यामाक नामा गृहपतिके खेतमें साल वृक्षके नीचे गाय दोहनेके अवसरमें जैसे पगथलीयोंके भार वैठतेहै तैसें उत्कटिका नाम आसनेवैठे आतापना लेनेकी जगें आतापना लेते हुए, तिस दिन दूसरा उपवास छठ भक्त पाणि रहित करा हुआथा शुक्ल ध्यानके दूसरे पादमे आरूढ हुआको केवलज्ञान हुआथा

प्र ५३–भगवतको जब केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था तब तिनकी केसी अवस्था हुइथी

उ –सर्वज्ञ सर्वदर्शी अरिहत जिन केवली

रूप अवस्था हुइथी

प्र ए४–न्नगवंतकी प्रथम देशनासें किसी-कों लान्न हुआथा

उ –नही ॥ शुनने वालेतो थे, परंतु किसीकों तिस देशनासें गुण नही उत्पन्न हुआ

प्र एए–प्रथम देशना खाली गइ तिस बनावको जैन शास्त्रमे क्या नाम कहतेहै

उ –अछेरा न्नूत अर्थात् आश्चर्य न्नूत जैन शास्त्रमे इस बनावका नाम कहाहै

प्र ए६—अछेरा किसको कहतेहैं

उ –जो वस्तु अनते काल पीछे आश्चर्य कारक होवे तिसको अछेरा कहतेहैं, क्योंकि कोइन्नी तीर्थंकरकी देशना निःफल नही जातीहै और श्रीमहावीरजीकी देशना निष्फल गइ, इस वास्ते इसको अछेरा कहतेहैं

प्र ए७–श्रीमहावीरजीतो केवलज्ञानसे जानते थे कि मेरी प्रथम देशनासे किसीकोंन्नी कुछ गुण नही होवेगा, तो फेर देशना किस वास्ते दीनी

उ –सर्व तीर्थंकरोंका यह अनादि नियम

है कि जब केवलज्ञान उत्पन्न होवे तब अवश्यही देशना देते है तिस देशनासे अवश्यमेव जीवाकों गुण प्राप्त होताहै, पर श्रीवीरकी प्रथम देशनासें किसीको गुण न हुआ, इस वास्ते अछेरा कहाहै

प्र ५८–श्रीमहावीर भगवते दूसरी देशना किस जगें दीनीथी

उ –जिस जगे केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था तिस जगासें ४८ कोसके अंतरे अपापा नामा, नगरी थी, तिसमें ईशान कोनमे महासेन वन नामे उद्यान था तिस वनमे श्रीमहावीरजी आए, तहा देवतायोने समवसरण रचा तिसमें बैठके श्रीमहावीर भगवते देशना दूसरी दीनी

प्र ५९–दूसरी देशना सुनने वास्ते तहां कोन कोन आये थे और तिस दूसरी देशनामें क्या वडा भारी बनाव बना था और किस किसनें दीक्षा लीनी, और भगवतके कितने शिष्य साधु हूए, और वडी शिष्यणी कौन हूइ

उ –चार प्रकारके देवता और चार प्रकारकी देवी मनुष्य, मनुष्यणी इत्यादि धर्म सुननेकों आये थे

भगवंतकी देशना सुनके बहुत नर नारी अपापा नगरीमे जाके कहने लगे, आजतो हमारो पुन्यदशा जागी जो हमने सर्वज्ञके दर्शन करे, और तिसकी देशना सुनी हमने तो ऐसी रचनावाला सर्वज्ञ कदेइ देखा नही, यह बात नगरमे विस्तरो तिस अवसरमें तिस अपापा नगरीमे सोमल नामा ब्राह्मणने यज्ञ करनेका प्रारम्भ कर रक्खा था, तिस यज्ञके कराने वाले इग्यारें ब्राह्मणोंके मुख्याचार्य बुलवाये थे, तिनके नामादि सर्व ऐसें थे इंद्रभूति १ अग्निभूति २ वायुभूति ३ ये तीनो सगे भाइ, गौतम गोत्री, इनका जन्म गाम मगधदेशमें गोर्बरगाम, इनका पिता वसुभूति, माताका नाम पृथिवी, उमर तीनोकी गृहवासमें क्रमसे ५० । ४६ । ४२ । वर्षकी इनके विद्यार्थी ५०० पाच पाचसौ चतुर्दश विद्याके पारगामी चौथा अव्यक्त नामा १ भारद्वाज गोत्र २ जन्म गाम कोल्लाक सन्निवेस ३ पिताका नाम धनमित्र ४ माता वारुणी नामा ५ गृहवासें उमर ५० वर्षकी ६ विद्यार्थी ५०० सौ ७ विद्या १

का जान ८ पांचमा सुधर्म नामा १ अग्निवेश्या-
यन गोत्री २ जन्म गाम कोल्लाक सन्निवेस ३
पिता धम्मिल ४ भद्दिला माता ५ गृहवास ५०
वर्ष ६ विद्यार्थी ५०० सौ ७ विद्या । १४ । ८ छठा
मण्डिकपुत्र नाम १ वाशिष्ट गोत्र २ जन्म गाम
मौर्य सन्निवेश ३ पिता धनदेव ४ माता विजय-
देवा ५ गृहवास ६५ वर्ष ६ विद्यार्थी ३५० सौ ७
विद्या । १४ । ८ सातमा मोर्य पुत्र नाम १ का-
श्यप गोत्र २ जन्म गाम मौर्य सन्निवेस ३ पिता
मौर्य नाम ४ माता विजयदेवा ५ गृहवास ५३
वर्ष ६ विद्यार्थी ३५० सौ ७ विद्या । १४ । ८ आ-
ठमा अकंपित नाम १ गौतम गोत्र २ जन्म गाम
मिथिला ३ पिता नाम देव ४ माता जयती ५ गृ-
हवास ४८ वर्ष ६ विद्यार्थी ३०० सौ, विद्या १४ ।
८ नवमा अचलभ्राता नाम १ गोत्र हारीत २
जन्म गाम कोशला ३ पिता नाम वसु ४ नंदा
माता ५ गृहवास ४६ वर्ष ६ विद्यार्थी ३०० सौ,
विद्या १४ । ८ दसमेका नाम मेतार्य १ गोत्र कौं-
डिन्य २ जन्म गाम कौशला वत्स भूमिमे ३

पिता दत्त ४ माता वरुणदेवा ५ गृहवास ३६ वर्ष ६ विद्यार्थी ३०० तीनसौ ७ विद्या १४ । ८ इग्यारमा प्रन्नास नामा १ गौत्र कौन्मिन्य २ जन्म राजगृह ३ पिता वल ४ माता अतिन्नद्रा ५ गृहवास १६ वर्ष ६ विद्यार्थी ३०० सौ ७ विद्या १४ । ८ इस स्वरुप वाले इग्यारे मुख्य व्राह्मण यज्ञ पार्मेमें थे तिनोके कानमें पूर्वोक्त शब्द सर्वज्ञकी महिमाका पमा, तव इंद्रन्नुति गौतम अन्निमान सें सर्वज्ञका मान न्नंजन करने वास्ते न्नगवतके पास आया । तिनको देखके आश्चर्यवान् हुआ; तव न्नगवंतने कहा हे इन्द्रन्नुति गौतम तु आया; तव गौतम मनमे चितने लगा मेरे नाम लेनेसें तो मै सर्वज्ञ नही मानु, पर मेरे रिदय गत संशय दूर करे तो सर्वज्ञ मानुं तव न्नगवतने तिनके वेद पदऔर युक्तिसे संशय दूर करा तव ५०० सौ गात्रा सहित गौतमजीने दीक्षा लीनी, ए वमा शिष्य हुआ. इसी तरे इग्यारेहीके मनके सशय दूर करे और सर्वने दीक्षा लीनी सर्व ४४०० सौ इग्यारे अधिक शिष्य हुए. इग्यारोके मनमें जीवहै के

नही १ कर्महैके नही २ जो.जीवहै सोइ शरीरहै वा शरीरसे जीव अलगहै ३ पांच भूतहै वा नही ४ जैसा इस जन्ममे जीवहै जन्मांतरमें ऐसाही होवेगा के अन्य तरेका होवेगा ५ मोक्षहै के नही ६ देवते हैं के नही ७ नारकीहै के नही ८ पुन्य है के नहीं ९ परलोकहै के नही १० मोक्षका उपाय है के नही ११ इनके दूर करनेका सपूर्ण कथन विशेषावश्यकमेहै तिस दिनही चंपाके राजा दधिवाहनकी पुत्री कुमारी ब्रह्मचारणी चंदनवालाने दीक्षा लीनी यह बडी शिष्यणी हुइ इसके साथ कितनीही स्त्रीयोने दीक्षा लीनी दूसरी देशनामे यह बनाव बनाथा

प्र ६०—गणधर किसकों कहतेहै

उ —जिस जीवनें पूर्व जन्ममे शुभ करणी करके गणधर होनेका पुन्य उपार्जन करा होवे सो जीव मनुष्य जन्म लेके तीर्थंकरके साथ दीक्षा लेताहै अथवा तीर्थंकर अर्हतको जब केवलज्ञान होताहै तिनके पास दीक्षा लेताहै, और बडा शिष्य होताहै, तीर्थंकरकें मुखसें त्रिपदी सुनके ग-

णधर लब्धिसें चौदहे पूर्व रचताहै और चार ज्ञानका धारक होताहै तिसकों तीर्थकर जगवत गणधर पद देतेहै और साधुयोंके समुदाय रूप गणको धारण करता है, तिसकों गणधर कहतेहै

प्र ६१—श्रीमहावीरजीके कितने गणधर हुए थे

उ.—इग्यारे गणधर हुए थे, तिनके नाम ऊपर लिख आएहै

प्र. ६२—सघ किसकों कहतेहै

उ —साधु १ साध्वी २ श्रावक ३ श्राविका ४ इन चारोकों संघ कहतेहै

प्र ६३—श्रीमहावीर जगवतके संघमें मुख्य नाम किस किसका था

उ.—साधुयोमे इंद्रजूति गौतम स्वामी नाम प्रसिद्द १ साधवीयोंमें चपा नगरीके दधिवाहन राजाकी पूत्री साधवी चंदनवाला २ श्रावकोमें मुख्य श्रावस्ति नगरोके वसने वाले सख १ शतक ७ श्राविकायोंमे सुलसा ३ रेवती ४ सुलसा राजगृहके प्रसेनिजित राजाका सारथी नाग तिसकी जार्या, और रेवती मेंढिक ग्रामकी रहने वाली

धनाढ्य गृह पत्नी थी

प्र ६४–श्रीमहावीरस्वामीनें किसतरेंका धर्म प्ररूप्या था

उ –सम्यक्त पूर्वक साधुका धर्म और श्रावकका धर्म प्ररूप्या था

प्र ६५ सम्यक्त पूर्वक किसकों कहतेहै

उ –ज्ञगवतके कथनकों जो सत्य करके श्रद्धे, तिसकों सम्यक्त कहतेहै, सो कथन यहहै, लोककी अस्तिहै १ अलोकज्ञीहै २ जीवज्ञीहै ३ अजीवज्ञीहै ४ कर्मका बधज्ञीहै ५ कर्मका मोक्ष ज्ञीहै ६ पुन्यज्ञी है ७ पापज्ञीहै ८ आश्रव कर्मका आवणाज्ञी जीवमेहै ए कर्म आवनेके रोकणेका उपाय सवरज्ञीहै १० करे कर्मका वेदना ज्ञोगनाज्ञीहै ११ कर्मकी निर्जराज्ञीहै कर्म फल देके खिरजातेहै १२ अरिहतज्ञीहै १३ चक्रवर्तीज्ञीहै १४ बलदेव वासुदेवज्ञीहै १५ नरकज्ञीहै १६ नारकीज्ञीहै १७ तिर्यचज्ञीहै १८ तिर्यचणीज्ञीहै १ए माता पिता ऋषीज्ञीहै २० देवता और देवलोकज्ञीहै २१ सिद्धि स्थानज्ञी है २२ सिद्धज्ञीहै २३

परिनिर्वाणन्नीहै २४ परिनिवृत्तन्नीहै २५ जीवहिं-सान्नीहै २५ जूठन्नीहै २६ चौरीन्नीहै २७ मैथुन-न्नीहै २८ परिग्रहन्नीहै २९ क्रोध, मान माया, लोन्न, राग, द्वेष, कलह, अन्याख्यान, पैशुन, पर्रनिंदा, माया, मृषा, मिथ्यादर्शन, शल्य येन्नी सर्वहै इन पूर्वोक्त जीव हिंसासे लेके मिथ्याद-र्शन पर्यंत अगरह पापोंके प्रतिपक्षी अगरह प्र-कारके त्यागन्नीहै ३० सर्व अस्ति न्नावकों अस्ति रूपे और नास्तिन्नावकों नास्तिरूपें न्नगवंतने क-हाहै ३१ अछे कर्मका अछा फल होताहै बुरे क-र्मोका बुरा फल होताहै ३२ पुण्य पाप दोनो सं-सारावस्थामें जीवके साथ रहतेहैं ३३ यह जो निर्ग्रंथोंके वचनहै वे अति उत्तम देव लोक और मोक्षके देने वालेहै ३४ चार काम करने वाला जीव मरके नरक गतिमें उत्पन्न होताहै महा हिंसक, क्षेत्र वाभी कर्षण सर सोसादिसें महा जीवाका वध करनेवाला १ महा परिग्रह तृष्णा वाला २ मासका खाने वाला ३ पचेंद्रिय जीवका मारने वाला ४ ॥ चार काम करनें वाला मरके तिर्यंच

गतिमें उत्पन्न होताहै माया कपटसें दूसरेके साथ ठगी करे १ अपने करे कपटके ढाकने वास्ते जुठ बोले २ कमतो तोल देवे अधिक तोल लेवे ३ गुणवतके गुण देख सुनके निंदा करे ४ चार काम करनेसें मनुष्य गतिमे उत्पन्न होताहै, जद्रिक स्वजाव वाले स्वजावें कुटलित्तासें रहित होवे १ स्वजावेहीं विनयवत होवे २ दयावत होवे ३ गुणवंतके गुणसुनके देखके द्वेष न करे ४॥ चार कारणसें देवगतिमें उत्पन्न होताहै, सरागी साधुपणा पालनेसें १ गृहस्थ धर्म देश विरति पालनेसें २ अज्ञान तप करनेसें ३ अकाम निर्जरासें ४ तथा जैसी नरक तिर्यच गतिमे जीव वेदना जोगताहै और मनुष्यपणा अनित्यहै व्याधि, जरा, मरण वेदना करके वहुत जरा हूआहै इस वास्ते धर्म करणेमे उद्यम करो देवलोकमें देवतायोंकों मनुष्य करता वहुत सुखहै अतमे सोजी अनित्यहै जैसें जीव कर्मोसे वधाताहै और जैसें जीव कर्मसे छुटके निर्वाण पदकों प्राप्त होताहै और षटकायके जीवाका स्वरुप ऐसाहै पीछे साधुका

धर्म और श्रावकके धर्मका यह स्वरूपहै इत्यादि धर्म देशना श्री महावीर ज्ञगवतें सर्वजातिके मनुष्यादिकोंकों कथन करीथी

प्र ६६—साधुके धर्मका थोमेसेमें स्वरूप कह दिखलाउ

उ—पाच महाव्रत और रात्रि ज्ञोजनका त्याग यह ठ वस्तु धारण करे दश प्रकारका यति धर्म और सत्तरेज्ञेदे संयम पालन करे, ४१ वैतालीस दोष रहित ज्ञिक्षा ग्रहण करे, दशविध चक्रवाल समाचारी पाले

प्र ६४—श्रावक धर्मका थोमेसेमे स्वरूप कह दिखलाउ

उ—त्रस जीवकी हिंसाका त्याग १ बमे जुठका त्याग, अर्थात् जिसके बोलनेंसे राजसें दंम होवे, और जगतमे जुठ बोलने वाला प्रसिद्ध होवे ऐसें चौरीमेंज्ञी जानना २ वडी चोरीका त्याग ३ परस्त्रीका त्याग ४ परिग्रहका प्रमाण ५ उदे दिशामें जानेका प्रमाण करे ज्ञोग परिज्ञोगका प्रमाण करे; बावीस अज्ञदय न खाने योग्य

वस्तुका और वतीस अनंत कायका त्याग करे और १५ बुरे वाणिज व्यापार करनेका त्याग करे विना प्रयोजन पाप न करे सामायिक करे; देशावकाशिक करे, पोषध करे, दान देवे, त्रिकाल देव पूजन करे

प्र ६८—साधु श्रावकका धर्म किसवास्ते मनुष्योंको करना चाहिये

उ —जन्म मरणादि संसार भ्रमण रूप दुखसे छूटने वास्ते साधु और श्रावकका पूर्वोक्त धर्म करना चाहिये

प्र ६९—श्रीभगवत महावीरजीने जो धर्म कथन कराथा सो धर्म श्रीमहावीरजीने अपने हाथोंसे किसी पुस्तकमें लिखा था वा नही

उ –नही लिखाथा

प्र ७०—श्रीमहावीर भगवंतका कथन करा हुआ सर्व उपदेश भगवतकी रूबरु किसी दूसरे पुरुषने लिखाथा

उ –दूसरे किसी पुरुषने सर्व नही लिखाथा

प्र ७१—क्या लिखने लोक नही जानते

थे, इस वास्तें नही लिखा वा अन्य कोइ कारण था.

उ—लिखनेतो जानते थे, परं सर्व ज्ञान लिखनेकी शक्ति किसोभी पुरुषमे नही थी, क्योंकें भगवतने जितना ज्ञानमें देखा था तिसके अनंतमे भागका स्वरूप वचनद्वारा कहा था जितना कथन करा था तिसके अनतमे भाग प्रमाण गणधरोने द्वादशाग सूत्रमे ग्रथन करा, जेकर कोइ १२ वारमें अग दृष्टिवादका तीसरा पूर्व नामा एक अध्ययन लिखे तो १६३८३ सोलाहजार तीन सौ त्रिराशी हाथीयो जितने स्याहीके ढेर लिखनेमें लगे, तो फेर सपूर्ण द्वादशाग लिखनेकी किसमे शक्ति हो सक्तीहै, और जव तोर्थकर गणधरादि चौदह पूर्वधारी विद्यमानथे तिनके आगे लिखनेका कुछभी प्रयोजन नहीथा, और देशमात्र ज्ञान किसि साधु, श्रावकने प्रकरण रूप लिख लीया होवे, अपने पठन करने वास्ते, तो निषेध नही

प्र ७१—पूर्वोक्त जैनमतके सर्व

श्रीमहावीरसे और विक्रम संवत्की शुरुयातसें कितने वर्ष पीछे लिखे गये है,

उ—श्रीमहावीरजीसें ९८० नवसो अस्सी वर्ष पीछे और विक्रम संवत् ५१० मे लिखे गये है,

प्र ७३—इन शास्त्रोंके कंठ और लिखनेमे क्या व्यवस्था वनी थी, और यह पुस्तक किस जगे किसने किस रीतीसे कितने लिखेथे

ऊ—श्रीमहावीरजीसे १७० वर्षतक श्री भद्रबाहुस्वामी यावत् (द्वादशाग) चौदह पूर्व और इग्यारे अग जैसे सुधर्मस्वामीने पाठ ग्रंथन करा था तैसाही था, पर भद्रबाहुस्वामीने वारा १२ चौमासे निरंतर नैपाल देशमें करे थे, तिस समयमे हिंदुस्थानमे वारा वर्षका काल पड़ाथा, तिसमे भिक्षा ना मिलनेसें एक भद्रबाहुस्वामी-कों वर्जके सर्व साधुयोंके कंठसे सर्व शास्त्र वीच वीचसें कितनेही स्थल विस्मृत हो गये, जब वारा वरसका काल दूर हूआ, तब सर्व आचार्य साधु पाटलिपुत्र नगरमे एकठे हुए, सर्व शास्त्र

आपसमें मिलान करे तब इग्यारे अंग तो सपूर्ण हुए, परंतु चौदह पूर्व सर्व सर्वथा भूल गए, तब सघको आज्ञासें स्थुलभद्रादि ५०० सो तीक्ष्ण बुद्धिवाले साधु नैपाल देशमें श्रीभद्रबाहुस्वामीके पास चौदह पूर्व सीखने वास्ते गये, परतु एक स्थुलभद्रस्वामीने दो वस्तु न्यून दश पूर्व पाठार्थसें सीखे शेष चार पूर्व केवल पाठ मात्र सीखे श्री भद्रबाहुके पाट उपर श्री स्थुलभद्र स्वामी बैठे, तिनके शिष्य आर्यमहागिरिसुहस्तिसे लेके श्री वज्रस्वामी तक जो वज्रस्वामी श्री महावीरसें पीछे ५८४ मे वर्ष विक्रम सवत् ११४ मे स्वर्गवासी हुए है तहा तक येह आचार्य दश पूर्व और इग्यारे अगके कंठ्याग्र ज्ञानवाले रहे, तिनके नाम आर्य महागिरि १ आर्यसुहस्ति २ श्री गुणसुंदरसूरि ३ श्यामाचार्य ४ स्कंधिलाचार्य ५ रेवतीमीत्र ६ श्रो धर्मसूरि ७ श्री भद्रगुप्त ८ श्री गुप्त ९ वज्रस्वामी १० श्री वज्रस्वामीके समीपे तोसलीपुत्र आचार्यका शिष्य श्री आर्यरक्षित सूरिजीने साढे नव पूर्व पाठार्थसें पठन करे

आर्यरक्षितसूरि तक सर्व सूत्रोंके पाठ उपर चा
रोही अनुयोगकी व्याख्या अर्थात् जिस श्लोकमे
चरणकरणानुयोगकी व्याख्या जिन अक्षरोंसे क
रतेथे तिसही श्लोकके अक्षरोसे द्रव्यानुयोगकी
व्याख्या और धर्मकथानुयोगकी और गणितानु
योगकी व्याख्या करते थे इसतेरं अर्थ करणेकी
रीती श्री सुधर्मस्वामीसे लेके श्री आर्यरक्षितसूरि
तक रही, तिनके मुख्य शिष्य विध्यदुर्वलिका पु-
ष्पादिकी वुद्धि जब चारतेरंके अर्थ समझनेमे ग-
भराइ तब श्री आर्यरक्षितसूरिजीने मनमें वि-
चार करा के इन नव पुर्वधारीयोकी वुद्धिमें जब
चार तेरंका अर्थ याद रखना कठिन पडता है, तो
अन्य जीव अल्प वुद्धिवाले चार तेरंका सर्व शा
स्त्रोंका अर्थ क्यु कर याद रखेंगे, इस वास्ते सर्व
शास्त्रोंके पाठोंका अर्थ एकैक अनुयोगकी व्याख्या
शिष्य प्रशिष्योंकों सिखाइ शेप व्यवछेद करी
सोइ व्याख्या जैन श्वेतांवर मतमे आचार्योकी अ
विछिन्न परपरायसे आज तक चलती है, तिनके
पीछे स्कंदिलाचार्य श्री महावीरजीके ९४ मे

पाट हुए है नंदीसूत्रकी वृत्तिमें श्री मलयगिरि आचार्ये ऐसा लिखाहै कि श्री स्कंधिलाचार्यके समयमें बारा वर्ष १२ का डुर्त्तिक्ष काल पमा, तिसमें साधुयोको भिक्षा न मिलनेसे नवीन पढना और पिछला स्मरण करना बिलकुल जाता रहा. और जो चमत्कारी. अतिशयवत शास्त्रथे वेभी बहुत नष्ट हो गये और अगोपागभी भावसें अर्थात् जैसे स्वरूप वालेथे तैसे नही रहे, स्मरण परावर्त्तनके अभावसे जब बारा वर्षका डुर्भिक्ष काल गया और सुभिक्ष हूआ, तब मथुरा नगरीमे स्कधिलाचार्य प्रमुख श्रमण सघने एकठे होके जो पाठ जितना जिस साधुके जिस शास्त्रका कठ याद रहा सो सर्व एकत्र करके कालिक श्रुत अगादि और कितनाक पूर्वगत श्रुत किंचितमात्र रहा हुआ जोमके अंगादि घटन करे, इस वास्ते इसको माथुरि वाचना कहते है कितनेक आचार्य ऐसें कहतेहै १२ वर्षके कालके वसमें एक स्कधिलाचार्यको वर्जके शेष सर्वाचार्य मर गये थे. गीतार्थ अन्य कोइभी नही रहा था,

पर सर्व शास्त्र न्नूलेतो नही थे, परतु तिस का-
लमे इतनाही कंठ था, शेष अल्प बुद्धिके प्रजा-
वसे पहिलाही न्नूल गया था, तिस स्कंधिला-
चार्यके पीछे आठमे पाट और श्री वीरसे ३७ में
पाट देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण हुए, तिनका वृत्तात
ऐसे जैन ग्रथोमें लिखा है मोरठ देशमें वेला-
कूलपत्तनमें अरिदमन नामे राजा, तिमका सेव-
क काश्यप गोत्रीय कामर्द्धि नाम क्षत्रिय, तिस-
की न्नार्या कलावती, तिनका पुत्र देवर्द्धिनामे,
तिसने लोहित्य नामा आचार्यके पास दीक्षा ली-
नी, इग्यारे अंग और पूर्व गत ज्ञान जितना अ-
पने गुरुकों आताथा, तितना पढ लिया, पीछे श्री
पार्श्वनाथ अर्हतकी पट्टावलिमे प्रदेशी राजाका
प्रतिबोधक श्री केशी गणधरके पट्ट परपरायमें
श्री देवगुप्त सूरिके पासों प्रथम पूर्व पठन करा,
अर्थमे, दूसरे पूर्वका मूल पाठ पढते हुए श्री दे-
वगुप्त सूरि काल कर गये, पीछे गुरुने अपने पट्ट
ऊपर स्थापन करा. एक गुरुने गणि पद दीना,
दूसरेने क्षमाश्रमण पद दीना, तव देवर्द्धिगणि

क्षमाश्रमण नाम प्रसिद्ध हुआ तिस समयमें जैन मतके ५०० पांचसौ आचार्य विद्यमान थे, तिन सर्वमे देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण युगप्रधान और मुख्याचार्य थे, वे एकदा समय श्री शत्रुंजय तीर्थमें वज्र स्वामिकी प्रतिष्ठा हुइ. श्री ऋषभदेवकी पितल मय प्रतिमाको नमस्कार करके कपर्दि यक्षकी आराधना करते हुए, तब कपर्दि यक्ष प्रगट होके कहने लगा, हे भगवान्, मेरे स्मरण करनेका क्या प्रयोजन है. तब देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमणजीने कहा, एक जिनशासनका कामहै, सो यहहै कि बारें वर्षी दुकालके गये, श्री स्कंधिलाचार्यने माथुरी वाचना करीह, तोभी कालके प्रभावसें साधुयोंकी मंद बुद्धिके होनेसें शास्त्र कंठसें भूलते जातेहै कालांतरमें सर्व भूल जावेगे. इस वास्ते तुम साहाय्य करो. जिस्सें मै ताम्र पत्रो ऊपर सर्व पुस्तकोंका लेख करुं, जिससें जैन शास्त्रकी रक्षा होवे. जो मदबुद्धिवालाभी होवेगा सोभी पत्रों उपरि शास्त्राध्ययन कर सकेगा, तब देवताने कहा मै सानिध्य करुगा, परंतु सर्व सा-

धुर्योंकों एकठे करो और स्याही ताम्र पत्र बहुत सचित करो, लिखारियोंको बुलाउ, और साधारण द्रव्य श्रावकोंसें एकठा करावो, तब श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणनें पूर्वोक्त सर्व काम वल्लभी नगरीमे करा, तब पाचसौ आचार्य और वृद्ध गीतार्थोंने सर्वागोपागादिकाके आलापक साधु लेखकोनें लिखे, खरडा रुपसें, पीछे देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणजीने सर्व अगोपागोके आलापक जोडके पुस्तक रूप करे. परस्पर सूत्राकी भुलावना जैसें भगवतीमे जहा पन्नवणाए इत्यादि अतिदेशकरे सर्व शास्त्र शुद्धकरके लिखवाए देवताकी सानिध्यतासें एक वर्षमे एक कोटी पुस्तक १००००००० लिखे आचारगका महाप्रज्ञा अध्ययन किसी कारणसें न लिखा, पर देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणजी प्रमुख कोइभी आचार्यने अपनी मन कल्पनासें कुछभी नही लिखाहै इस वास्ते जैन शास्त्र सर्व सत्य कर मानने चाहिये ॥ जो कोइ कोइ कथन समझमें नही आताहै, सो यथार्थ गुरु गम्यके अभावसें, पर गणधरोके कथनमें किंचित्

मात्रनी भूल नहीहै, और जो कुछ किसी आचार्यके भूल जानेसे अन्यथा लिखानी गया होवे तो नी अतिशय ग्यानी विना कोन सुधार सके, इस वास्ते तहमेव सच्चं ज जिणेहि पन्नत्तं, इस पाठके अनुयायी रहना चाहिये

प्र. ७४–जैन मतमे जिसकों सिद्धांत तथा आगम कहते है, वे कौनसे कौनसे है और तिनके मूल पाठ १ निर्युक्ति २ नाप्य ३ चूर्णि ४ टीका ५ के कितने कितने ३२ बत्तीस अक्षर प्रमाण श्लोक सख्याहै, यह संक्षेपसे कहो

उ.–इस कालमें किसी रूढिके सबबसे ४५ पैतालीस आगम कहे जातेहै, तिनके नाम और पचांगीके श्लोक प्रमाण आगे लिखे हुए, यंत्रसें जान लेने और इनमें विषय विधेय इस तरेका है आचारगमें मूल जैन मतका स्वरूप, और साधुके आचारका कथनहै १ सूयगडागमे तीनसौ ३६३ त्रेसठ मतका स्वरूप कथनादि विचित्र प्रकारका कथनहै २ ठाणागमें एकसें लेके दश पर्यंत जे जे वस्तुयो जगतमेंहै

थन है ३ समवायागमें एकसे लेके कोटाकोटि पर्यंत जे पदार्थ है तिनका कथन है ४ भगवतीमें गौतमस्वामीके करे हुए विचित्र प्रकारके ३६००० छत्तीस हजार प्रश्नोके उत्तर है ५ ज्ञातामें धर्मी पुरुषोकी कथाहै ६ उपाशक दशामे श्री महावीरके आनंदादि दश श्रावकोंके स्वरूपका कथन है ७ अतगडमें मोक्ष गये ९० नव्वे जीवाका कथन है ८ अणुत्तरोववाइमें जे साधु पाच अनुत्तर विमानमें उत्पन्न हुएहे, तिनका कथन है ९ प्रश्नव्याकरणमें हिंसा १ मृषावाद २ चोरी ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ इन पाचो पापाका कथन और अहिंसा १, सत्य २, अचौरी ३, ब्रह्मचर्य ४, परिग्रह त्याग ५ इन पाचो संवरोका स्वरूप कथन कराहे १० विपाक सूत्रमें दश दुख विपाकी और दश सुख विपाकी जीवाके स्वरूपका कथन है ११ इति संक्षेपसें अगानिवेय उववाइमें २२ बावीस प्रकारके जीव काल करके जिस जिस जगे उत्पन्न होते है तिनका कथनादि, कोणककी वदना विधि महावीरकी धर्म देशनादिका कथन

है १ राजप्रश्नीयमें प्रदेशी राजा नास्तिक मती-
का प्रतिबोधक केशी गणधरेका और देव विमा-
नादिकका कथन है २ जीवाभीगममें जीव अ-
जीवका विस्तारसे चमत्कारी कथन करा है ३
पन्नवणामे ३६ छत्तीस पदमे छत्तीस वस्तुका बहुत
विस्तारसे कथन है ४ जंबुद्विप पन्नतिमें जंबुद्वी-
पादिका कथन है. ५ चंद्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्तिमें
ज्योतिष चक्रके स्वरूपका कथन है ६, ७ निरा-
वलिकामे कितनेक नरक स्वर्ग जाने वाले जीव
और राजायोकी लम्बाइ आदिकका कथन है ८।
९। १०। ११॥ १२ आवश्यकमे चमत्कारी अति
सूक्ष्म पदार्थ नय निक्षेप ज्ञान इतिहासादिका क-
थनहै, १ दशवैकालिकमे साधुके आचारका कथन
है २ पिण्डनिर्युक्तिमें साधुके शुद्धाहारादिकके स्व-
रूपका कथन है ३ उत्तराध्ययनमेतो छत्तीस अ-
ध्ययनोमे विचित्र प्रकारका कथन करा है ४ छहों
छेद ग्रथोमें पद विभाग समाचारी प्रायश्चित आ
दिका कथन है ६ नंदीमे ५ पाच ज्ञानका कथन
करा है १ अनुयोगद्वारमे सामायिकके उपर

अनुयोगद्वारोंसें व्याख्या करीहै २ चउसरणमें चारसरणेका अधिकार है १, रोगीके प्रत्याख्यान की विधी २, अनशन करणेकी विधी ३, बर्मे प्रत्याख्यानके करणेका स्वरूप ४, गर्न्नादिका स्वरूप ५, चइ वेध्यका स्वरूप ६, ज्योतिषका कथन ७, मरणके समय समाधिकी रीतिका कथन ८, इन्द्रेके स्वरूपका कथन ए, गच्छाचारमे गच्छका स्वरूप, १० और सस्थारपइन्नेमे सथारेकी महिमाका कथनहै, यह सक्षेपसें पैतालीस आगममे जो कुछ कथन करा है, तिसका स्वरूप कहा, परतु यह नही समझ लेनाकें जैन मतमें इतनेही शास्त्र प्रमाणिक है, अन्य नही, क्योंकि उमास्वाति आचार्यके रचे हुए, ५०० प्रकरणहै, और श्री महावीर नगवतका शिष्य श्री धर्मदास गणि क्षमाश्रमणजीकी रची हुइ उपदेशमाला तथा श्री हरिन्नद्र सूरिजीके रचे १४४४ चौदहसौ चौवालीस शास्त्र इत्यादि प्रमाणिक पूर्वधरादि आचार्योंके प्रकृति शतकादि हजारोंही शास्त्र विद्यमान है, वे सर्व प्रमाणिक आगम तुल्य है, राजा शि-

वप्रसादजीनें अपने बनाए इतिहास तिमर ना-
सकमें लिखा है. बुलरसाहिबने १५०००० म्हेढ
लाख जेन मतके पुस्तकोंका पता लगाया है;
और यहजो मनमे कुविकल्प न करनाके यह
शास्त्र गणधरोंके कथन करे हुए है, इस वास्ते
सच्चे है, अन्य सच्चे नही, क्योंके सुधर्मस्वामीने
जेसे अंग रचेथे वेसेतो नही रहेहै संप्रति काल-
के अंगादि सर्व शास्त्र स्कंधिलादि आचार्योने वा-
चना रूप सिद्धांत बाधेंहे, इस वास्ते पूर्वोक्त आ-
ग्रह न करना, सर्व प्रमाणिक आचार्योके रचे प्र-
करण सत्यकरके मानने, यही कल्याणका हेतुहै

अक	सूत्र नामानि	सूत्र मूल संख्या.	निर्युक्तिः	भाष्य	चूर्णि.	टीका	सर्व संख्या.
			अथांगानि				
१	आचारांग सूत्र	२५००	४५०	०	८३००	१२०००	२३२५०
२	सूयगडाग सूत्र	२१००	२५०	०	१००००	१२८५०	२५२००
३	ठाणग सूत्र	३७७५	०	०	०	१५२५०	१९०२८
४	समवायाग सूत्र	१६६७	०	०	४००	३७७६	५८४३
५	भगवती सूत्र	१५७५२	०	०	४०००	१८६१६	३८३६८
६	ज्ञाता धर्मकथा सूत्र	६०००	०	०	०	४२५२	१०२५२

७	उपाशकदशांग सूत्र.	८१२	०	०	०	१३००	३०२४
८	अतगड सूत्र	७२०	०	०	०		
९	अनुत्तरोववाइ सू.	१९२	०	०	०		
१०	प्रश्नव्याकरण सूत्र	१२५०	०	०	०	४६००	५८५०
११	विपाक श्रुताग सूत्र	१२१६	०	०	०	९००	२११६

अथोपागानि

१ १२	उववाइ सूत्र	११६७	०	०	०	३१२५	४२९२
२ १३	राजप्रश्नाय सूत्र	२०७८	०	०	०	६०००	८०७८

३ १४	जीवाभिगम सूत्र	४७००	०	०	१५००	१३००० टिप्पन ११००	२०३००
४ १५	पन्नवणा सूत्र	७८००	०	०	०	लघु ३७२८ बृहत् १४०००	२५९२८
५ १६	जम्बूद्वीप पन्नत्ति सूत्र.	४१४६	०	०	१८६०	१६०००	२२००६
६ १७	चंद पन्नति सूत्र	२२००	०	०	०	९११४	११३१४
७ १८	सूर्य पन्नत्ति सूत्र.	२२००	०	०	०	९०००	११२००

८ १९ ९ २० १० २१ ११ २२ १२ २३	निरावलिया सुयखध सूत्र. कप्पिया सूत्र कप्पवडंसिया सूत्र पुप्फिया सूत्र पुप्फचूलिया सूत्र वन्हिदशांग सूत्र	११०९	०	०	०	७००	१८०९

अथ मूल सूत्राणि

१ २४	आवश्यक	१००	३१००	०	१८०००	२२००० टिप्पन ४६००	४७८००

३ १४	जीवाभिगम सूत्र	४७००	०	०	१५००	१३००० टिप्पन ११००	२०३००
४ १५	पन्नवणा सूत्र	७७००	०	०	०	लघु ३७२८ वृहत् १४००	२५५२८
५ १६	जम्बूद्वीप पन्नत्ति सूत्र.	४१४६	०	०	१८६०	१२०००	२७००६
६ १७	चन्द पन्नति सूत्र	२२००	०	०	०	९११४	११३१४
७ १८	सूर्य पन्नत्ति सूत्र.	२२००	०	०	०	९०००	११२००

८ २७	उत्तराध्ययन सूत्र	२०००	५००	०	६०००	लघु १२००० बृहत् १७६४५	३०१४५

अथ छेद सूत्राणि

१ २८	दशाश्रुत स्कन्ध सूत्र	१८३०	१६८	०	२२२५	०	४७२३
२ २९	बृहत्कल्प सूत्र	८७३	०	लघु ८००० बृहत् १२०००	१८००० विशेष ११०००	४२०००	८७४७३
३ ३०	व्यवहार सूत्र.	६०००	०	६०००	१०३६१	३३६२५	६०५८६
४ ३१	पचकल्प सूत्र.	११३३	०	३१·५०	३१३०	०	७३८८

	विशेषावश्यक	५०००	०	०	०	लघु १४००० बृहत् २८०००	४७०००
	पाक्षिक सूत्र	३००	०	०	४००	२७००	३४००
	ओघनिर्युक्ति॰	११७०	०	३०००	७००	७०००	११८७०
२ २५	दशवैकालिक सूत्र	७००	४५०	०	७०००	लघु २७०० बृहत् ६८१०	१७६६०
३ २६	पिंडनिर्युक्ति॰	७००	०	०	०	लघु ४००० बृहत् ७०००	११७००

४ २७	उत्तराध्ययन सूत्र	२०००	५००	०	६०००	लघु १२००० बृहत् १७६५५	३०१४५

अथ छेद सूत्राणि

१ २८	दशाश्रुत स्कंध सूत्रं	१८३०	१६८	०	२२२५	०	४२२३
२ २९	बृहत्कल्प सूत्र	४७३	०	लघु ८००० बृहत् १२०००	१४००० विशेष ११०००	४२०००	८७४७३
३ ३०	व्यवहार सूत्र.	६०००	०	६०००	१०३६१	३३६२५	६०५८६
४ ३१	पचकल्प सूत्रं.	११३३	०	३१२५०	३१३०	०	७३८८

	जीतकल्प सूत्र	२०६	०	३१२४	२००० विशेषचूर्णि ,१०००	७०००	२२३२७
५ ३२	निशिथ सूत्र	८१५	०	लघु ७४०० वृहत् १२०००	२८०००	०	४८२१५
६ ३३	महानिशिथ	लघुवाचना ३५००		मध्यम वाचना ४२००		वृहद्वाचना ४५००	१२२००

पइन्ना सूत्राणि

१ ३४	चतुःशरण सूत्र.	६४	०	०	०	०	६४
२ ३५	आतुरप्रत्याख्यान सूत्र	८४	०	०	०	०	८४

३ ३६	भक्तपरिज्ञा सूत्रं	१७१	०	०	०	०	१७१
४ ३७	महाप्रत्याख्यान सूत्र.	१३४	०	०	०	०	१३४
५ ३८	तदुलवेयालीय सूत्र.	४००	०	०	०	०	४००
६ ३९	चद्रवेध्यक सूत्र	१७६	०	०	०	०	१७६
७ ०	गणिविद्या सूत्र.	१००	०	०	०	०	१००
८ ४१	मरणसमाधि सूत्र.	६५६	०	०	०	०	६५६
९ २	देवेंद्र स्तव सूत्र वीर स्तव सूत्र	२००	०	०	०	०	२००

१० ९३	गच्छाचार सूत्र	१३८	०	०	०	०	१३०
	संस्तारक सूत्र	१२२	०	०	०	०	१२२
	चलिका सूत्र,	रुपिभापित सूत्र ७००	ज्योतिष्क करड सूत्र १८५०	सिद्धप्राभृत सूत्र. १३३५	वसुदेवहिंडि प्रथम खंड ११०००	मध्यमखंड १७००० द्वीपसागर पन्नति २५००	तीर्थोद्वार सूत्र १५०० अगवि्या ९००० ये भी ४५ के अंतर भूतही है
१ ४४	नंदि सूत्र	७००	०	०	२००१	लघु २३१२ बृहत् ७७३५	१२७५८ —
२ ९५	अनुयोगद्वार सूत्र.	१८९९	०	०	३०००	लघु ३५०० बृहत् ६५००	१४८७७

प्र ७५—श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणसें पहिला जैन मतका कोइ पुस्तक लिखा हुआ थाके नही.

उ —अगोपागादि शास्त्रतो लिखे हुए नही मालुम होतेहै, परंतु कितनेक अतिशय अद्भुत चमत्कारी विद्याके पुस्तक और कितनीक आम्नायके पुस्तक लिखे हुए मालुम होतेहै, क्योंकि विक्रमादित्यके समयमें श्री सिद्धसेन दिवाकर नामा जैनाचार्य हुआहै, तिनोंने चित्रकुटके किल्लेमे एक जैन मंदिरमे एक चमत्कारी एक पथरका बीचमे पोलाम्वाला स्तंभ देखा, तिसमे श्री सिद्धसेनसे पहिले होगए कितनेक पूर्वधर आचार्योंने विद्यायोंके कितनेक पुस्तक स्थापन करेथे, तिस स्तंभका ढाकणा ऐसी किसी ऊपधीक लेपसे बंद करा था कि सर्व स्तंभ एक सरीखा मालुम पड़ताथा, तिस स्तंभका ढाकणा श्री सिद्धसेन दिवाकरकों मालुम पड़ा, तिनोंने किसीक औषधीका लेप करा तिससें स्तंभका ढाकणा खुल गया. जब पुस्तक देखनेकों एक निकाला तिसका एक पत्र बाच्या,

प्रियचद्र राजा, ३५ महापुरका बलनामा राजा, ३६ सुघोस नगरका अर्जुन राजा, ३७ चपाका दत्त राजा, ३८ साकेतपुरका मित्रनदी राजा ३९ इत्यादि अन्यत्नी कितनेक राजे श्री महावीरके न्नक्त थे, येह सर्व राजायोंके नाम अगोपाग शास्त्रोंमें लिखे हुएहै.

प्र ७७–जो जो नाम तुमने महावीर न्नगवतके न्नक्त राजायोंके लिखेहै, बौधमतके शास्त्रोमे तिनको सर्व राजायोंको बौद्धमति लिखाहै, तिसका क्या कारणहै

उ.–जितने राजे श्रीमहावीर न्नगवंतके न्नक्त थे, तिन सर्वको बोधशास्त्रोमे बौधमति अर्थात् बुधके न्नक्त नहि लिखेहै, परतु कितनेक राजायोंका नाम लिखाहै, तिसका कारणतो ऐसा मालुम होताहैकि पहिलें तिन राजायोंने बुधका उपदेश सुनके बुधके मतको माना होवेगा, पीछे श्रीमहावीर न्नगवतका उपदेश सुनके जैनधर्ममें आये मालुम होते है, क्योंकि श्रीमहावीर न्नगवंतसें १६ वर्प पहिलें गौतम बुधने काल करा,

अर्थात् गौतम बुधके मरण पीछे श्रीमहावीर-स्वामी १६ वर्ष तक केवलज्ञानी विचरे थे तिनके उपदेशसें कितनेक बौद्ध राजायोंने जैन धर्म अंगीकार करा, इस वास्ते कितनेक राजायोंका नाम दोनो मतोंमें लिखा मालुम होताहै.

प्र ७८–क्या, महावीर स्वामीसें पहिलां भरतखंडमे जैनधर्म नही था ?

उ –श्रीमहावीर स्वामीसें पहिला भरतखंडमें जैनधर्म बहुत कालसें चला आता था, जिस समयमें गौतम बुधने बुध होनेका दावा करा, और अपना धर्म चलाया था, तिस समयमें श्री पार्श्वनाथ २३ मे तीर्थंकरका शासन चला था, तिनके केशी कुमार नामे आचार्य पाचसो ५०० साधुयोंके साथ विचरते थे, और केशी कुमारजी गृहवासमें उज्जयिनिका राजा जयसेन ओर तिसकी पट्टराणी अनगसुंदरी नामा तिनके पुत्र थे, विदेशि नामा आचार्यके पास कुमार ब्रह्मचारीने दीक्षा लीनी, इस वास्ते केशी कुमार कहे जातेहै, श्री पार्श्वनाथके बडे शिष्य श्री शु-

न्नदत्तजी गणधर १ तिनके पट्ट ऊपर श्री हरिद-त्ताचार्य २, तिनके पट्ट ऊपर श्री आर्यसमुद्र ३, तिनके पट्ट ऊपर श्री केशी कुमारजी हुए है, जिनोंने स्वेतविका नगरीका नास्तिकमति प्रदेशी नामा राजेकों प्रतिवोधके जैनधर्मी करा, और श्रीमहावीरजीके बडे शिष्य इन्द्रभूति गौतमके साथ श्रावस्ति नगरीमें श्री केशी कुमार मिले तहां गौतम स्वामीके साथ प्रश्नोत्तर करके शि-ष्योंका संशय दूर करके श्री महावीरका शासन अंगीकार करा तथा श्रीपार्श्वनाथजीके संतानो-मेंसे कालिक पुत्र १ मैथिाल २ आनंदरक्षित ३ काश्यप ४ ये नामके चार स्थिविर पांचसौ सा-धुयोंके साथ तुंगिका नगरीमें आये तिस समयमें श्री महावीर न्नगवत इंद्रभूति गौतमादि साधु-योंके साथ राजगृह नगरमें विराजमान थे, तथा साकेतपुरका चंद्रपाल राजा तिसकी कलासवेश्या नामा राणी तिनका पुत्र कलासवैशिक नामे ति-सने श्री पार्श्वनाथके संतानीय श्रीस्वयंप्रन्नाचा-र्यके शिष्य वैकुंठाचार्यके पास दीक्षा लीनी पीछे

राजगृहनगरमें श्रीमहावीरके स्थविरोसें चर्चा क-
रके श्री महावीरका शासन अंगीकार करा इसी
तरे पार्श्वसंतानीये गगेय मुनि तथा उदकपेढाल
पुत्र मुनिने श्रीमहावीरका शासन अगीकार करा.
इन पुर्वोक्त आचार्योंके समयमे वैशालि नगरीका
राजा चेटकादि और क्षत्रियकुंडनगरके न्यातवंशी
काश्यप गोत्री सिद्धार्थ राजादि श्रावक थे, और
त्रिसलादि श्राविकायो थी बुधधर्मके पुस्तकमें
विशालि नगरीके राजाको बुध के समयमें पा-
र्श्व धर्मके मानने वाला अर्थात् जैनधर्मके मानने
वाला लिखाहै, और बुधधर्मके पुस्तकमें ऐसाभी
लिखाहैकि एक जैनधर्मी बडे पुरुषको बुधने अ-
पने उपदेशसें बौद्ध धर्मी करा, इस वास्ते श्रीम-
हावीरसें पहिला जैनधर्म भरतखंडमें श्रीपार्श्वना-
थके शासनसें चलता था

प्र ७७–श्रीमहावीरजीसें पहिले तेवीसमें
तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथजी हुए हैं. इस कथनमे
क्या प्रमाण है.

उ.–श्रीपार्श्वनाथजीसे लेके आजपर्यंत श्री

पार्श्वनाथकी पट्ट परपरायमें ८३ तैरासी आचार्य हुए है तिनमेंसें सर्वसें पिछला सिद्ध सूरि नामे आचार्य साप्रति कालमें मारवाड़में विचरेहै, हमने अपनी आखोंसें देखाहै, जिसकी पट्टावलि आज पर्यंत विद्यमान है, तिस पार्श्वनाथजीके होनेमे यही प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण बलवतहै

प्र ८०–कौन जाने किसी धूर्त्तनें अपनी कल्पनासे श्रीपार्श्वनाथ और तिनकी पट्ट परपराय लिख दीनी होवेगी, इससे हमकों क्योंकर श्री पार्श्वनाथ हुए निश्चित होवें ?

उ –जिन जिन आचार्योंके नाम श्रीपार्श्वनाथजीसें लेके आज तक लिखे हुए है, तिनोमेसें कितनेक आचार्योंने जो जो काम करेहै वे प्रत्यक्ष देखनेमें आते है जैसे श्री पार्श्वनाथजीसें छठे ६ पट्ट ऊपर श्री रत्नप्रभ सूरिजीने वीरात् ७० वर्ष पीछे उपकेश पट्टमें श्री महावीर स्वामीकी प्रतिष्ठा करी सो मंदिर और प्रतिमा आज तक विद्यमान है, तथा अयरणपुरकी छावनीसे ६ कोसके लगभग कोरटनामा नगर उजड़ पड़ा है,

जिस जगो कोरटा नामे आजके कालमे गाम व-
सता है तहाभी श्रीमहावीरजीकी प्रतिमा मंदि-
रकी श्रीरत्नप्रभ सूरिजीकी प्रतिष्टा करी हुइ अव
विद्यमान कालमे सो मंदिर खमाहे, तथा उस-
वाल और श्रीमालि जो बणिये लोकोमे श्रावक
ज्ञाति प्रसिद्द है, वेभी प्रथम श्रीरत्नप्रभ सूरिजो-
नेही स्थापन करीहै, तथा श्रीपार्श्वनाथजीसे १७,
सत्तरमे पट्ट ऊपर श्री यक्षदेव सूरि हुए है, वो-
रात् ५८५ वर्षे जिनोंने बारा वर्षीय कालमें वज्र-
स्वामीके शिष्य वज्रसेनके परलोक हुए पीछे ति-
नके चार मुख्य शिष्य जिनको वज्रसेनजीने
सोपारक पट्टणमे दीक्षा दीनी थी, तिनके नामसे
चार शाखा तथा कुल स्थापन करे, वे यहै, ना-
गेंद्र १, चंद्र २, निवृत्त ३ विद्याधर ४ यह चारों
कुल जैन मतमें प्रसिद्धहै, तिनमेसें नागेंद्र कुलमें
उदयप्रभ मल्लिषेणसूरि प्रमुख और चंद्रकुलमें
वड गच्छ, तप गच्छ, खरतर गच्छ, पूर्णवल्लीय गच्छ,
देवचंद्रसूरि कुमारपालका प्रतिबोधक श्रीहेमचंद्-
सूरि प्रमुख आचार्य हुए है. तथा निवृत्तकुलमें श्री

शीलाकाचार्य श्रीद्रोणसूरि प्रमुख आचार्य हुए है तथा विद्याधरकुलमें १४४४ ग्रथका कर्त्ता श्रीहरिभद्रसूरि प्रमुखाचार्य हुए है, तथा मै इसग्रथका लिखनवाला चन्द्रकुलमें हुं, तथा पैतीसमें पट्ट ऊपर श्रीदेवगुप्तसूरिजी हुए है जिनोके समीपेश्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणजीने पूर्व २ दो पढे थे, तथा श्री पार्श्वनाथजीके ४३ मे 'पट्ट ऊपर श्री कसूरि पच प्रमाण ग्रथके कर्त्ता हुएहे, सो ग्रथ विद्यमानहे तथा ४४ मे पट्ट ऊपर श्रीदेवगुप्तसूरिजी विक्रमात् १०७२ वर्षे नवपद प्रकरणके करता हुए है, सोभी ग्रंथ विद्यमानहे, तथा श्रीमहावीरजीकी परंपराय वाले आचार्योने अपने बनाए कितनेक ग्रथोमें प्रगट लिखाहेकि, जो उपकेश गच्छहे सो पट्ट परपरायसे श्रीपार्श्वनाथ २३ तेवीसमें तीर्थकरसें अविछिन्न चला आताहे, जब जिन आचार्योंकी प्रतिमा मंदिरकी प्रतिष्टा करी हुइ और ग्रथ रचे हुए विद्यमान है तो फेर तिनके होनेमें जो पुरुप शसय करताहै तिसको अपने पिता, पितामह, प्रपितामह आदिकी वंशपरपरायमेभी

शंसय करना चाहिये, जैसे क्या जाने मेरी सातमी पेढीका पुरुष आगे हुआहैके नही. इस तरेंका जो सशय कोइ विवेक विकल करे तिसको सर्व वुद्धिमान् उन्मत्त कहेंगे इसी तरे श्रीपार्श्वनाथजी पट्ट परपरायके विद्यमान जो पुरुष श्री पार्श्वनाथ २३ तेवीसमे तीर्थंकरके होनेमे नही करे अथवा संशय करे तिसकोजी प्रेक्षावत पुरुष उन्मत्तोही पक्तिमे समझते है, तथा धूर्त पुरुष जो काम करताहे सो अपने किसी संसारिक सुखके वास्ते करता है परतु सर्व ससारिक इंद्रिय जन्य सुखसे रहित केवल महा कष्ट रूप परंपराय नही चला सक्ताहै, इस वास्ते जैनधर्मका संप्रदाय धूर्त्तका चलया हुआ नही, किंतु अष्टादश दूषण रहित अर्हंतका चलाया हुआहै.

प्र. ७१ कितनेक यूरोपीअन पंमित प्रोफेसर ए वेवर साहिवादि मनमे ऐसी कल्पना करतेहैं कि जैन मतकी रीती वुध धर्मके पुस्तकोके अनुसारे खंमी करीहै, प्रोफेसर वेवर ऐसंजी मानतेहै कि, बौध धर्मके कितने साधु वुधको नाक-

वूल करके बुधके एक प्रतिपक्षीके अर्थात् महावीरके शिष्यवनें और एक वार्त्ता नवीन जोमके जैनमत नामे मत खमा करा, इस कथनको आप सत्य मानते होके नहीं?

ज–इस कथनको हम सत्य नहीं मानते है, क्यों कि प्रोफेसर जेकोवीने आचारग और कल्पसूत्रके अपने करे हुए इंग्लीश न्यापातरकी उपयोगी प्रस्तावनामें प्रोफसर ए वेत्रर और मी० ए वार्थकी पूर्वोक्त कल्पनाको जूठी दिखाइहै, और प्रोफेसर जेकोवीने यह सिद्यात अंतमे वतायाहै कि जैनमतके प्रतिपक्षीयोंन जैन मतके सिद्यात शास्त्रों ऊपर न्नरोसा रखना चाहिये, कि इनमें जो कथनहै सो मानने लायकहै विशेष देखना होवेतो माक्तर वूलरसाहिव कृत जैन दत्त कथाकी सत्यता वास्ते एक पुस्तकका अतर हिस्सा न्नागहै, सो देख लेना हमवी अपनी वुद्धिके अनुसारे इस प्रश्नका उत्तर लिखते है. हम ऊपर जैनमतकी व्यवस्था श्रीपार्श्वनाथजीसें लेके आज तक लिख आएहे, तिससें प्रोफेसर ए वेवरका

पूर्वोक्त अनुमान सत्य नही सिद्ध होताहै जेकर कदाचित् बोध मतके मूल पिडग ग्रथोमें ऐसा लेख लिखा हुआ होवेकि, बुधके कितनेक शिष्य बुधको नाकबूल करके बुधके प्रतिपक्षी निर्ग्रंथोके सिरदार न्यात पुत्रके शिष्य बने, तिनोंने बुधके समान नवीन कल्पना करके जैनमत चलायाहै जेकर ऐसा लेख होवे तबतो हमकोबी जैनमत-की सत्यता विषे सशय उत्पन्न होवे, तबतो ह-मको प्रोफेसर ए वेबरके अनुमानकी तर्फ ध्यान देवें, परतु ऐसा लेख जुग बुधके पुस्तकोमे नही है क्योकि बुधके समयमे श्रीपार्श्वनाथजीके हजारों साधु विद्यमानथे तिनके होते हुए ऐसा पुर्वोक्त लेख कैसें लिखा जावे, बलके जैन पुस्तकोंमेंतो बुधकी बाबत बहुत लेखहै श्रीआचारंगकी टीकामें ऐसा लेखहै मौद्गलिस्वातिपुत्राभ्या शौद्धोदनि ध्वजीकृत्य प्रकाशित अस्यार्थ॥ माद्गलिपुत्र अ-र्थात् मौद्गलायन और स्वातिपुत्र अर्थात् सारीपुत्र दोनोंने शुद्धोदनके पुत्रको ध्वजीकृत्य अर्थात् ध्वजा-की तरें सर्व मताध्यक्षोसें अधिक ऊंचा सर्वोत्तम रूप

करकें प्रकाश्याहै आचारंगके लेख लिखनेवालेका यह अभिप्रायहै कि शुद्धोदनका पुत्र सर्वज्ञ अतिशयमान् पुरुष नही था, परंतु इन दोनों शिष्यानें अपनी कल्पनासें सर्वसें उत्तम प्रकाशित करा, इस वास्ते बौद्धमत स्वरुचिसे बनायाहै, तथा श्री आचारंगजीकी टीकामे एक लेख ऐसाभी लिखा है, तच्चनिकोपासकोनंदवलात्, बुद्धोत्पत्ति कथानकात् द्वेषमुपगच्छेत् अर्थ बुधका उपासक आनद तिसकी बुद्धिके बलमें बुधकी उत्पत्ति हूइहै, जेकर यह कथा सत्यसत्य पर्षदामे कथन करीये तो बौद्धमतके मानने वालोंकों सुनके द्वेष उत्पन्न होवे, इस वास्ते जिस कथाके सुननेसें श्रोताकों द्वेष उत्पन होवे तैसी कथा जैनमुनि परिषदामें न कथन करे, इस लेखसें यह आशय हैकि बुधकी उत्पत्तिरूप सच्ची कथा बुधकी सर्वज्ञता और अति उत्तमता और सत्यता और तिसकी कल्पित कथाकी विरोधनीहै, नहीतो तिसके भक्तोंकों द्वेष क्यो कर उत्पन्न होवे, इस वास्ते जैन मत इस अवसर्प्पिणिमे श्री ऋषभदेवजीसें

लेकर श्रीमहावीर पर्यंत चौवीस तीर्थकरोंका चलाया हुआ चलताहै परंतु कल्पित नहीहै

प्र ८१–बुद्धकी उत्पत्तिकी कथा आपने किसी स्वेतावरमतके पुस्तकोमें वाचोहै?

उ –स्वेतावरमतके पुस्तकोमेतो जितना बुधकी वावत कथन हमने श्री आचारंगजीकी टीकामे देखा वांचाहै तितनातो हमने ऊपरके प्रश्नमें लिख दीयाहै, परतु जेनमतकी दुसरी शाखा जो दिगबरमतकीहै तिसमे एक देवसेनाचार्यने अपने रचे हूए दर्शनसार नामक ग्रंथमे वुधकी उत्पत्ति इस रीतीसें लिखीहै गाथा ॥ सिरि पासणाह तित्थे ॥ सरऊ तोरे पलासणयर त्थे ॥ पिहि आसवस्स सीहे ॥ महा लुदो वुद्दकित्ति मुणी ॥१॥ तिमिपूरणासणेया ॥ अहिगयपवज्जावऊपरमत्ते ॥ रत्तंवरधरित्ता ॥ पवड्ढियंतेणएयत्तं ॥२॥ मसस्सनत्थिजीवो जह.फलेदहियदुद्धसक्कराए ॥ तम्हातंमुणित्ता न्नरकतोणत्थिपाविठो॥३॥ मऊणवज्जणिज्ज ॥ दव्वदवऊहजलंतहएदं ॥ इति लोएघोसिता पवत्तियसंघसावज्जं ॥४॥ अणोकरे

दिरूम्म ॥ असोतंजुजदीदिसिइतं ॥ परिकप्पिऊ-
णएूण ॥ वसिकिच्चाणिरयमुववसो ॥५॥ इति इ-
नकी न्नापा अथ बोध्मतकी उत्पति लिखते है
श्री पार्श्वनाथके तीर्थमे सरयू नदीके काठे ऊपर
पलासनामे नगग्मे रहा हुआ, पिहिताश्रव नामा
मुनिका शिष्य बुद्धकीर्ति जिसका नाम था, ए-
कदा समय सरयू नदीमे वहुत पानीका पूर चढि
आया तिस नदीके प्रवाहमें अनेक मरे हुए मछ
वहते हुए काठे ऊपर आ लगे, तिनको देखके
तिस बुद्धकीर्तिने अपने मनमे ऐसा निश्चय क-
राकि स्वत अपने आप जो जीव मर जावे ति-
सके मास खानेमे क्या पापहै, तव तिसने अंगी-
कार करी हुइ प्रवज्याव्रत रुप गेरू दीनी, अर्थात्
पूर्व अंगीकार करे हुए धर्मसें भ्रष्ट होके मास
न्नक्षण करा और लोकोंके आगे ऐसा अनुमान
कथन कराकी मासमें जीव नही है, इस वास्ते
इसके खानेमें पाप नही लगताहै फल, दुध, दहिं
तरें तथा मदीरा पीनेमेंनी पाप नहीहै ढीला
द्रव्य होनेसें जलवत् इस तरेंकी प्ररूपणा करके

तिसने बौद्धमत चलाया, और यहन्नी कथन करा के सर्व पदार्थ क्षणिकहै, इस वास्ते पाप पुन्यका कर्त्ता अन्यहै, और न्नोक्ता अन्यहै यह सिद्धांत कथन करा बौद्धमतके पुस्तकोमे ऐसान्नी लेखहै कि, बुधका एक देवदत्तनामा शिष्य था, तिसने बुधके साथ बुधकों मांस खाना छुमानेके वास्ते वहुत ऊगमा करा, तोन्नी शाक्यमुनि बुधने मांस खाना न गेमा, तब देवदत्तने बुधको गेम दीया, जब बुधने काल करा था, तिस दिनन्नी चंदनामा सोनीके घरसे चावलोके वीच सूयरका मांस रांधा हुआ खाके मरणको प्राप्त हुआ यह कथनन्नी बुधमतके पुस्तकोमे है, और स्वेतांबराचार्य साढे-तीन करोम नवीन श्लोकोंका कर्त्ता श्री हेमचंद्र-सूरिजीने अपने रचे हूए योगशास्त्रके दूसरे प्रकाशकी वृत्तिमे यह श्लोक लिखाहै। स्वजन्मकाल एवात्म, जनन्युदरदारिणः मांसोपदेशदातुश्च, कथंशौद्धोदनेर्दया ॥११॥ अर्थ। अपने जन्म कालमें ही अपनी माता मायाका जिसनें उदर विदारण करा, तिसके, और मांस खानेके उपदेशके देने-

वाले शुद्धोदनके पुत्रके दया कदासे थी, अपितु नही थी इस ऊपरके श्लोकसे यह आशय निकलताहै कि जब बुध गर्भमें था, तब तिसके सबबसें इसकी माताका उदर फट गयाथा, अथवा उदर विदारके इसकों गर्भमेसें निकाला होवेगा. चाहो कोइ निमित्त मिला होवे, परतु इनकी माता इनके जन्म देनेसें तत्काल मरगइ थी तत्काल मरणातो इनकी माताका बुद्ध धर्मके पुस्तकोमेभी लिखाहै और बुद्ध मासाहार गृहस्थावस्थामेंभी करता होवेगा, नहीतो मरणात तकभी मासके खानेसें इसका चित्त तृप्तही न हूआ ऐसा बौद्धमतके पुस्तकोंसेंही सिद्ध होताहै इस वास्तेही बौद्धमतके साधु मास खानेमे घृणा नही करतेहै, और वेखटके आज तक मास भक्षण करे जाते है, परतु कच्चे मासमें अनगिनत कृमि समान जीव उत्पन्न होतेहै, वे जीव बुधको अपने ज्ञानसें नही दीखेहै, इस वास्तेही बुध मतके उपासक गृहस्थ लोक अनेक कृमि सयुक्त मासकों राधतेहै और खाते है इस मतमें मास खानेका निषेध नहीहै,

इस वास्तेहो मासाहारो देशोंमें यह मत चलताहै.

प्र ७३—श्रीमहावीरजी छद्मस्थ कितने काल तकरहे और केवली कितने वर्ष रहे ?

उ—बारा वर्ष १२ छ ६ मास १५ पदरा दिन छद्मस्थ रहे, और तीस वर्ष केवली रहेहे.

प्र. ७४—भगवंतने छद्मस्थावस्थामें किस किस जगे चौमासे करे, और केवली हुए पीछे किस किस जगे चौमासे करे थे ?

उ—अस्थि ग्राममें १, दूसरा राजगृहमें, २, तीसरा चपामे ३, चौथा पृष्ट चपामें ४, पाचमा भाड्डिकामे ५, छठा भाड्डिकामें ६, सातमा आलभियामे ७, आठमा राजगृहमे ८, नवमा अनार्यदेशमे ९, दशमा सावत्थिमे १०, इग्यारमा विशालामे ११, बारमा चपामे १२, येह १२ छद्मस्थावस्थाके चौमासे करे केवली हुए. पीछे १२ राजगृहमें ११ विशालामे ६ मिथलामें १ पावापुरीमें एव सर्व ३० हुए

प्र ७५—श्रीमहावीरस्वामीका निर्वाण किस जगे और कब हुआ था ?

उ –पावापुरी नगरीके हस्तिपाल राजाकी दफतर लिखनेकी सन्नामें निर्वाण हुआथा, और विक्रमसें ४७० वर्ष पहिले और सम्प्रति कालके १९४५के सालसे ७४१५वर्ष पहिले,निर्वाण हुआथा

प्र ७६–जिस दिन भगवतका निर्वाण हुआ था सो कोनसा दिन वा रात्रिथी ?

उ –भगवतका निर्वाण कार्त्तिक वदि अमावस्याकी रात्रिके अतमें हुआथा

प्र ७७–तिस दिन रात्रिकी यादगीरी वास्ते कोइ पर्व हिंदुस्थानमे चलताहै वा नही ?

उ –हिंदु लोकमें जो दिवालीका पर्व चलताहै, सो श्री महावीरके निर्वाणके निमत्तसेही चलताहै

प्र ८८–दिवालिकी उत्पत्ति श्री महावीरके निर्वाणसे किसतरें प्रचलित हुइहै ?

उ –जिस रात्रिमे श्रीमहावीरका निर्वाण हुआ था, तिस रात्रिमे नव मल्लिक जातिके राजे और नव लेछकी जातिके राजे जो चेटक महाराजाके सामत थे, तिनोंने तहा उपवास रूप

पोपध करा था, जव न्नगवंतका निर्वाण हुआ, तव तिन अगरहही राजायोने कहाकि इस न्नरतखमसे न्नाव उद्योत तो गया, तिसकी नकलरूप हम इव्यो द्योत करेंगे, तव तिन राजायोने दीपक करे, तिस दिनसे लेकर यह दीपोत्सव प्रवृत्त हुआ है यह कथन कल्पसूत्रके मूल पाठमे है जो अन्य मत वाले दिवालीका निमित्त कथन करतेहै, सो कल्पितहै क्योकि किसि मतके न्नी मुख्य शास्त्रमे इस पर्वको उत्पत्तिका कथन नहीहै

प्र. ७ए–न्नगवंतके निर्वाण होनेके समयमे शक्रइंद्रे आयु वधावनेके वास्तें क्या विनती करी थी, और न्नगवत श्री महावीरजीयें क्या उत्तर दीनाथा?

उ.–शक्रइंडे यह विनती करीथी के, हे स्वामि एक क्षणमात्र अपना आयु तुम वधावो, क्योंकि तुमारे एक क्षणमात्र अधिक जीवनेसें तुमारे जन्म नक्षत्रोपरि न्नस्म राशिनामा तीस ३० मा ग्रह आया है, सो तुमारे शासनको

नही दे सकेगा, तब भगवतने ऐसे कहाके हे इद, यह पीछे कदेइ हूआ नही, और होवेगाभी नही कि कोइ आयु वधा सके, और जो मेरे शासनकों पीमा होवेगी सो अवश्य होनहार है, कदापि नही टलेगी

प्र ८०–तवतो कोइभी देह धारी आयु नही वधा सक्ताहे यह सिद्ध हूआ ?

उ –हा, कोइभी क्षणमात्र आयु अधिक नही वधा सक्ता है

प्र ८१–कितनेक मतावलंवी कहतेहे कि योगाभ्यासादिके करनेसें आयु वध जाताहे, यह कथन सत्यहे वा नही ?

उ –यह निकेवल अपनी महत्वता वधाने वास्ते लोकों गप्पे ठोकतेहे, क्योंकि चोवीस तीर्थंकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश, पातंजली, व्यास, ईशामसीह, महम्मद प्रमुख जे जगतमें मतचलाने वाले सामर्थ पुरुष गिने जातेहे, वेभी आयु नही वधा सकेहे, तो फेर सामान्य जीवोंमे तो क्या शक्तिहे के आयु वधा सके, जेकर किसीने वधाइ

होवे तो अब तक जीता क्यो नही रहा

प्र ए२—नगवतका नाइ नदिवर्द्धन, और नगवंतकी संसारावस्थाकी यशोदा स्त्री और नगवंतकी बेटी प्रियदर्शना, और नगवंतका जमाइ जमाली, इनका क्या वर्त्तन हूआ था?

उ—नदीवर्द्धन राजातो श्रावक धर्म पालता रहा, और यशोदाजी श्राविका तो थी, परंतु यशोदाने दीक्षा लीनी मैने किसी शास्त्रमे नही वांचाहै और नगवंतकी पुत्रीने एक हजार स्त्रीयोंके साथ और जमाइ जमालिने ५०० पांचसौ पुरुषोके साथ नगवंत श्री महावीरजीके पास दीक्षा लीनीथी.

प्र ९३—श्रीमहावीर नगवंतने जो अंतमें सोला पोहर तक देशना दीनीथी, तिसमे क्या क्या उपदेश कराथा?

उ—नगवतने सर्वसें अतकी देशनामें ५५ पचपन अशुन्न कर्मोके जैसे जीव नवातरमे फल नोगतेहे, ऐसे अध्ययन और पचपन ५५ शुन्न कर्मोंके जैसे भवातरमें जीव फल नोगतेहै, ऐसे

अध्ययन और छत्तीस ३६ विना पूछ्या प्रश्नोके उत्तर कथन करके पीछे ५५, पचपन शुभ विपाक फल नामे अध्ययनोंमेंसें एक प्रधान नामे अध्ययन कथन करते हुए निर्वाण प्राप्त हुए थे, यह कथन सन्देह विषौषधी नामे ताम्र पत्रोपर लिखी हुइ पुरानी कल्पसूत्रकी टीकामे है येह सर्वाध्ययन श्री सुधर्मस्वामीजीने सूत्ररूप गूथे होवेगे के नही, ऐसा लेख मेरे देखनेंमे किसी शास्त्रमे नही आया है

प्र ७४—जैनमतमे यह जो रूढिसे कितनेक लोक कहते है कि श्री उत्तराध्ययनजीके छत्तीस अध्ययन दिवालीकी रात्रिमे कथन करके ३७ सैतीसमा अध्ययन कथन करते हुएमोक्षगये, यह कथन सत्य है, वा नही ?

उ—यह कथन सत्य नही, क्योकि कल्प सूत्रकी मूल टीकासें विरुद्धहै, और श्री भद्रबाहुस्वामीने उत्तराध्ययनकी निर्युक्तिमे ऐसा कथन कराहै कि उत्तराध्ययनका दूसरा परीषहाध्ययनतो कर्मप्रवाद पूर्वके १७ सत्तरमें पाहुडसें उद्धार क-

रके रचाहै, और आठमाध्ययन श्री कपिल केव
लीने रचाहै, और दशमाध्ययन जव गौतमस्वार्म
अष्टापदसें पीछे आएहे, तव जगवतने गौतमके
धीर्य देने वास्ते चंपानगरीमें कथन करा था, औ
२३ मा अध्ययन केशीगौतमके प्रश्नोत्तर रूप रि
थवरोंने रचाहै कितने अध्ययन प्रत्येकबुद्धि मु
नियोंके रचे हुएहै. और कितनेक जिन जापित
है. इस वास्ते उत्तराध्ययन दिवालीकी रात्रिमे क
थन करासिद्ध नही होताहै

प्र ए५–निर्वाण शब्दका क्या अर्थ है ?

उ –सर्व कर्म जन्य उपाधि रूप अग्निका
जो वुऊ जाना तिसको निर्वाण कहते है, अर्थात
सर्वोपाधिसें रहित केवल, शुद्ध, वुद्ध सच्चिदान
रूप जो आत्माका स्वरूप प्रगट होना, तिसको नि
र्वाण कहते है

प्र ए६–जीवकों निर्वाण पद कद प्राप्त
होताहै ?

उ जव शुजाशुज सर्व कर्म जीवके
दो जातेहै तव जीवको निर्वाणपद प्राप्त

प्र ए७–निर्वाण हूआ पीछे आत्मा कहा जाता है, और कहा रहताहै ?

उ –निर्वाण हूआ पीछे आत्मा लोकके अग्र भागमे जाताहे, और सादिअनत काल तक सदा तहाही रहताहे

प्र ए८–कर्म रहित आत्माकों लोकाग्रमें कौन ले जाताहै ?

उ –आत्मामें उर्ध्वगमन स्वभावहे, तिससें आत्मा लोकाग्र तक जाताहे

प्र एए–आत्मा लोकाग्रसें आगे क्यों नही जाताहै ?

उ –आत्मामें उर्ध्वगमन स्वभाव तो हे, परंतु चलनेम गति साहायक धर्मास्तिकाय लोकाग्रसें आगे नहीहे, इस वास्ते नही जाताहै जैसें मछमे तरनेकी शक्तितो हे, परतु जल विना नही तरसकाहे, तैसें मुक्तात्माभी जानना

प्र १००–सर्व जीव किसी कालमें निर्वाण पद पावेंगे के नही ?

भी नही पावेंगे

प्र १०१–क्या सर्व जीव एक सरीखे नही है, जिससे सर्व जीव निर्वाण पद नही पावेंगे

उ –जीव दो तरे के है, एक भव्य जीवहै १, दुसरे अभव्य जीवहै, तिनमें जो अभव्य जीव होवेतो कदेंभी निर्वाण पदको प्राप्त नही होवेंगे, क्योंकि तिनमे अनादि स्वभावसेंही निर्वाण पद प्राप्त होनेकी योग्यताही नही है, और जो भव्य जीवहै तिनमें निर्वाणपद पावनेको योग्यता तो है, परंतु जिस जिसको निर्वाण होनेके निमित्त मिलेंगे वे निर्वाणपद पावेंगे, अन्य नही

प्र १०२–सदा जीवाके मोक्ष जानेसें किसी कालमें सर्व जीव मोक्षपद पावेंगे, तवतो ससारमें अभव्य जीवही रह जावेगे, और मोक्ष मार्ग वद हो जावेगा ?

उ –भव्य जीवाकी राशि सर्व आकाशके प्रदेशोंकी तरे अनत तथा अनागत कालके समयकी तरें अनतहे कितनाही काल व्यतीत होवे तोभी अनागत कालका अत नही आताहै, इसी

तरें सदा मोक्ष जानेसें, जीवन्नी खूटतें नहीहै, इस लोकमें निगोद जीवाके असख्य शरीरहै, एकैक शरीरमें अनत अनंत जीवहै, एक शरीरमें जितने अनंत अनत जीवहै, तिनमेंसे अनतमे न्नाग प्रमाण जीवअतीत कालमें मोक्षपद पायेहै, और तिनमेंसे अनतमें न्नाग प्रमाण अनत जीव अनागत कालमें मोक्ष पद पावेंगे, इस वास्ते मोक्ष मार्ग वद नही होवेगा

प्र १०३–आत्मा अमरहैके नाशवतहै?

ज –आत्मा सदा अविनाशी है, सर्वथा नाशवंत नही है

प्र १०४–आत्मा अमर है, अविनाशी है, इस कथनमें क्या प्रमाण है?

ज —जिस वस्तुकी उत्पत्ति होतीहै, सो नाशवंत होताहै, परतु आत्माकी उत्पत्ति नही हुइहै, क्योकि जिस वस्तुकी उत्पत्ति होतीहै तिसका उपादान अर्थात् जिसकी आत्मा वन जावे जैसे घमेका उपादान मिट्टीका पिंम है, सो उपादान कारण कोइ अरूपी ज्ञानवत वस्तु होनी

चाहिये, जिससे आत्मा बने, ऐसा तो आत्मासें पहिला कोइजी उपादान कारण नहीहै, इस वास्ते आत्मा अनादि अनत अविनाशी वस्तु है.

प्र १०५–जेकर कोइ ऐसे कहे आत्माका उपादान कारण ईश्वरहे, तवतो तुम आत्माको अनित्य मानोगेके नही

उ –जव ईश्वर आत्माका उपादान कारण मानोगे, तवतो ईश्वर और सर्व अनत ससारी आत्मा एकही हो जावेगी, क्योंकि कार्य अपणे उपादान कारणसें जिन्न नही होता है

प्र. १०६–ईश्वर और सर्व संसारी आत्मा एकही सिद्ध होवेगेतो इसमे क्या हानि है ?

उ –ईश्वर और सर्व संसारी आत्मा एकही सिद्ध होवेगे तो नरक तिर्यचकी गतिमेजी ईश्वरही जावेगा, और धर्मा धर्मजी सर्व ईश्वरही,करनेवाला और चौर, यार, लुच्चा, लफंगा, अगम्यगामी इत्यादि सर्व कामका कर्त्ता ईश्वरही सिद्ध होवेगा, तवतो वेदपुराण, वैवल, कुरान प्रमुख शास्त्रजो ईश्वरने अपनेही प्रतिबोध व.

सिद्ध होवेगे, तवतो ईश्वर अज्ञानी सिद होवेगा जव अज्ञानी सिद हुआ तवतो तिसके रचे शास्त्री जूठे और निष्फल सिद होवेगे, ऐसे जव सिद्ध होगा तवतो माता, वहिन, वेटीके गमन करनेको शका नही रहेगी, जिसके मनमें जो आवे सो पाप करेगा, क्योके सर्व कुछ करने कराने फल जोगने जुक्ताने वाला सर्व ईश्वरही है, ऐस माननेसे तो जगतमे नास्तिक मत खमा करना सिद्ध होवेगा

प्र १०७–जीवकों पुनर्जन्म किस कारणसें करणा पमताहै ?

उ —जीवहिंसा, १ जूठ वोलना, २ चोरी करनी, ३ मेथुन, स्त्रीसे जोगकरना, ४ परिग्रह रखना, ५ क्रोध १ मान ७ माया ३ लोज ४ एव ए राग १० द्वेष ११ कलह १२ अज्याख्यान अर्थात् किसीकों कलक देना १३ पैशुन १४ परकी निंदा करनी १५ रति अरति १६ माया मृपा १७ मिथ्यादर्शन शल्ल, अर्थात् कुदेव, कुगुरु, कुधर्म, इन तीनोको सुदेव, सुगुरु, सुधर्म करके

मानना १८, जब तक जीव येह अष्टादश पाप सेवन करताहै, तब तक इसको पुनर्जन्म होताहै

प्र. १०८–जीवकों पुनर्जन्म बंद होनेका क्या रस्ताहै ?

उ –ऊपर लिखे हुए अष्टादश पापका त्याग करे, और पूर्व जन्मातरोमे इन अष्टादश पापोके सेवनेसे जो कर्माका बंध कराहै, तिसको अर्हतकी आज्ञानुसार ज्ञान श्रद्धा जप तप करनेसें सर्वथा नाश करे तो फेर पुनर्जन्म नही होताहै

प्र १०९–तीर्थकर महाराजके प्रभावसे अपना कल्याण होवेगा, के अपनी आत्माके गुणाके प्रभावसे हमारा कल्याण होवेगा ?

उ —अपनी आत्माका निज स्वरूप केवल ज्ञान दर्शनादि जब प्रगट होवेगे, तिसके प्रभावसे हमारी तुमारी मोक्ष होवेगी

प्र ११०—जेकर निज आत्माके गुणोसे मोक्ष होवेगी, तबतो तीर्थंकर भगवतकी भक्ति करनेका क्या प्रयोजन है ?

उ –तीर्थंकर भगवतकी भक्ति करनेमें तं

र्थंकर ज्ञगवत निमित्त कारणहै विना निमित्तके अपनी आत्माके गुणरूप ज्ञपादान कारण कदेइ फल नही देताहै तीर्थंकर निमित्तज्ञूत होवे तव ज्ञक्तिरूप ज्ञपादान कारण प्रगट होताहै तिससेही, आत्माके सर्व गुण प्रगट होतेहै, तिनसें मोक्ष होताहै जैसे घट होनमे मिट्टी ज्ञपादान कारनहै, परतु विना कुलाल चक्र दम्म चीवरादि निमित्तके कदापि घट नही होताहै, तैसेंही तीर्थंकर रूप निमित्त कारण विना आत्माको मोक्ष नही होताहै, इस वास्ते तीर्थंकरकी ज्ञक्ति अवश्य करने योग्यहै.

प्र ११२–जगतमें जीव पुन्य पाप करतेहै तिनके फलका देनेवाला परमेश्वरहै वा नही?

ज —पुन्य पापके फलका देनेवाला परमेश्वर नही है,

प्र ११३—पुन्य पापके फलका दाता ईश्वर मानिये तो क्या हरज है?

ज –ईश्वर पुन्य पापका फल देवे तव तो ईश्वरकी ईश्वरताकों कलक लगता है

प्र ११४–क्या कलंक लगताहै ?

उ–अन्यायता, निर्दयता असमर्थता अज्ञानतादि.

प्र ११५–अन्यायता दूपण ईश्वरकों पुन्य पापके फल देनेसे कैसें लगताहै ?

उ–जब एक आदमीने तलवारादिसें किसी पुरुषका मस्तक छेदा, तब मस्तकके छिदनेसें उस पुरुषको जो महा पीमा जोगनी पमीहै, सो फल ईश्वरने दूसरे पुरुषके हाथसे उसका मस्तक कटवाके भुक्ताया, तद पीछे तिस मारने वालेकों फासी आदिकसे मरवाके तिसको तिस शिर छेदन रूप अपराधका फल भुक्ताया, ईश्वरने पहिला तिसका शिर कटवाया, पीछे तिसकों फासी देके तिस शिर छेदनेका फल जुक्ताया; ऐसे काम करनेसें ईश्वर अन्यायी सिद्ध होताहै.

प्र, ११६–पुन्य पापके फल जुक्तानेसें ईश्वरमें निर्दयता क्यों कर सिद्ध होतीहै

उ–जब ईश्वर कितने जीवाकों महा दुःखी करताहै, तब निर्दयी सिद्ध होताहै. शास्त्रों

मैंतो ऐसें कहताहे किसी जीवकों मत मारना, दुखोन्नी न करना, भूखेको देखके खानेकों देना, और आप पूर्वोक्त काम नही करताहै, जीवाको मारताहै, महा दुखी करताहे भूखसे लाखो क रोडो मनुष्य कालादिमें मर जातेहैं, तिनकों खा नेको नही देताहै, इस वास्ते निर्दयी सिद्ध हो-ताहै,

प्र ११७–ईश्वरतो जिस जीवने जैसा जैसा पुन्य पाप कराहै तिसको तैसा तैसा फल देता है इसमे ईश्वरको कुछ दोष नही लगताहै, जैसें राजा चौरको दंड देताहै और अछा काम करने वालेकों इनाम देताहै,

उ -राजातो सर्व चोराको चोरी करनेसे बंद नही कर सकता है चाहताहै कि मेरे राज्यमे चोरी न होवेतो ठीकहै, परंतु ईश्वरको तो लोक सर्व सामर्थ्यवाला कहतेहै, तो फेर ई-श्वर सर्व जीवाकों नवीन पाप करनेसे क्यों नही मने करताहै मनें न करनेसे ईश्वर जान बूझके जीवोसें पाप करताहै फेर तिसका दंड देके जी

वोंकों डखी करताहै इस हेतुसेंही अन्यायी, निर्दयी, असमर्थ ईश्वर सिद्ध होताहै इस वास्ते ईश्वर नगवत किसीको पुन्य पापका फल नही देताहै इस चर्चाका अधिक स्वरूप देखना होवे तो हमारा रचा हुआ जैनतत्वादर्शनामा पुस्तक वाचना

प्र ११८--जब ईश्वर पुन्य पापका फल नही देताहै, तो फेर पुन्य पापका फल क्योंकर जीवाको मिलताहै?

उ --जब जीव पुन्य पाप करतेहै तब तिनके फल नोगनेके निमित्तजी साथही होनेवाले बनाता करताहै, तिन निमित्तो द्वारा जीव शुनाशुन कर्मोका फल नोगतेहै, तिन निमित्तोका नामही अज्ञ लोकोने ईश्वर रख गेराहै

प्र ११९-जगतका कर्त्ता ईश्वरहै के नही?

उ -जगततो प्रवाहसे अनादि चला आताहै किसीका मूलमें रचा हुआ नहीहै, काल १ स्वनाव २ नियते ३ कर्म ४ चेतन आत्मा और जड पदार्थ इनके सर्व अनादि नियमोसें

यह जगत विचित्ररूप प्रवाहसें चला हुआ उत्पाद व्यय ध्रुव रूपसें इसी तरे चला जायगा

प्र १२०- श्री महावीरस्वामीए तीर्थकरोको प्रतिमा पूजनेका उपदेश कराहै के नही ?

उ -श्री महावीरजीने जिन प्रतिमाकी पूजा द्रव्ये और भावेतो गृहस्थकों करनी बतायिहै, और साधूयोंको भावपूजा करनी बताइहै

प्र १२१—जिन प्रतिमाकी पूजा विना जिनकी भक्ति हो शक्तीहै के नही ?

उ —प्रतिमा विना भगवंतका स्वरूप स्मरण नही हो सक्ताहै, इस वास्ते जिन प्रतिमा विना गृहस्थलोकोसे जिनराजकी भक्ति नही हो सक्तीहै

प्र १२२-जिन प्रतिमातो पापाणादिककी बनी हुइहै, तिसके पूजने गुणस्तवन करनेसें क्या लाभ होताहै ?

उ --हम पथ्थर जानके नही पूजतेहै, किंतु तिस प्रतिमा द्वारा साक्षात् तीर्थकर भगवतकी पूजा स्तुति करतेहै. जैसे सुदर स्त्रोको तसवीर

देखनेसे असल स्त्रीका स्मरण होकर कामी काम पीमित होताहै तैसेही जिन प्रतिमाके देखनेसें नक्तजनोको असली तीर्थंकरका रूपका स्मरण होकर नक्तोंका जिन नक्तिसे कल्याण होता है

प्र १९३–जिन प्रतिमाकी फूलादिसें पूजा करनेसें श्रावकोंको पाप लगताहै के नही ?

उ –जिन प्रतिमाकी फूलादिसें पूजा करनेसें संसारका क्षय करे, अर्थात् मोक्ष पद पावे; और जो किंचित् द्रव्य हिंसा होतीहै, सो कूपके दृष्टांतसें पूजाके फलसेही नष्ट होजातिहै, यह कथन आवश्यक सूत्रमेंहै

प्र १९४–सर्व देवते जैनधर्मी है ?

उ –सर्व देवते जैनधर्मी नहीहै, कितनेकहै

प्र १९५–जैनधर्मी देवताकी नगती श्रावक साधु करे के नही ?

उ –सम्यग् दृष्टी देवताकी स्तुति करनी जैनमतमे निषेध नही, क्योंकि श्रुत देवता ज्ञानके विघ्नोको दुर करतेहै, सम्यग् दृष्टी देवते धर्ममे होते विघ्नोकों दुर करतेहै, और कोइ नोला

अपनी राजगद्दी ऊपर बैठाया, सो संप्रति नामे राजा हुआहै, श्रेणिक १ कोणिक २ उदायि ३ यह तीनो तो जैनधर्मी थे, नव नंदोकी मुझे खबर नही, कोनसा धर्म मानते थे चन्द्रगुप्त १ बिन्दुसार ए दोनो जैनी राजे थे, अशोकश्रीजी जैनराजा था, पीछेसें केइक बौद्धमति हो गया कहतेहै, और सप्रति तो परम जैनधर्मीराजा था

प्र १२ए–सप्रति राजाने जैनधर्मके वास्ते क्या क्या काम करेथे

उ –सप्रतिराजा सुहस्ति आचार्यका श्रावक शिष्य १२ बारा व्रतधारी था, तिसने द्रविड़ अध्र करणाटादि और काबुल कुराशानादि अनार्य देशोमे जैनसाधुयोका विहार करके तिनके उपदेशसें पूर्वोक्त देशोमें जैनधर्म फैलाया, और निनानवे एए००० हजार जीर्ण जिन मदरोंका उद्धार कराया, और छव्वीस २६००० हजार नवीन जिनमदिर बनवाए थे, और सवाकिरोड़ १२५००००० जिन प्रतिमा नवीन बनवाइ थी, जिनके बनाए हूए जिनमदिर गिरनार नमोलादि

स्थानोमे अवन्नी मौजूद खम्हे, और तिनकी व-नवाइ हुइ सैकमो जिन प्रतिमान्नी मद्दा सुंदर विद्यमान कालमे विद्यमान हैं; और सम्प्रति राजा ने ७०० सौ दानशाला करवाइ थी और प्रजाके महा हितकारी ऊपधशालादिन्नी वनवाइ थी, इत्यादि सम्प्रतिराजाने जैनमतकी वृद्धि और प्र-न्नावना करी थी विरात् २९१ वर्ष पीछे हुआ है.

प्र. १३०–मनुष्योंमे कोइ ऐसी शक्ति विद्यमानहै कि जिसके प्रन्नावसें मनुष्य अद्भुत काम कर सक्ताहे?

ऊ.–मनुष्यम अनंत शक्तियो कर्मोके आवरणसें ढंकी हुइहै, जेकर वे सर्व शक्तिया आवरण रहित हो जावेतो मनुष्य चमत्कारी अद्भुत काम कर सक्तेहे

प्र १३१ वे शक्तिया किसने ढाक गेम्हीहै?

ऊ. आठ कर्मोकी अनत प्रकृतियोने आछदन कर गेम्हीहे

प्र. १३२ हमनेतो आठ कर्मकी १४८ वा १५८ प्रकृतिया सुनीहे, तो तुम अनत किस तरेसें

कहेते है ?

उ एकसौ १४० वा १५० यह मध्य प्रकृतियांके भेदहै, और उत्कृष्ट तो अनत भेद है, क्योंके आत्माके अनंत गुणहै, तिनके ढाकनेवालीयां कर्म प्रकृतियांभी अनत है.

प्र. १३३–मनुष्यमे जो शक्तिया अद्भुत काम करनेवालीयाहै तिनका थोमासा नाम लेके वतलाउ, और तिनका किंचित् स्वरूपभी कहो, और यह सर्व लब्धिया किस जीवकों किस कालमें होतीयाहै ?

उ –आमोसहि लद्दी १ जिस मुनिके हाथादिके स्पर्श लगनेसें रोगीका रोग जाए, तिसका नाम आमर्षोषधि लब्धि है, मुनि तिस लब्धिवाला कहा जाताहै, यह लब्धि साधुहीकों होती है

विप्पोसहि लद्दी २--जिस साधुके मलमूत्रके लगनेसे रोगोका रोग जाए, तिसका नाम विट्पोषधि लब्धि है, इस लब्धिवाले मुनिका मल, विष्टा और मूत्र सर्व कर्पूरादिवत् सुगंधि-

वाला होता है, यह लब्धि साधुकोही होतीहै.

खेलोसहि लद्धी ३--जिस साधुका श्लेष्म थूंकही ज्पधिरूप है, जिस रोगीके शरीरकों लग जावेतो तत्काल सर्व रोग नष्ट हो जावे, यह सुगंधित होताहै, यह लब्धि साधुकों होतो है, इसकों श्लेष्मोपधि लब्धि कहतेहैं

जल्लोसहि लद्धी ४--जिस साधुके शरीरका पसीना तथा मैलज्ञी रोग दूर कर सके, तिसकों जल्लोपधि लब्धि कहते है, यहज्ञी साधुकोंही होती हैं

सघोसहि लद्धी ५ जिस साधुके मलमूत्र केश रोम नखादिक सर्वोपधि रूप हो जावे, सर्व रोग दूर कर सकें, तिसको सर्वोपधि लब्धि कहतेहैं, यह साधुको होतीहै.

संज्ञिन्नासोए लद्धी ६–जो सर्व इंड्रियोसे सुणे, देखे, गंध सूंघे, स्वाद लेवे, स्पर्श जाणे एकैक इन्द्रियसे सर्व इंड्रियाकी विषय जाणे अथवा वारा योजन प्रमाण चक्रवर्तिकी सेनाका पमाव होताहै, तिसमे एक साथ वाजते हुए-सर्व वर्ज

त्रोंकों अलग अलग जान सके तिसको संभिन्न श्रोत्र लब्धि कहतेहै, यह साधुको होवे है

उहिनाण लद्धी ७-अवधिज्ञानवतको अवधिज्ञान लब्धि होती है, यह चारो गतिके जीवाको होतीहै, विशेष करके साधुको होतीहै

रिजुमइ लद्धी ८-जिस मनः पर्यायज्ञानसें सामान्य मात्र जाणें, जैसे इस जीवने मनमें घट चिंतन कराहै इतनाही जाणे, परतु ऐसा न जानेकि वैसा घट किस क्षेत्रका उत्पन्न हूआ किस कालमें उत्पन्न हुआहै, अथवा अढाइ द्वीपके मनुष्योंके मनके वादर परिणामा जाणे तिसको ऋजुमति लब्धि कहते है, यह निश्चय साधुको होतीहै अन्यको नही

विउलमइ लद्धी ९-जिस मन पर्यायसे ऋजुमतिसें अधिक विशेष जाणें, जैसें इसने सोनेका घट चिंतन कराहै पाटलिपुत्रका उत्पन्न हूआ वसतऋतुका अथवा अढाइ द्वीपके सज्ञी जीवाके मनके सूक्ष्म पर्यायाकोंभी जाणे, तिसको विपुलमति लब्धि कहतेहै, इसका स्वामी साधुही

होवे, यह लब्धि केवल ज्ञानके विना हुआ जाए नही.

चारण लब्धी १०—चारण दो तरेके होतेहे, एक जघा चारण १ दूसरा विद्या चारण २ जंघा चारण उसको कहतेहै जिसकी जंघायोंमे आकाशमे उडनेकी सक्ति उत्पन्न होवे सो जघा चारण. ऊंचातो मेरु पर्वतके शिखर तक उडके जासक्ताहे, और तिरछा तेरमे रुचक द्वीप तक जासकताहे, और विद्याचारण ऊचा मेरु शिखरतक और तिरछा आठमे नंदीश्वर द्वीप तक विद्याके प्रभावसे जा सक्ताहे, येह दोनो प्रकारकी लब्धिकों चारण लब्धि कहतेहै, यह साधुकों होतीहै

आसीविष लब्धी ११—आशी नाम दाढाका है, तिनमे जो विष होवे सो आशीविष सो दो प्रकारेहे, एक जाति आशीविष दूसरा कर्म आशीविष, तिनमें जाति जहरीके चार भेद है विछु १ सर्प २ मींडक ३ मनुष्य ४ और तप करनेसे जिस पुरुषको आशीविष लब्धि होती सो शाप देके अन्यकों मार सक्ताहै.

आशीविष लब्धि कहतेहै

केवल लद्धी १२-जिस मनुष्यको केवल ज्ञान होवे, तिसकों केवलि नामे लब्धिहै.

गणहर लद्धी १३-जिससें अंतर मुहूर्त्तमें चौदह पूर्व गूंथे और गणधर पदवी पामें, तिसकों गणधर लब्धि कहतेहै

पुव्वधर लद्धी १४-जिससें चौदहपूर्व दश पूर्वादि पूर्वका ज्ञान होवे, सो पूर्वधर लब्धि.

अरहंत लद्धी १५-जिससे तीर्थंकर पद पावे, सो अरिहंत लब्धि.

चक्कवट्टि लद्धी १६-चक्रवर्त्तीकों चक्रवर्ती लब्धि.

बलदेव लद्धी १७-बलदेवकों बलदेव लब्धि.

वासुदेव लद्धी १८-वासुदेवकों वासुदेवकी लब्धि

खीरमहुसप्पिआसव लद्धी १९-जिसके वचनमें ऐसी शक्तिहै कि तिसकी वाणि सुणके श्रोता ऐसा तृप्त हो जावेके मानु दूध, घृत, शाकर, मिसरीके खानेसे तृप्त हुआहै, तिसकों खीर

मधुसर्पि आसव लब्धि कहते है, यह साधुकों होती है

कुष्ठ वुदि लद्धी २०-जैसे वस्तु कोठेमें पमी हुइ नाश नही होतीहै, ऐसेही जो पुरुष जितना ज्ञान सीखे सो सर्व वैसेका तैसाही जन्मपर्यंत न्नूले नही, तिसको कोष्टक बुद्धि लब्धि कहते है.

पयाणुसारी लद्धी २१-एक पद सुननेसे संपूर्ण प्रकरण कह देवे, तिसकों पदानुसारी लब्धि कहते है.

बीयबुद्दि लद्धी २२-जैसें एक बीजसें अनेक बीज उत्पन्न होतेहै, तैसेही एक वस्तुके स्व रूपके सुननेसें जिसको अनेक प्रकारका ज्ञान होवे, सो बीजबुद्धि लब्धिहै

तेजलेसा लद्धी २३ जिस साधुके तपके प्रन्नावसें ऐसी शक्ति उत्पन्न होवेके जेकर क्रोध चढेतो मुखके फुंकारेसें कितनेही देशाकों बालके न्नस्म कर देवे, तिसकों तेजोलेश्या लब्धि कहते है

आहारए लद्धी २४ चउदह पूर्वधर मुनि तीर्थकरकी ऋद्धि देखने वास्ते, १ वा कोइ अर्थ अवगाहन करने वास्ते, अथवा अपना संशय दूर करने वास्ते अपने शरीरमें हाथ प्रमाण स्फटिक समान पूतला काढके तीर्थंकरके पास भेजताहै, तिस पूतलेसें अपने कृत्य करके पाछा शरीरमे संहार लेताहै, तिसको आहारक लब्धि कहतेहै.

सीयलेसा लद्धी २५ तपके प्रभावसे मुनिको ऐसी शक्ति उत्पन्न होतीहैके जिससे तेजो लेश्याकी उष्णताको रोक देवे, वस्तुकों दग्ध न होने देवे, तिसकों शीतलेशा लब्धि कहते है

वेउव्विदेह लद्धी २६ जिसकी सामर्थ्यसे अणुकी तरें सूक्ष्म कण मात्रमें हो जावे, मेरुकी तरे भारी देह कर लेवे, अर्क तूलकी तरें लघु हलका देह कर लेवें, एक वस्त्रमेंसे वस्त्र करोमों आर एक घटमेंसे घट करोमों करके दिखला देवे, जैसा इछे तैसा रुप कर सके, अधिक अन्य क्या कहिये, तिसका नाम वैक्रिय लब्धि है

अक्खीणमहाणसी लद्धी २७—जिसके प्रभा

वसे जिस साधुनें आहार आणाहै, जहां तक सो साधु न जीमे तहा तक चाहो कितनेहो साधु तिस जिद्दामेंसे आहार करे तोजी खूटे नही, तिसकों अक्षीणमहानसिक लब्धि कहते हैं

पुलाय लब्धी २८–जिसके प्रजावसें धर्मकी रक्षा करने वास्ते धर्मका द्वेषी चक्रवर्त्यादिकों सेना सहित चूर्ण कर सके, तिसकों पुलाकलब्धि कहते हैं.

पूर्वोक्त येह लब्धिया पुन्यके और तपके और अत करणके वहुत शुद्ध परिणामोंके होनेसे होवेहे, ये सर्व लब्धिया प्रायें तीसरे चौथे आरेमेही होतीयाहे, पंचम आरेकी शुरुआतमेंजी हो तीया है

प्र १३४–श्री महावीरस्वामीकों ये पूर्वोक्त लब्धिया २८ अगवीस थी?

उ –श्री महावीरजीकोंतो अनतीयां लब्धियां थी येह पूर्वोक्ततो २८ अठावीस किस गिन तीमेहे, सर्व तीर्थकराकों अनत लब्धियां होतीहै

प्र. १३५–इंद्रनूति गौतमकों ये सर्व ल-

ब्धियो थी ?

उ–चक्री, बलदेव, वासुदेव ऋजुमति, ये नही थी, शेप प्राये सर्वही लब्धिया थी

प्र. १३६–आप महावीरकोंही जगवंत सर्वज्ञ मानतेहो, अन्य देवोंकों नही, इसका क्या कारणहै ?

उ–अपने २ मतका पक्षपात छोमके विचारीये तो, श्री महावीरजीमेंही जगवंतके सर्व गुण सिद्ध होतेहैं, अन्य देवोंमें नही

प्र १३७ श्री महावीरजीको हूएतो बहुत वर्ष हूएहै, हम क्योंकर जानेंके श्री महावीरजी मेंही जगवानपणेके गुण थे, अन्य देवोंमे नही थे?

उ–सर्व देवोंकी मूर्त्तियों देखनेसे और तिनके मतोमे तिन देवोंके जो चरित कथन करेंहे तिनके वाचने और सुननेसें सत्य जगवंतके लक्षण और कल्पित जगवंतोंके लक्षण सर्व सिद्धहो जावेगे

प्र. १३८ कैसी मूर्त्तिके देखनेंसे जगवतकी मूर्त्ति नहींहै, ऐसे हम माने ?

उ जिस मूर्त्तिके संग स्त्रीकी मूर्त्ति होवे तव जाननाके यह देव विषयका ज्ञोगी था जिस मूर्त्तिके हाथमे शस्त्र होवे तव जानना यह मूर्त्ति रागी, द्वेषी वैरीयोके मारने वाले और असमर्थ देवोकी है जिस मूर्त्तिके हाथमें जपमाला होवे तव जानना यह किसीका सेवक है, तिससे कुछ मागने वास्ते तिसकी माला जपताहै

प्र १३७ परमेश्वरकी कैसी मूर्त्ति होतीहै?

उ.—स्त्री, जपमाला, शस्त्र, कमंडलुसे रहित और शात निस्पृह ध्यानारूढ समता मतवारी, शातरस, मग्नसुख विकार रहित, ऐसी सच्चे देवकी मूर्त्ति होतीहै

प्र. १४० जैसे तुमनें सर्वज्ञकी मूर्त्तिके लक्षण कहेहै, तैसें लक्षण प्रायें वुद्धकी मूर्त्तिमेंहै, क्या तुम वुद्धको ज्ञगवत सर्वज्ञ मानतेहो ?

उ.—हम निकेवल मूर्त्तिकेही रूप देखनेसे सर्वज्ञका अनुमान नही करतेहे, किंतु जिसका चरितज्ञो सर्वज्ञके लायक होवे, तिसकों सच्चा देव मानते है.

प्र. १४१ क्या बुधका चरित सर्वज्ञ सच्चे देव सरीखा नहीहै?

उ बुध्के पुस्तकानुसार बुदका चरित सर्वज्ञ सरीखा नही मालुम होताहै

प्र १४७ बुद्धके शास्त्रोंमे बुदका किसतरेका चरित है, जिससे बुद सर्वज्ञ नहीहै?

उ —बुद्धका बुद्धके शास्त्रानुसारे यह चरित जो आगे लिखतेहै, तिसे बुद सर्वज्ञ नही सिद होताहै १ प्रथम बुध्ने संसार छोडके निर्वाणका मार्ग जानने वास्ते योगीयोका शिष्य हुआ, वे योगी जातके ब्राह्मणथे और तिनकों बडे ज्ञानी भी लिखाहै, तिनके मतकी तपस्यारुप करनीसे बुदका मनोर्थ सिद्ध नही हुआ, तब तीनको छोडके बुद गयाके पास जंगलमें जा रहा १, इस ऊपरके लेखसेतो यह सिद होता है कि बुद्ध कोइ ज्ञानी बुद्धिमान्तो नही था, नहीतो तिनके मतकी निष्फल कष्ट क्रिया काहेको करता, और गुरुयोंके छोडनेसे स्वछंदचारी अविनीतभी इसी सिद्ध होताहै १ पीछे बुदने उग्र ध्यान

और तप करनेमें कितनेक वर्ष व्यतीत करे २ इस लेखसें यह सिद्ध होताहैकि जब गुरुयोंकों छोड़ा निकम्मे जानके तो फेर तिनका कथन करा हुआ, उग्र ध्यान और तप निष्फल काहेको करा, इस सेंन्नी तप करता हुआ, जब मूर्छा खाके पड़ा तहा तकन्नी अज्ञानी था, ऐसा सिद्ध होता है १ पीछे जब बुद्धने यह विचार कराके केवल तप करनैसे ज्ञान प्राप्त नही होताहै, परंतु मनके उधारु करनेसें प्राप्त करना चाहिये, पीछे तिसने खानेका निश्चय करा और तप छोड़ा २ जब ध्यान और तप करनेसे मन न उघड़ा तो क्या खानेसें मन उघरु शकताहै, इससें यहन्नी तिसकी समझ असमजस सिद्ध होती है, १ पीछे अजपाल वृक्षके हेठे पूर्व तर्फ बैठके इस्ने ऐसा निश्चय कराके जहां तक मै बुद्ध न होवागा तहा तक यह जगा न छोरुंगा, तिस रात्रिमे इसकों इन्नारोध करनेका मार्ग और पुनर्जन्मका कारण और पूर्व जन्मांतरोका ज्ञान उत्पन्न हुआ, और दूसरे दिनके सवेरेके समय इसका मन परिपूर्ण उघड़ा, और स-

वोंपरि केवलज्ञान उत्पन्न हुआ २ अब विचारीये जिसने उग्रध्यान और तप गोम दीया और नित्यप्रते खानेका निश्चय करा तिसकों निर्हेतुक इ न्द्रारोध करनेका और पुनर्जन्मके कारणोंका ज्ञान कैसें हो गया, यह केवल अयौक्तिक कथनहै. मो ग्लायन और शारिपुत्र और आनदकी कल्पनासें ज्ञानी लोकोमें प्रसिद्ध हुआ है १, बुद्धने यह कथन करा है, आत्मा नामक कोइ पदार्थ नही है, आत्मातो अज्ञानियोने कल्पन करा है २, जब बुद्धने ज्ञानमे आत्मा नही देखा तब केवलज्ञान किसकों हुआ, और बुद्धने पुनर्जन्मका कारण किसका देखा, और पूर्व जन्मातर करने वाला किसकों देखा, और पुन्य पापका कर्त्ताभूक्ता किसको देखा, और निर्वाण पद किसको हूआ देखा, जेकर कोइ यह कहेके नवीन नवीन क्षणकों पि छले २ क्षणोकी वासना लगती जाती है, कर्त्ता पिछला क्षणहै, और भोक्त अगला क्षणहै, मोक्षका साधन तो अन्य क्षणने करा, और मोक्ष अ गले क्षणकी हुइ, निर्वाण उसकों कहतेहै कि जो

दीपककी तरें क्षणोका बुझ जाना, अर्थात् सर्व क्षण परपरायका सर्वथा अन्नाव हो जाणा, अथवा शुद्ध क्षणोकी परंपराय रहती है पाच स्कंधोसे वस्तु उत्पन्न होती है, पाचो स्कंधन्नी क्षणि कहै, कारण कार्य एक कालमे नही है, इत्यादि सर्व बौद्ध मतका सिद्धात अयौक्तिक है १ बुद्धके शिष्य देवदत्तने बुधको मास खाना छुडानेके वास्ते वहुत उपदेश करा, परंतु वुद्धने न माना, अंतमेन्नी सूयरका मास और चावल अपने न्नक्तके घरसे लेके खाया, और वेदना ग्रस्त होकरके मरा, और पाणीके जीव वुद्धकों नही दीखे तिससें कच्चे पानीके पीने और स्नान करनेका उपदेश अपने शिष्योको करा, इत्यादि असमंजस मतके उपदेशकको हम क्यो कर सर्वज्ञ परमेश्वर मान सके, जो जो धर्मके शब्द बौद्ध मतमे कथन करे है वे सर्व शब्द ब्राह्मणोके मतमेतो है नही, इस वास्ते वे सर्व शब्द जैन मतसें लीयेहै बुद्धसे प हिले जैन धर्म था, तिसका प्रमाण हम ऊपर लिख आए है, बुद्धके शिष्य मौद्गलायन और शारिपु-

त्रने श्री महावीरके चरितानुसारी बुद्धकों सर्वसे ऊचा करके कथन करा सिद्ध होताहै, इस वास्ते जैनमतवाले बुद्धके धर्मको सर्वज्ञका कथन करा हुआ नही मानते हैं.

प्र १४३—कितनेक यूरोपीयन विद्वान् ऐसे कहतेहै कि जैन मत ब्राह्मणोंके मतमेसें लीयाहै, अर्थात् ब्राह्मणोके शास्त्रोकी वाता लेके जैन मत रचा है?

उ—यूरोपीयन विद्वानोंने जैनमतके सर्व पुस्तक वाचे नही मालुम होतेहै, क्योंकि जेकर ब्राह्मणोके मतमें अधिक ज्ञान होवे, और जैन-मतमें तिसके साथ मिलता थोमासा ज्ञान होवे, तव तो हमन्नी जैनमत ब्राह्मणोके मतसें रचा ऐसा मान लेवे, परतु जैनमतका ज्ञानतो ब्राह्मणादि सर्व मतोके पुस्तकोंसे अधिक और विलक्षणहै, क्योंकि जैनमतके वेद पुस्तक और कर्मो के स्वरूप कथन करनेवाले कर्म प्रकृति, १ पंच सग्रह, २ षट्कर्म ग्रंथादि पुस्तकोंमें जैसा ज्ञान कथन करा है, तैसा ज्ञान सर्व दुनियाके मतके

पुस्तकोंमे नहीहै, तो फेर ब्राह्मणोके मतके ज्ञानसे जैन मत रचा क्योंकर सिद्ध होवे, बलकि यह तो सिद्धभी हो जावेके सर्व मतोंमे जो जो सूक्त वचन रचना है वे सर्व जैनके द्वादशांग समुद्रकेही बिंदु सर्व मतोंमे गये हुएहै विक्रमादित्य राजेके प्रोहितका पुत्र मुकदनामा चार वेदादि चौदह विद्याका पारगामी तिसने वृद्धवादी जैनाचार्यके पास दीक्षा लीनी गुरुने कुमुदचंद्र नाम दीना ओर आचार्यपद मिलनेसे तिनका नाम सिद्धसेन दिवाकर प्रसिद्ध हुआ, जिनका नाम कवि कालीदासने अपने रचे ज्योतिर्विदाभरण ग्रथमें विक्रमादित्यकी सभाके पन्डितोके नाम लेता श्रुतसेन नामसे लिखाहै, तिनोने अपने रचे बत्तीस बत्तीसी ग्रथमें ऐसा लिखाहै, सुनिश्चितं न परतंत्र युक्तिपु ॥ स्फुरंतिया कश्चिन्सुक्तिसंपदः ॥ तवैवता पूर्वमहार्णवोछ्रता ॥ जगत्प्रमाण जिनवाक्य विप्रुप ॥१॥ उदधाविव सर्व संधव ॥ समुदीरणा त्वयि नाथ दृष्टय ॥ नचतासु भवान्प्रदृश्यते ॥ प्रविभक्त सरित्स्विवोदधि ॥ १ ॥ प्रथम श्लोक-

का नावार्थ ऊपर लिख आएहै, दूसरे श्लोकका नावार्थ यह है, कि समुइमें सर्व नदीया समा सक्ती है, परंतु समुइ किसीन्नी एक नदीमे नही समा सक्ता है, तैंने सर्व मत नदीया समान है, वैतो सर्व स्याद्वाद समुद्ररूप तेरे मतमे समा सक्ते है, परंतु तेरा स्याद्वाद समुइरूप मत किसी मतमेंन्नी सपूर्ण नही समा सक्ता है, ऐसेहो श्री हरिन्नइसूरिजी जो जातिके ब्राह्मण ओर चित्रकूटके राजाके प्रोहित थे ओर वेद वेदांगादि चौदह विद्याके पारगामी थें, तिनोने जैनकी दीक्षा लेके १४४४ ग्रथ रचेहे, तिनोनेन्नी ऊपदेशपद षोमशकादि प्रकरणोमे सिद्धसेन दिवाकरकी तरेही लिखाहै तथा श्री जिनधर्मी हुआ पोछे जानाहै, जिसने शैवादि सकल दर्शन ओर वेदादि सर्व मतोंके शास्त्र ऐसे पंमित धनपालने जोके न्नोजराजाकी सन्नामें मुख्य पंमित था, तिसने श्री ऋषन्नदेवकी स्तुतिमे कहाहे, पावति जसं असमजसावि, वयणेहिं जेहि पर समया, तुह समय महो अहिणो, ते मंदाबिंडु निस्संदा ॥ १ ॥ अ

स्यार्थ ॥ जैनमतके विना अन्य मतके असमजस वचनरूप शास्त्र जो जगमे यशको पावें है जैनसे वचनोसे वे सर्व वचन तेरे स्याद्वादरूप महोदधि के अमंद विंदु उमके गए हुएहे, इत्यादि सैकमो चार वेद वेदांगादिके पाठीयोनें जैनमतमे दीक्षा लीनी है, क्या उन सर्व पंमितोको बौद्धायनादि शास्त्र पमते हुआको नही मालुम पमा होगा के बौद्धायनादि शास्त्र जैनमतके वचनोसे रचे गये है, वा जैन मत बौधायनादि शास्त्रोंसे रचा गया है, जेकर कोइ यह अनुमान करके श्री महावीर-जीसें बौद्धायनादि शास्त्र पहिले रचे गएहै, इस वास्ते जैनमत पीछेसे हुआहै, यह माननाभी ठीक नहो, क्योंकि श्री महावीरजीसें २५० वर्ष पहिलें श्री पार्श्वनाथजी और तिनसें पहिले श्री नेमिनाथादि तीर्थंकर हुएहे, तिनके वचन लेके बौधायनादि शास्त्र रचे गएहें, जैनी ऐसें मानतेहै, जेकर कोइ ऐसें मानता होवे कि जैनमत थोमाहै और ब्राह्मण मत बहुत है, इस वास्ते थोमे मतमे वमा मत रचा क्यों कर सिद्ध होवे, यह अनुमान अ

तीत कालकी अपेक्षाए कसा मानना ठीक नही, क्योंकि इस हिंदुस्तानमें बुद्धके जीते हुए बुद्धमत विस्तारवत नही था, परतु पीछेसे ऐसा फैलाके ब्राह्मणोका मत बहुतही तुच्छ रह गया था, इसी तरे कोइ मत किसी कालमे अधिक हो जाता है, और किसी कालमे न्यून हो जाता है, इस वास्ते थोमा और वमा मत देखके थोमे मतको वमेसे रचा मानना ये अनुमान सच्चा नही है, जट्ट मो क्षमूलरने यह जो अनुमान करके अपने पुस्तक-मे लिखाहै कि वेदोंके छदोन्भाग और मत्रन्भागके रचेको २९०० वा ३१०० सौ वर्ष हुएहै, तो फेर बौधायनादि शास्त्र बहुत पुराने रचे हुए क्यों कर सिद्ध होवेंगे, इस वास्ते अपने मनकल्पित अनु-मानसें जो कल्पना करनी सो सर्व सत्य नही हो शक्ती है, इस वास्ते अन्य मतोंमे जो ज्ञानहै सो सर्व जैन मतमे है, परतु जैनमतका जो ज्ञानहै सो किसी मतमे सर्व नही है, इस वास्ते जैन मतके द्वादशागोकेही किंचित वचन लेके लोकोने मनकल्पित उसमे कुछ अधिक मिलाके मत रच

लीनैहै; हमारे अनुमानसेंतो यही सिद्द होता है.

प्र १४४—कोइ यूरोपियन विद्वान् ऐसे कहताहै कि बौद्धमतके पुस्तक जैनमतसे चढतेहै?

उ—जेकर श्लोक सख्यामे अधिक होवे अथवा गिनतिमें अधिक होवे अथवा कवितामें अधिक होवे, तवतो अधिकता कोइ माने तो हमारी कुछ हानि नहीहै, परंतु जेकर ऐसे मानता होवेके बौद्द पुस्तकोमे जैन पुस्तकोसें धर्मका स्वरूप अधिक कथन करा है, यह मानना बिलकुल भूल संयुक्त मालुम होताहै, क्योकि जैन पुस्तकोंमे जैसा धर्मका रूप और धर्म नीतिका स्वरूप कथन कराहै, वैसा सर्व दुनीयाके पुस्तकोमे नही है

प्र १४५—जैनके पुस्तक बहुत थोडे है, और बौधमतके पुस्तक बहुत है, इस वास्ते अधिकता है?

उ—सप्रति कालमे जो जैनमतके पुस्तकहै वे सर्व किसी जैनीनेभी नही देखेहै, तो यूरोपीयन विद्वान कहासे देखे, क्योकि पाटन और जे-

सलमेरमें ऐसे गुप्त भंडार पुस्तकोंके है कि वे किसी इंग्रेजनेंभी नही देखे हैं, तो फेर पूर्वोक्त अनुमान कैसें सत्य होवे

प्र १४६–जैनमतके पुस्तक जो जैनी रखते हैं सो किसीकों दिखाते नहीं है, इसका क्या कारण है ?

उ–कारणतो हमको यह मालुम होताहै कि मुसलमानोकी अमलदारीमे मुसलमानोंने बहुत जैनमतोपरि जुल्म गुजारा था, तिसमें सैकडो जैनमतके पुस्तकोंके भंडार वाल दीये थे, और हजारो जैनमतके मदिर तोडके मसजिदे बनवा दीनी थी कुतब दिल्ली अजमेर जुनागढके किलेमें प्रभास पाटणमें रादेर, भरूचमें इत्यादि बहुत स्थानोंमे जैनमदिर तोडके मसजिदो बनवाइ हुइ खडी है, तिस दिनके डरे हूए जैनि किसीकोंभी अपने पुस्तक नही दिखाते है, और गुप्त भंडारोंमे बध करके रख छोडेहै

प्र १४७–इस कालमे जो जैनी अपने पुस्तक किसीकों नही दिखातेहै, यह काम अच्छा

है वा नही?

उ—जो जैनी लोक अपने पुस्तक बहुत यत्नसें रखतेहै यहतो बहुत अच्छा काम करते हैं, परंतु जैसलमेरमें जो भंडारके आगे पथ्थरकी भीत चिनके भंडार बंध कर छोडा है, और कोइ उसकी खबर नही लेता है, क्या जानें वे पुस्तक मट्टी हो गयेहैंके शेष कुछ रह गयेहै, इस हेतुसें तो हम इस कालके जैन मतीयोंको बहुत नालायक समझते हैं

प्र १४८—क्या जैनो लोकोंके पास धन न होंहै, जिससें वे लोक अपने मतके अति उत्तम पुस्तकोंका उद्धार नही करवाते है?

उ—धनतो बहुतहै, परंतु जैनी लोकोंकी दो इंद्रिय बहुत जबरदस्त हो गइहै, इस वास्ते ज्ञान भंडारकी कोइभी चिंता नही करताहै

प्र १४९—वे दोनो इंद्रियो कौनसी है जो ज्ञानका उद्धार नही होने देती है?

उ—एकतो नाक और दूसरी जिव्हा, क्यों कि नाकके वास्ते अर्थात् अपनी ...के

वास्ते लाखो रूपइये लगाके जिन मंदिर वनवाने चले जातेहै, और जिव्हाके वास्ते खानेमे लाखों रूपइये खरच करतेहे, चूरमेआदिकके लडुयोंकी खवर लीये जातेहै, परंतु जीर्णज्ञमारके उद्धार करणेकी वाततो क्या जाने, स्वप्नमेंज्ञो करते होवेंगेके नही

प्र १५०—क्या जिन मदिर और साहम्मि वछ्ल करनेमें पापहै, जो आप निषेध करतेहो?

उ—जिन मदिर वनवानेका और साहाम्मिवछ्ल करनेका फलतो स्वर्ग और मोक्षकाहै, परतु जिनेश्वर देवनेतो ऐसे कहाकि जो धर्मक्षेत्र विगमता होवे तिसकी सार सन्नार पहिले करनी चाहिये, इस वास्ते इस कालमें ज्ञान न्नंमार विगमताहै पहिले तिसका उद्धार करना चाहिये जिन मदिरतो फेरन्नी वन सकतेहै, परतु जेकर पुस्तक जाते रहेगे तो फेर कोन वना सकेगा

प्र १५१—जिन मंदिर वनवाना और साहम्मिवछ्ल करना, किस रीतका करना चाहिये?

उ—जिस गामके लोक धनहीन होवें, जिन

मंदिर न वना सके, और जिन मार्गके ज्ञक्त होवे, तिस जगे अावश्य जिन मदिर कराना चाहिये, और श्रावकका पुत्र धनहीन होवे तिसको किसी का रुजगारमे लगाके तिसके कुटंबका पोषण होवे ऐसे करे, तथा जिस काममें सीदाता होवे तिसमें मदत करे. यह साहम्मिवछलहै, परतु यह न समझनाके हम किसी जगे जिन मदिर वनानेको और वनिये लोकोंके जिमावने रुप साहम्मिवछ्लका निषेध करतेहै, परतु नामदारीके वास्ते जिन मंदिर वनवानेमें अल्प फल कहते है, और इस गामके वनीयोने उस गामके वनियोंको जिमाया और उस गामवालोंने इस गाम के वनियोंकों जिमाया, परंतु साहम्मिकों साहाय्य करनेकी वुद्धिसें नही, तिसको हम साहमिवछल नही मानतेहै, कितु गधें खुरकनी मानतेहै.

प्र १५७–जैनमततो तुमारे कहनेसे हमको वहुत उत्तम मालुम होताहै, तो फेर यह मत वहुत क्यों नही फैलाहै?

उ –जैनमतके कायदे ऐसे कठिन है कि

तिन उपर अल्प सत्ववाले जिव वहुत नही चल
सक्तेहै गृहस्थका धर्म और साधुका धर्म वहुत
नियमोसें नियत्रितहै, और जैनमतका तत्व तो
वहुत जैन लोकभी नही जान सक्तेहै, तो अन्य-
मतवालोंको तो वहुतही समझना कठिनहै, वौद्ध
मतके गाविंदआचार्यनें भरूचमें जेनाचार्यसे च-
रचामे हार खाइ, पीछे जैनके तत्व जानने वास्ते
कपटसें जैनकी दीक्षा लीनी कितनेक जैनमतके
शास्त्र पढके फेर वौध वन गया, फेर जैनाचार्यों-
के साथ जैनमतक खंडन करनेमें कमर वाधके
रचा करी, फेरभी हारा, फेर जैनकी दीक्षा
नी, फेर हारा, इसीतरें कितनी वार जैनशास्त्र
, परतु तिनका तत्व न पाया, पिछली विरीया
पाया तो फेर वौध नही हुआ जैनमत स-
ना और पालना दोनो तरेसें कठिन हैं, इस
वहुत नही फैला है, किसी कालमे वहुत
ी होवेगा, क्या निषेध हैं, इसीतरें मीमा-
वार्त्तिककार कुमारिल भट्टने और किरणा
कर्त्ता उदयननेभी कपटसें जैन दीक्षा

लीनी, परंतु तत्व नही प्राप्त हुआ।

प्र १५३–जैनमतमे जो चौदहपूर्व कहे जाते हैं, वे कितनेक वडेथे आर तिनमें क्या क्या कथन था इसका संक्षेपसें स्वरूप कथन करो?

उ–इस प्रश्नका उत्तर अगले पत्रसें देख लेना

पूर्व नाम	पद सख्या	शाहीलिख नेमें कितनी	विषय क्याहै
उत्पाद पूर्व १	एक करोड पद १०००००००	१ एकहाथी जितने शाहीके ढेरसें लिखा जावे	सर्व द्रव्य और म यांकी उत्पत्तिका कथन करा है
आग्राय गापूर्व २	९६००००० छानवेलाख पद	२हाथीममाण शाहीमें एव सर्वत्र	सर्व द्रव्य और सर्व पर्याय और सर्व जीव विशेषाक ममाणका कथन है
र्यमवा र्व ३	सित्तरलाख पद ७०००००	८ हाथी ममाण	कर्म सहित और कर्म रहित सर्व जीवाका और सर्व अजीव पदार्थोके वीर्य अर्थात् शक्तिके स्वरूपका कथन है.
	साठलाख पद ६०००००	८ हाथी ममाण	जो लोकमें धर्मास्ति कायादि अस्तिरूप है और खर शृगादि नास्तिरूप है तिसकाकथन है अथवा सर्व वस्तु स्वरूप करके अस्तिरूप है और पररूप करके नास्तिरूप है ऐसा कथन है

ज्ञान प्रवाद पूर्व ५	एककरोड पद १००००००० एक पद न्यून.	१६ हाथी प्रमाण.	पांचो ज्ञान मति आदि तिनका महा विस्तारसें कथन है.
सत्य प्रवाद पूर्व ६	एककरोड पद १००००००६ पद अधिक	३२ हाथी प्रमाण .	सत्य सयम वचन इन तीनोका विस्तारसें कथन है
आत्मप्रवाद पूर्व ७	छव्वीसकरोड पद २६०००००००	६४ हाथी प्रमाण.	आत्मा जीव तिसका सातसौ ७०० नयके मतोंसे स्वरूप कथन करा है
कर्म्म प्रवाद पूर्व ८	एक करोड अस्सी हजार १००८००००	१२८ हाथी प्रमाण	ज्ञानावरणीयादि अष्ट कर्मका प्रकृति स्थिति अनुभावप्रदेशादिसें स्वरूपका कथनकराहै.
प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व ९	चोरासी लाख पद. ८४०००००	२५६ हाथी प्रमाण.	प्रत्याख्यान त्यागने योग्य वस्तुयोंका और त्यागका विस्तारसें कथन करा है,
विद्यानुप्रवाद पूर्व १०	एक करोड दस लाख पद ११००००००	५१२ हाथी प्रमाण	अनेक अतिशयवत चमत्कार करनेवाली अनेक विद्यायोंका कथन है,
अवन्ध्य पूर्व. ११	छव्वीस करोड पद २६०००००००	१०२४ हाथी प्रमाण	जिसमें ज्ञान, तप, संयमादिका शुभ फल और सर्व प्रमादादि पापोंका अ

			शुभ फल कथन करा है
माणायु पूर्व १२	एक करोड पचाश लाख पद १५००० ००	२०४८ हाथी प्रमाण	पांच इंद्रिय और मनबल, वचनबल, कायाबल और उच्छ्वास निःश्वास और आयु इन दशो प्राणका जहा विस्तारसें स्वरूप कथन करा है
क्रिया विशाल पूर्व १३	नव करोड पद ९०००००००	४०९६ हाथी प्रमाण शाहीसें लिखा जावे	जिसमे कायक्यादि क्रिया वा सयमक्रिया छदक्रियादि क्रियायोंका कथन है
लोक बिंदुसार पूर्व १४	साडेबारा करोड पद १२५००००००	८१९२ हाथी प्रमाण	लोकमें वा श्रुतज्ञान लोकमें अक्षरोपरि बिंदु समान सार सर्वोत्तम सर्वाक्षरोंके मिलाप जाननेकी लब्धिका हेतु जिसमें है

प्र १५४—जैनमतके पच परमेष्टिकी जगे प्राचीन और नवीन मत धारीयोनें अपनी अपनी बुद्धि अनुसारे लोकोंने अपने अपने मतमे किस रीतेसे कल्पना करीहै, और जैनी इस जगतकी व्यवस्था किस हेतुसें किस रीतोसें मानते है?

त्र –मतधारीयोने जो जनमतके पंच प-रमेष्टोकी जगे जूठी कल्पना खमी करी है, सो नीचले यन्त्रसे देख लेना.

जैनमत १	अर्हित१	सिद्ध २	आचार्य ३	उपाध्याय ४	साधु ५.
साख्य मत २	कपिल	०	आसुरी	विद्यापाठक	साख्य साधु
वैदिक मत ३	जैमनि	०	भट्टप्रभाकर	विद्यापाठक	०
नैयायिक मत ४	गौतम	एकईश्वर	आचार्य नैयायिक	न्याय पाठक	साधु
वेदात मत ५.	व्यास	एकब्रह्म	आचार्योस्ति	वेदात पाठक	परमहसादि
वैशेपिक मत ६	शिव	एकईश्वर	कणाद	पाठक	साधु
यहूदी मत ७	मूसा,	एकईश्वर	अनेक	पाठक	उपदेशक
इसाइ मत ८	ईशा	एकईश्वर	पथर सयस्यादि	पाठक	पादरी

मुसलमान मत ९.	महम्मद	एक ईश्वर	अनेक	पाठक	फकीर
शकर मत १०	शकर	एकब्रह्म	आनदागिरी आदि	शकरभाष्यादि पाठक	गिरिपुरि भारती आदि
रामानुज मत ११.	रामानुज	एक ईश्वर रामचद्र	अनेक	रामानुज मत पाठक	साधु वैश्नव
वलभ मत १२	वल्लभाचार्य	एक ईश्वर कृष्ण	अनेक	वल्लभ मत पाठक	तिस मतके साधु नही
कबीर मत १३	कबीर	एक ईश्वर	अनेक	तन्मत पाठक	गृहस्थ वा साधु
नानक मत १४	नानक	एक ईश्वर	अनेक	ग्रथ पाठक	उदासी साधु
दादूमत १५	दादू	एक ईश्वर	सुदर दासादि	तत् ग्रथ पाठक	दादू पथी साधु
गोरख मत १६	गोरख	एक ईश्वर	अनेक	तत् ग्रथ पाठक	कानफटे योगी
स्वामीनारायण १७	स्वामीनारायण	एक ईश्वर	स्त्री और परिग्रह धारी	तत् ग्रथ पाठक	रगे वस्त्रवाले धोले वस्त्रवाले

दयानदमत १८.	दया नद.	एक ईश्वर	अस्ति	तन्मत पाठक	साधु

इत्यादि इस तरे मतधारीयोंने पंच परमेष्टीकी जगे पाच २ वस्तु कल्पना करी है, इस वास्ते पंच परमेष्टीके विना अन्य कोइ सृष्टिका कर्त्ता सर्वज्ञ वीतराग ईश्वर नही है, नि'केवल लोकाको अज्ञान भ्रमसें सृष्टि कर्त्ताकि कल्पना उत्पन्न होती है, पूर्व पक्ष कोइ प्रश्न करे के जेकर सर्वज्ञ वीतराग ईश्वर जगतका कर्त्ता नहीहै, तो यह जगत अपने आप कैसे उत्पन्न हुआ, क्योंकि हम देखतेहै कर्त्ताके विना कुछभी उत्पन्न नही होताहै, जैसें घमीयालादि वस्तु. तिसका उत्तर–हे परीक्षको! तुमकों हमारा अभिप्राय यथार्थ मालुम पमता नही है, इस वास्ते तुम कर्त्ता ईश्वर कहतेहो, जो इस जगतमें वनाइ हुइ वस्तुहै, तिसका कर्त्ता तो हमभी मानतेहै, जैसें घट, पट, शराव, उदंचन, घमियाल, मकान, हाट, हवेली, संकल, जजीरादि परंतु आकाश, काल, स्वभाव, परमाणु, जीव इत्यादि

किसीकी रची हुइ नही है, क्योंकि सर्व विद्वानोका यह मतहैके जो वस्तु कार्यरूप उत्पन्न होतीहै तिसका उपादान कारण अवश्य होना चाहिये विना उपादानके कदापि कार्यकी उत्पत्ति नही होती है, जो कोइ विना उपादान कारणके वस्तुकी उत्पति मानता है, सो मूर्ख, प्रमाणका स्वरूप नही जानता है, तिसका कथन कोइ महा मूढ मानेगा, इस वास्ते आकाश १ आत्मा २ काल ३ परमाणु ४ इनका उपादान कारण कोइ नहीहै, इस वास्ते यें चारो वस्तु अनादि है, इनका कोइ रचनेवाला नही है, इस्से जो यह कहना है कि सर्व वस्तुयो ईश्वरने रचीहै सो मिथ्याहै, अव शेष वस्तु पृथ्वी १ पानी २ अग्नि ३ पवन ४ वनस्पति ५ चलने फिरने वाले जीव रहे है, तथा पृथ्वीका भेद नरक, स्वर्ग, सूर्य, चंद, ग्रह, नक्षत्र, तारादि है, ये सर्व जड चैतन्यके उपादानसें वने है, जे जीव और जड परमाणुओंके सयोगसे वस्तु वनीहै, वे ऊपर पृथ्वी आदि लिख आयेहै, ये पृथ्वी आदि वस्तु प्रवाह-

सें अनादि नित्यहै, और पर्याय रूप करके अनि-
त्यहै, और ये जड़ चैतन्य अनत स्वन्नाविक श-
क्तिवाले है, वे अनत शक्तिया अपने २ कालादि
निमित्ताके मिलनेसें प्रगट होतीहै, और इस ज-
गतमें जो रचना पीछे हूइहै, और जो हो रहीहै,
और जो होवेगी, सर्व पाच निमित्त उपादान का
रणोंसे होतीहै, वे कारण येहहै, काल १ स्वन्ना-
व २ नियति ३ कर्म ४ उद्यम ५, इन पाचोके
सिवाय अन्य कोइ इस जगतका कर्त्ता और नि-
यता ईश्वर किसी प्रमाणसें सिद्ध नही होताहै,
तिसकी सिद्धीका खरुन पूर्वे पहिले सब लिख
आएहै, जैसे एक वीजमे अनंत शक्तियाहै, वृक्षमे
जितने रंग विरगे मूल १ कंद २ स्कध ३ त्वचा ४
शाखा ५ प्रवाल ६ पत्र ७ पुष्प ८ फल ९ वीज
१० प्रमुख विचित्र रचना मालुम होतीहै, सो
सर्व वीजमे शक्ति रूपसे रहतीहै, जब कोइ वी-
जको जालके न्नस्म करे तब तिस विजके पर-
माणुयोमे पूर्वोक्त सर्व शक्तिया रहताहै, परंतु
बिना निमित्तके एकभी शक्ति प्रगट नही

जेकर बीजमें शक्तिया न मानीये तवतो गेहूके वीजसें आव और वबूल मनुष्य, पशु, पक्षी आदिको उत्पन्न होने चाहिये. इस वास्ते सर्व वस्तुयोंमे अपनी २ अनत शक्तियाहै जैसा २ निमित्त मिलताहै तैसी २ शक्ति वस्तुमें प्रगट होतीहै, जैसें वीज कोठिमें पमाहै तिसमें वृक्षके सर्व अवयवोंके होनेकी शक्तियाहै, परंतु बीजके काल विना अकुर नही हो सक्ताहै, कालतो वृष्टि ऋतुकाहै, परतु भूमि और जलके सयोग विना अंकुर नही हो सक्ताहै, काल भूमि जलतो मिलेहे परतु विना स्वभावके ककर वोवेतो अकुर नही होवेहै बीजका स्वभाव १ काल २ भूमि ३ जलादितो मिलेहै, परतु बीजमे जो तथा तथा भवन अर्थात् होनेवाली अनादि नियतिके विना वीज तैसा लवा चौमा अकुर निर्विघ्नसें नही दे सक्ताहै, जो निर्विघ्नपणे तथा तथा रूप कार्यको निष्पन्न करे सो नियति, और जेकर वनस्पतिके जीवोंने पूर्व जन्ममें ऐसे कर्म न करे होतेतो वनस्पतिमे उत्पन्न न होते, जेकर बोनेवाला न होवे

तथा बीज स्वय अपने न्नारीपणे करके पृथ्वीमें न पमेतो कदापि अकुर नत्पन्न न होवे, इस वास्ते वीजाकुरकी नत्पत्तिमें पाच कारणहै काल१ स्वन्नाव २ नियति ३ पूर्वकर्म ४ नद्यम ५ इन पाचोके सिवाय अन्य कोइ अंकुर नत्पन्न करनेवाला कोइ ईश्वर नही सिद्ध होताहै, तथा मनुष्य गर्न्नमे नत्पन्न होताहै तहान्नी पाच कारणसेही होताहै, गर्न्न धारणेके कालमेही गर्न्न रहै १, गर्न्न की जगाका स्वन्नाव गर्न्न धारणका होवै तोही गर्न्न धारण करे २, गर्न्नका तथा तथा निर्विघ्नपनेसे होना नियतिसेंहै ३, जीवोने पूर्व जन्ममें मनुष्य होनेके कर्म करेहै तोही मनुष्यपणे नत्पन्न होतेहै, ४ माता पिता और कर्मसे आकर्पण न होवेतो कदापि गर्न्न नत्पन्न न होवे, ५ इसीतरे जो वस्तु जगतमे नत्पन्न होतीहै सो इनही पाचो निमित्त कारणोसें और नपादान कारणोसे होती है, और पृथ्वी प्रवाहसें सदा रहेगी और पर्याय रूप करके तो सदा नाश और नत्पन्न होती रही है, क्योंकि सदा असंख्य जीव पृथ्वीपणेही नत्पन्न

होतेहै, और मरतेहै तिन जीवाके शरीरोंका पि-
ण्डही पृथ्वीहै जो कोइ प्रमाणवेत्ता ऐसे समझ-
ताहै के कार्य रूप होनेसें पृथ्वी एक दिनतो अ-
वश्य सर्वथा नाश होवेगी, घटवत्. उत्तर—जैसा
कार्य घटहै तैसा कार्य पृथ्वी नहीहै, क्योंकि घ
टमें घटपणे उत्पन्न होनेवाले नवीन परमाणु नही
आतेहै, और पृथ्वीमे तो सदा पृथ्वी शरीरवाले
जीव असख उत्पन्न होतेहै, और पूर्वले नाश हो-
तेहै तिन असख जीवाके शरीर मिलने और वि
छुरनेसे पृथ्वी तैसीही रहेगी जैसें नदीका पाणी
अगला २ चला जाता है, और नवीन नवीन आ
नेसें नदी वैसीही रहती है, इस वास्ते घटरूप कार्य
समान पृथ्वी नही है, इस वास्ते पृथ्वी सदाही
रहेगी और तिसके उपर जो रचना है, सो पूर्वोक्त
पाच कारणोंसें सदा होती रहेगी इस वास्ते
पृथ्वी अनादि अनत काल तक रहेगी, इस वास्ते
पृथ्वीका कर्त्ता ईश्वर नही है, और जो कितनेक
लोकें जीव मनुष्य १ पशु २ पृथ्वी ३, पवन ४,
वनस्पतिकों तथा चद्र, सूर्यकों देखके और मनु-

ष्य पशुयोके शरीरकी हड्डीयाकी रचना आखके पम्दे खोपरीके टुकमे नशा जालादि शरीरोंकी विचित्र रचना देखकें हेरान होतेंहै, जव कुछ आगा पीछा नही सूझताहै, तव हार कर यह कह देतेंहै, यह रचना ईश्वरके विना कोन कर सक्ता है, इस वास्ते ईश्वर कर्त्ता २ पुकारते हैं, परंतु जगत् कर्त्ता माननेसें ईश्वरका सत्यानाश कर देते है, सो नही देखतेंहै काणी हथनी एक पासेकी ही वेलमीया खातीहै, परतु हे भोले जीव जेकर तेने अष्ट कर्मके १४८ एकसौ अमतालीस भेद जाने होते, तो अपने विचारे ईश्वरकों काहेको जगत कर्त्ता रूप कलंक देके तिसके ईश्वरत्वकी हानी करता क्योंकि जो जो कल्पना भोले लोकोने ईश्वरमें करी है, सो सो सर्व कर्मद्वारा सिद्ध होती है, तिन कर्माका स्वरूप सक्षेप मात्र यहा लिखते हैं, जेकर विशेप करके कर्म स्वरूप जाननेकी इछा होवे तदा पट्कर्म ग्रथ १ कर्म प्रकृति प्राभृत २ पंचसंग्रह ३ शतक ४ प्रमुख ग्रथ देख लेने, प्रथम जैनमतमें कर्म किसेकों कहते

तिसका स्वरूप लिखते है.

जेसें तेलादिसे शरीर चोपमीने कोइ पुरुष नगरमें फिरे, तब तिसके शरीर ऊपर सूक्ष्म रज पमनेंसें तेलादिके सयोगसे परिणामातर होके मल रूप होके शरीरसें चिप जाती है, तेसेही जीवाके जीवहिंसा १ जुठ २ चोरी ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोन्न ए राग १० द्वेप ११ कलह १२ अन्यारूयान १३ पैशुन १४ परपरिवाद १५ रतिअरति १६ मायामृपा१७ मिथ्यादर्शन शल्य १८ रुप जो अत.करणके परिणाम है वे तेलादि चीकास समान है, तिनमे जो पुद्गल जमरुप मिलताहै, तिसकों वासना रूप सूक्ष्म कारमण शरीर कहतेहै, यह शरीर जीवके साथ प्रवाहसे अनादि सयोग सबंधवाला है, इस शरीरमें असख तरेंकी पाप पुण्य रूप कर्म प्रकृति समा रही है इस शरीरको जैनमतमें कर्म कर्म कहते है ओर साख्यमतवाले प्रकृति, ओर वेदाति माया, ओर नैयायिक वैशेपिक अदृष्ट कहते. कोइक मतवाले क्रियमाण सचित प्रारब्ध-

रूप भेद करते है, बौध लोक वासना कहते है, विना समजके लोक इन कर्मोको ईश्वरकी लीला कुदरत कहतेहै, परतु कोइ मतवाला इन कर्मोका यथार्थ स्वरूप नही जानता है, क्योंकि इनके मतमे कोइ सर्वज्ञ नही हुआ है, जो यथार्थ कर्मोका स्वरूप कथन करे; इस वास्ते लोक भ्रम अज्ञानके वश होकर अनेक मनमानी ऊतपटंग जगत कर्त्तादिककी कल्पना करके, अंधाधुंध पंथ चलाये जातेहै, इस वास्ते भव्य जीवाके जानने वास्ते आठ कर्मका किंचित् स्वरूप लिखते है. ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ वेदनीय ३ मोहनीय ४ आयु ५ नाम ६ गोत्र ७ अंतराय ८ इनमेसे प्रथम ज्ञानावरणीयके पाच भेदहै, मति ज्ञानावरणीय १ श्रुतज्ञानावरणीय २ अवधिज्ञानावरणीय ३ मनःपर्यायज्ञानावरणीय ४ केवलज्ञानावरणीय ५ तहा पाच इंद्रिय और छठा मन इन छहों द्वारा जो ज्ञान उत्पन्न होवे, तिसका नाम मतिज्ञान है तिस मतिज्ञानके तीनसौ छत्तीस ३३६ भेदहै. वे सर्व कर्मग्रंथकी

नने तिन सर्व ३३६ भेदाका आवरण करनेवा-
ला मतिज्ञानावरण कर्मका भेदहै, जिस जीवके
आवरण पतला हुआहै. तिस जीवकी वहुत बुद्धि
निर्मलहै, जैसें जैसें आवरणके पतलेपणेकी ता-
रतम्यताहै, तेसें तेसें जीवामे बुद्धिकी तारतम्य-
ताहै यद्यपि मतिज्ञान मतिज्ञानावरणके क्षयोप
शमसे होताहै, तोभी तिस क्षयोपशमके निमित्त
मस्तक, शिर, विशाल मस्तकमे भेज्जा, चरवी,
चोक्रास, मास, रुधिर, निरोग्य हृदय, दिल नि-
रुपद्रव, और सूठ, ब्राह्मी वच, घृत, दूध, शाकर,
प्रमुख अछी वस्तुका खानपानादिसे अधिक अ-
धिकतर मतिज्ञानावरणके क्षायोपशमके निमित्त
है, और शील संतोष मद्य व्रतादि करणी, और
पठन करानेवाला विद्यावान् गुरु, और देश काल
श्रद्धा, उत्साह, परिश्रमादि ये सर्व मतिज्ञानाव-
रणके क्षायोपशम होनेके कारणहै. जैसे जैसें जी
वाकों कारण मिलतेहै तैसी तैसी जीवांकी बुद्धि
होतीहै. इत्यादि विचित्र प्रकारसें मतिज्ञानावर-
णीका भेदहै. इति मतिज्ञानावरणी १. दूसरा

श्रुतज्ञानावरण श्रुतज्ञानका आवरण श्रुतज्ञान, तिसको कहतेहै, जो गुरु पासों सुनके ज्ञान होवे और जिसके बलसे अन्य जीवाकों कथन करा जावे, तिसके निमित्त पूर्वोक्त मति ज्ञानवाले जाननें, क्योंके ये दोनो ज्ञान एक साथही उत्पन्न होतेहै, परं इतना विशेषहै, मतिज्ञान वर्त्तमान विषयिक होता है, और श्रुतज्ञान त्रिकाल विषय होताहै, श्रुतज्ञानके चौदह १४ तथा वीस भेद२० है, तिनका स्वरुप कर्मग्रथसें जानना पठन पाठनादि जो अक्षरमय वस्तुका ज्ञानहै, सो सर्व श्रुतज्ञानहै, तिसका आवरण आछादन जो है, जिसकी तारतम्यतासे श्रुतज्ञान जीवाकों विचित्र प्रकारका होताहै, तिसका नाम श्रुतज्ञानावरणीय है. इसके क्षायोपशमके वेही निमित्तहै, जौनसें मतिज्ञानके है, इति श्रुतज्ञानावरण २ तीसरा अवधिज्ञानका आवरण अवधिज्ञानावरणीय ३. ऐसेंही मन.पर्यायज्ञानावरण ४ केवलज्ञानावरण ५, इन पाचों ज्ञानोमेसे पिछले तीन ज्ञान इस कालके जीवाकों नहीहै, सामग्री और

अज्ञावर्से इस वास्ते इनका स्वरूप नंदी आदि सिद्धांतोमें जानना. ये पाच भेद ज्ञानावरण कर्म केहै यह ज्ञानावरणकर्म जिन कर्त्तव्योंसे बाधता है, अर्थात् उत्पन्न करके अपने पाचों ज्ञान शक्तियाका आवरण कर्ता है सो येहहै, मति, श्रुत प्र मुख पाच ज्ञानकी १ तथा ज्ञानवतकी २ तथा ज्ञानोपकरण पुस्तकादिकी ३ प्रत्यनीकता अर्थात् अनिष्टपणा प्रतिकुलपणा करे, जैसे ज्ञान और ज्ञानवतका बुरा होवे तैसे करे १, जिस पासों पढा होवे तिस गुरुका नाम न बतावे, तथा जानी हूइ वस्तुकों अजानी कहे २, ज्ञानवत तथा ज्ञानोपकरणका अग्निशस्त्रादिकसें नास करे ३, तथा ज्ञानवत ऊपर तथा ज्ञानोपकरण ऊपर प्रद्वेष अंतरग अरुची मत्सर ईर्ष्या करे ४, पढनेवालोंको अन्न वस्त्र वस्ती देनेका निषेध करें, पढनेवालोंको अन्य काममें लगावे, वातोंमे लगावे, पठन विछेद करे ५, ज्ञानवतकी अति अवज्ञा करे, यह हीन जाति वालाहै, इत्यादि मर्म प्रगट करनेके वचन बोले, कलंक देवे, प्राणात कष्ट देवे, तथा आचार्य

उपाध्यायकी अविनय मत्सर करे, अकालमे स्वाध्याय करे, योगोपधान रहित शास्त्र पढे, अस्वाध्यायमें स्वाध्याय करे, ज्ञानके उपकरण पास हूया दिसा मात्रा करे, ज्ञानोपकरणको पग लगावे, ज्ञानोपकरण सहित मैथुन करे, ज्ञानोपकरणको थूंक लगावे ज्ञानके द्रव्यका नाश करे, नाश करतेको मना करे, इन कामोसे ज्ञानावरणीय पंच प्रकारका कर्म बांधे, तिसके उदय क्षयोपशमसें नाना प्रकारकी बुद्धिवाले जीव होते महाव्रत संयम तपसें ज्ञानावरणीय कर्म क्षय करे, तब केवलज्ञानी सर्व वस्तुका जाननें वाला होवें, इति प्रथम ज्ञानावरणी कर्मका संक्षेप मात्र स्वरूप. १

अथ दूसरा दर्शनावरणीय कर्म तिसके नव ए भेदहै चक्षुदर्शनावरण १ अचक्षुदर्शनावरण २ अवधिदर्शनावरण ३ केवलदर्शनावरण ४ निद्रा ५ निद्रानिद्रा ६ प्रचला ७ प्रचला प्रचला ८ स्त्यानर्द्धी ए अवे इनका स्वरुप लिखतेंहै. सामान्य रूप करके अर्थात् विशेप रहित वस्तुके जाननेकी जो आत्माकी शक्तिहै तिसको दर्शन कहते है.

नेत्राकी शक्तिकों आवरण करे सो चक्षुदर्शनावरणीय कर्मका भेदहै, इसके क्षयोपशमकी विचित्रतासें आखवाले जोवोंको आखद्वारा विचित्र तरेंकी दृष्टि प्रवर्त्ते है, इसके क्षयोपशम होनेमें विचित्र प्रकारके निमित्त है, इति चक्षुदर्शनावरणीय १ नेत्र वर्जके शेष चारों इंडियोंकों अचक्षु दर्शन कहते हैं, तिनके सुननें, सूंघने, रस लेने, स्पर्श पिछाननेका जो सामान्य ज्ञानहै सो अचक्षु दर्शनहै, चारो इंडियोंकी शक्तिका आछादन करने वाला जो कर्म है तिसको अचक्षु दर्शन कहते है, इसके क्षयोपशम होनेमें अंतरंग वहिरंग विचित्र प्रकारके निमित्तहै, तिन निमित्तोंद्वारा इस कर्मका क्षय उपशम जैसा जैसा जीवाके होता है तैसी तैसी जोवोंको चार इंडियकी स्व स्व विषयमें शक्ति प्रगट होती है, इति अचक्षुदर्शनावरणी २ अवधि दर्शनावरणीय, और केवलदर्शनावरणीयका स्वरूप शास्त्रसें देख लेनां, क्योंकि सामग्रीके अभावसें ये दोनो दर्शन इस कालक्षेत्रके जीवाकों नही है, एवं दर्शनावरणीयके चार

भेद हुए ४. पांचमा भेद निद्रा जिसके उदयसें सुखे जागे सो निद्रा १ जो वहुत हलाने चलानेसें जागे सो निद्रा निद्रा २ जो वैठेकों नींद आवे सो प्रचला ३ जो चलतेकों आवे सो प्रचला प्रचला ४ जो नींदमे उठके अनेक काम करे नींदमे शरीरमें वल वहुत होवे है, तिसका नाम स्त्यानर्द्धी निद्राहे ५ पाच इंद्रियाकें ज्ञानमे हानि करती है, इस वास्ते दर्शनावरणीयकी प्रकृति है, एव ए भेद दर्शनावरणीय कर्मके हुए, इस कर्मके वाधनेके हेतु ज्ञानावरणीयकी तरे जानने, परं ज्ञानकी जगे दर्शन पद कहना, दर्शन चक्षु अचक्षु आदि, दर्शनी साधु आदि जीव, तिनकी पाच इंद्रियाका वुरा चिते, नाश करे अथवा सम्मति तत्वार्थ द्वादशार नयचक्रवाल तर्कादि दर्शन प्रभावक शास्त्रके पुस्तक तिनका प्रत्यनीकपणादि करे तो दर्शनावरणीय कर्मका वध करे, इति दूसरो कर्म २

अथ तीसरा वेदनीय कर्म तिसकी दो प्रकृतिहे, साता वेदनीय १ असाता वेदनीय

साता वेदनीयसे शरीरकों अपने निमित्तद्वारा सुख होताहै; और असाता वेदनीयके उदयसें दुःख प्राप्त होता है एवं दो भेदोंके बाधनेके कारण प्रथम साता वेदनीयके बंध करणेके कारण गुरु अर्थात् अपने माता पिता धर्माचार्य इनकी भक्ति सेवा करे १ क्षमा अपने सामर्थके हुए दूसरायोका अपराध सहन करना २ परजीवाकों दुखी देखके तिनके दुःख मेटनेकी वाछा करे ३ पचमहाव्रत अनुव्रत निर्दूपण पाले ४ दश विध चक्रवाल समाचारी सयम योग पालनेसें ५ क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति अरति, शोक, भय, जुगुप्सा इनके उदय आया इनको निष्फल करे ६ सुपात्र दान, अभय दान, देता सर्व जीवा उपर उपकार करे, सर्व जीवाका हित चिंतन करे ७ धर्ममे स्थिर रहे, मरणात कष्टकेभी आये, धर्मसें चलायमान न होवे, बाल वृद्ध रोगीकी वैयावृत्त करता धर्ममें प्रवर्त्तता सहाय करे, चैत्य जिन प्रतिमाकी अभी भक्ति करता सराग सयम पाले; देशव्रतीपणा पाले, अकाम निर्जरा अज्ञान तप करें, सौच्य स

त्यादि सुदर अंत:करणकी वृत्ति प्रवर्त्तावे तो साता वेदनीय कर्म बांधे, इति साता वेदनीयके बंध हेतु कहे १ इनसें विपर्यय प्रवर्त्ते तो असाता वेदनीय बांधे २ इति वेदनीय कर्म स्वरूप ३.

अथ चोथा मोहनीय कर्म तिसके अठावीस भेद हैं, अनंतानुबंधी क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ अप्रत्याख्यान क्रोध ५ मान ६ माया ७ लोभ ८ प्रत्याख्यानावरण क्रोध ९ मान १० माया ११ लोभ १२ संज्वलका क्रोध १३ मान १४ माया १५ लोभ १६ हास्य १७ रति १८ अरति १९ शोक २० भय २१ जुगुप्सा २२ स्त्रीवेद २३ पुरुषवेद २४ नपुंसकवेद २५ सम्यक्त्व मोहनीय २६ मिश्र मोहनीय २७ मिथ्यात्व मोहनीय २८ अथ इनका स्वरूप लिखतेहैं; प्रथम अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ जा तक जीवे ता तक रहे, हटे नही तिनमेसें अनंतानुबंधी क्रोध तो ऐसाकि जाव जीव सुधी क्रोध न छोडे, अपराधी कितनो आधीनगी करे तोभी क्रोध न छोडे, यह क्रोध ऐसाहै जेसे पर्वतका फटना फेर कदापि न

मान पत्थरके स्तंभ समान किंचित् मात्रभी न नमे, माया कठिन वासकी जड समान सूधी न होवे, लोभ कृमिके रग समान फेर उतरे नही. ये चारों जिसके उदयमें होवे सो जीव मरके नरकमें जाता है, और इस कषायके उदयमें जीवाकों सच्चे देवगुरु धर्मकी श्रद्धा रूप सम्यक्त नही होता है, ४ दूसरा अप्रत्याख्यान कषाय तिसकी स्थिति एक वर्षकी है एक वर्ष तक क्रोध मान माया लोभ रहै तिनमें क्रोधका स्वरूप पृथ्वीके रेखा फाटने समान बडे यतनसें मिले, मान हाडके स्तंभ समान मुसकलसे नमे, माया मिंढेके सींगके वल समान सिधा कठनतासें होवे, लोभ नगरकी मोरीके कीचडके दाग समान, इस कषायके उदयसें देश व्रतीपणा न आवे और मरके पशु तीर्यंचकी गतिमे जावे ८ तीसरी प्रत्याख्यानावरण कषाय तिसकी स्थिति चार मासकी है क्रोध वालुको रेखा समान, मान काष्टके स्तंभ समान, माया बैलके मूत्र समान वांकी, लोभ गाडीके खंजन समान, इसके उदयसे शुध साधु

नही होताहै ऐसा कषायवाला मरके मनुष्य हो-
ताहै १२ चौथी संज्वलनकी कषाय, तिसकी
स्थिति एक पक्षकी क्रोध पाणीकी लकीर समा
न, मान वासकी शीखके स्तन्न समान, माया,
वासकी छिल्लक समान, लोन्न हलदीके रग स-
मान, इसके उदयसें वीतराग अवस्था नही होती
है इस कषायवाला जीव मरके स्वर्गमे जाताहै
१६ जिसके उदयसे हासी आवे सो हास्य प्रकृति
१७ जिसके उदयसे चित्तमें निमित्त निर्निमितसे
रति अतरमे खुशी होवे सो रति १८ जिसके उ-
दयसे चित्तमे सनिमित्त निर्निमित्तसे दिलगोरी
उदासी उत्पन्न होवें सो अरति प्रकृति १९ जिस-
के उदयसे इष्ट विजोगादिसे चित्तमे उद्वेग उत्पन्न
होवे सो शोक मोहनीय प्रकृति २० जिसके उ-
दयसें सात प्रकारका न्नय उत्पन्न होवे सो न्नय
मोहनीय २१ जिसके उदयसे मलीन वस्तु देखी
सूग उपजे सो जुगुप्सा मोहनीय २२ जिसके
उदयसें स्त्रीके साथ विषय सेवन करनेकी इच्छा
उत्पन्न होवे, सो पुरुषवेद मोहनीय २३

उदयसें पुरुषके साथ विषय सेवनेकी इच्छा उत्पन्न होवे, सो स्त्री वेद मोहनीय २४ जिसके उदयसें स्त्री पुरुष दोनोंके साथ विषय सेवनेकी अभिला षा उत्पन्न होवे, सो नपुसकवेद मोहनीय, २५ जिसके उदयसे शुद्ध देव गुरु, धर्मकी श्रद्धा न होवे सो मिथ्यात्व मोहनीय २६ जिसके उदयसे शुद्ध देव गुरु धर्म अर्थात् जैनमतके ऊपर राग भी न होवे, और द्वेषभी न होवे, अन्य मतकीभी श्रद्धा न होवे सो मिश्र मोहनीय २७ जिसके उ- दयसें शुद्ध देव गुरु धर्मकी श्रद्धातो होवे परतु सम्यक्मे अतिचार लगावे सो सम्यक्त मोहनीय २८ इन २८ प्रकृतियोंमे आदिकी २५ पच्चीस प्र- कृतिको चारित्र मोहनीय कहतेहै, और ऊपली तीन प्रकृतियोंकों दर्शनमोहनीय कहते है एव २८ प्रकृति रूप मोहनीय कर्म चौथा है, अथ मोहनीय कर्मके बध होनेके हेतु लिखते है प्रथम मिथ्या त्व मोहनीयके बध हेतु उन्मार्ग अर्थात् जे ससा रके हेतु हिसादिक आश्रव पापकर्म, तिनकों मोक्ष कहे तथा एकात नयसें ~ केवल क्रिया क-

ष्टानुष्टानसें मोक्ष प्ररूपे तथा एकांत नयसें निःकेवल ज्ञान मात्रसें मोक्ष कहे ऐसेही एकले विनयादिकसें मोक्ष कहे १ मार्ग अर्थात् अर्हंत न्नाषित सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्ररूप मोक्ष मार्ग तिसमे प्रवर्त्तनेवाले जीवकों कुहेतु, कुयुक्ति, करके पूर्वोक्त मार्गसे भ्रष्ट करे २ देवद्रव्य ज्ञान द्रव्यादिक तिनमें जो न्नगवानके मंदिर प्रतिमादिके काम आवे काष्ट, पाषाण, मृत्तीकादिक तथा तिस देहरादिके निमित्त करा हुआ रूपा, सोनादि धन तिसका हरण करे, देहराकी न्नूमि प्रमुखको अपनी कर लेवे, देवकी वस्तुसें व्यापारकरके अपनी आजीवीका करे तथा देवद्रव्यका नाश करे, शक्तिके हुए देवद्रव्यके नाश करनेवालेको हटावे नही, ये पूर्वोक्त काम करनेवाला मिथ्यादृष्टि होताहै, सो मिथ्यात्व मोहनीय कर्मका बंध करता है, तथा दूसरा हेतु तीर्थंकर केवलीके अवर्णवाद बोले, निंदा करे तथा न्नले साधुकी तथा जिन प्रतिमाकी निंदा करे तथा चतुर्विध संघ साधु साधवी श्रावक श्राविकाका समुदाय

की श्रुतज्ञानकी निंदा अवज्ञा होलना करता हुआ, और जिन शासनका उड्डाह करता हुआ अयश करता कराता हुआ निकाचित महा मिथ्यात्व मोहनीय कर्म बाधे इति दर्शन मोहनीयके बध हेतु ॥ अथ चारित्रमोहनीय कर्मके बध हेतु लिखते है चारित्र मोहनीय कर्म दो प्रकारका है, कषाय चारित्र मोहनीय १ नोकषाय चारित्र मोहनीय २ तिनमेंसे कषाय चारित्र मोहनीयके १६ सोला भेदहे, तिनके बध हेतु लिखते है अनतानुबधी क्रोध, मान, माया, लोभमे प्रवर्त्ते तो सोलाही प्रकारका कषाय मोहनीय कर्म बाधे अप्रत्याख्यानमे वर्त्ते तो उपरध्या बारा कषाय बाधे प्रत्याख्यानमें प्रवर्त्ते तो उपरध्या आठ कषाय बाधे, संज्वलनमें प्रवर्त्ते तो चार संज्वलनका कषाय बाधे. इति कषाय चारित्र मोहनीयके बध हेतु नोकषाय हास्यादि तिनके बध हेतु यह है, प्रथम हास्य हासी करे, भाण्ड कुचेष्टा करे, बहुत बोले तो हास्य मोहनीय कर्म बाधे १ देश देखनेके रसर्से, विचित्र क्रीडाके रससें, अति वाचाल हो-

नेसें कामण मोहन टूणा वगेरे करे, कुतुहल करे तो रति मोहनीय कर्म बाधे १ राज्य न्नेद करे, नवीन राजा स्थापन करे, परस्पर लमाइ करावे, दूसरायोंकों अरति उच्चाट उत्पन्न करे, अशुन्न काम करने करानेमें उत्साह करे, और शुन्न कामके उत्साहको न्नाजे, निष्कारण आर्त्तध्यान करे तो अरति मोहनीय कर्म बाधे ३ परजीवाकों त्रास देवे तो, निर्दय परिणामी न्नय मोहनीय कर्म बाधे ४ परकों शोक चिंता संताप उपजावे, तपावे तो शोक मोहनीय कर्म बाधे ५ धर्मी साधु जनोंकी निंदा करे, साधुका मलमलीन गात्र देखि निंदा करे तो जुगुप्सा मोहनीय कर्म बाधे ६ शब्द रूप, रस, गंध, स्पर्शरूप, मनगती विषयमे अत्यताशक्त होवे, दूसरेकी इर्षा करे, माया मृषा सेवे, कुटिल परिणामी होवे, पर स्त्रीसें न्नोग करे तो जीव स्त्रोवेद मोहनीय कर्म बाधे ७ सरल होवे, अपनी स्त्रीसे ऊपरांत संतोषी होवे, इर्षा रहित मंद कषायवाला जीव पुरुषवेद बाधे८ तीव्र कषायवाला, दर्शनी दूसरे मतवालोंका शील

भ्रग करे, तीव्र विषयी होवे, पशुकी घात करे, मिथ्यादृष्टी जीव नपुंसकवेद बांधे ए संयमीके दूषण दिखावे, असाधुके गुण बोले, कषायकी उदीरणा करता हुआ जीव चारित्र मोहनीय कर्म समुच्चय बांधे. इति मोहनीय कर्म बंध हेतु यह मोहनीय कर्म मदिरेके नशेकी तेरें अपने स्वरूपसें भ्रष्ट कर देताहे इति मोहनीय कर्मका स्वरूप संक्षेप मात्रसें पुरा हुआ ४

अथ पांचमा आयुकर्म, तिसकी चार प्रकृति जिनके उदयसें नरक १ तिर्यंच २ मनुष्य ३ देव ४ जवमें खैंचा हुआ जीव जावे है, जैसें चमकपाषाण लोहकों आकर्षण करता है, तिसका नाम आयुकर्म नरकायु १ तिर्यंचायु २ मनुष्यायु ३ देवायु ४ प्रथम नरकायुके बंध हेतु कहतेंहे महारंज चक्रवर्त्ती प्रमुखकी ऋद्धि जोगनेमे महा मूर्छा परिग्रह सहित, व्रत रहित अनंतानुबंधी कषायोदयवान् पंचेंद्रिय जीवकी हिंसा निशंक होकर करे, मदिरा पीवे, मांस खावे, चौरी करे, जूया खेले, परस्त्री और वेश्या गमन करे, शिकार

मारे, कृतघ्नी होवे, विश्वासघाती, मित्र द्रोही, उत्सूत्र प्ररूपे, मिथ्यामतकी महिमा वढावे, कृश्न नील, कापोत लेश्यासें अशुन्न परिणामवाला जीव नरकायु बांधे १ तिर्यंचकी आयुके वंध हेतु यह है गूढ हृदयवाला, अर्थात् जिसके कपटकी किसीको खवर न परुे, धूर्त्त होवे, मुखसें मीठा वोले, हृदयमे कतरणी रखे, जूठे दूषण प्रकाशे, आर्त्तध्यानी इस लोकके अर्थे तप क्रिया करे, अपनी पूजा महिमाके नष्ट होनेके न्नयसें कुकर्म करके गुरुआदिकके आगे प्रकाशे नहीं, जूठ वोले, कमती देवे, अधिक लेवे, गुणवानकी इर्षा करे, आर्त्तध्यानी कृश्नादि तीन मध्यम लेश्यावाला जीव तिर्यंच गतिका आयु वांधे इति तिर्यंचायु २ अथ मनुष्यायुके वंधहेतु मिथ्यात्व कषायका स्वन्नावेही मंदोदयवाला प्रकृतिका न्नद्रिक धूल रेखा समान कषायोदयवाला सुपात्र कुपात्रकी परीक्षा विना विशेष यश कीर्त्तिकी वाछा रहित दान देवे, स्वन्नावे दान देनेकी तीव्र रुचि होवे, क्षमा, आर्जव, मार्दव, दया, सत्य शौचादिक

मे वर्त्ते, सुसबोध्य होवे, देव गुरुका पूजक, पूजा-
प्रिय कापोत लेश्याके परिणामवाला मनुष्य ति-
र्यंचादि मनुष्यायु बाधे ३ अथ देव आयु अविरति
सम्यगदृष्टि मनुष्य तीर्यंच देवताका आयु बाधे,
सुमित्रके सयोगसें धर्मकी रुचिवाला देशविरति
सरागसयमी देवायु बाधे, बालतप अर्थात् दु ख-
गर्भित, मोहगर्भित वैराग्य करके दुष्कर कष्ट प-
चाग्नि साधन रस परित्यागसे, अनेक प्रकारका
अज्ञान तप करनेसें निदान सहित अत्यत रोष
तथा अहंकारसें तप करे, असुरादि देवताका आयु
बाधे तथा अकाम निर्जरा अजाणपणे भूख, तृषा,
शीत, उष्ण रोगादि कष्ट सहनेसे स्त्री अन मिलते
शील पाले, विषयकी प्राप्तिके अभावसें विषय न
सेंवनेसें इत्यादि अकाम निर्ज्जरासे तथा बाल म-
रण अर्थात् जलमें डूब मरे, अग्निसे जल मरे,
झंपापातसें मरे, शुभ परिणाम किंचितवाला तो
व्यंतर देवताका आयु बाधे, आचार्यादिककी अ-
वज्ञा करे तो, किल्बिष देवताका आयु बाधे, तथा
मिथ्यादृष्टीके गुणाको प्रशसा करे, महिमा बढा

वे, अज्ञान तप करे, और अत्यत क्रोधी होवे तो, परमाधार्मिकका आयु बाधे. इति देवायुके बधहेतु यह आयु कर्म हमिके बंधन समान है इसके उदयसें चारों गतके जीव जीवते है, और जब आयु पूर्ण होजाता है तब कोइभी तिसको नही जीवा सक्ता है, जेकर आयुकर्म विना जीव जीवे तो मतधारीयोंके अवतार पेगंबर क्यों मरते ? जितनी आयु पूर्व जन्ममे जीव बाधके आया है तिससें एक क्षण मात्रभी कोइ अधिक नही जीव सक्ता है, और न किसीको जीवा सक्ता है मतधारी जो कहते है हमारे अवतारादिकने अमुक अमुकको फिर जीवता करा, यह बाते महा मिथ्याहै, क्योंकि जेकर उनमें ऐसी शक्ति होतीतो आप क्यो मर गये ? सदा क्यो न जीते रहे ? ईशा महम्मदादि जेकर आज तक जीते रहतेतो हम जानतें ये सच्चे परमेश्वरकी तर्फसें उपदेश करने आये है हम सब उनके मतमें हो जाते, मतधारीयोंकों मेहनत न करनी पडती, जब साधारण मनुष्योंके समान मर गये तब क्योंकर शक्तिमान

हो सक्तेंहै १ ये सर्व जूगे वातोंकी अणघन्न गप्पे जगली गुरुयोने जगलीपणेसे मारीहै, इस वास्ते सर्व मिथ्याहै इति आयु कर्म पचमा

अथ छठा नाम कर्म, तिसका स्वरूप लिखतेंहै तिसके ए३ तिरानवे नेदहै नरकगति नाम कर्म १ तिर्यच गति नाम २ मनुष्य गति नाम ३ देवगति नाम ४ एकेंडिय जाति १ द्वींडिय जाति२ तीनेंडिय जाति ३ चार इडिय जाति ४ पचेंडिय जाति ५ एव ए ऊदारिक शरीर १० वैक्रिय शरीर ११ आहारिक शरीर १२ तैजस शरीर १३ कार्मण शरीर १४ ऊदारिकागोपाग १५ वैक्रियागोपाग १६ आहारिकागोपाग १७ ऊदारिकवधन १८ वैक्रिय वधन १ए आहारिक वधन २० तैजस वंधन २१ कार्मण वधन २२ ऊदारिक सघातन २३ वैक्रिय सघातन २४ आहारिक सघातन २५ तैजस संघातन २६ कार्मण सघातन २७ वज्र ऋषन्न नराच सहनन २८ ऋषन्न नराच सहनन २ए नराच सहनन ३० अर्द्ध नराच सहनन ३१ कीलिका संहनन ३२ छेवर्त्त सहनन ३३ सम च

तुरस्त्र संस्थान ३४ निग्रोध परिमंम्ल संस्थान ३५ सादिया संस्थान ३६ कुब्ज संस्थान ३७ वामन संस्थान ३८ हुन्डक संस्थान ३९ कृश्न वर्ण ४० नील वर्ण ४१ रक्त वर्ण ४२ पीत वर्ण ४३ शुक्ल वर्ण ४४ सुगंध ४५ दुर्गंध ४६ तिक्त रस ४७ कटुक रस ४८ कषाय रस ४९ आम्ल रस ५० मधुर रस ५१ कर्कश स्पर्श ५२ मृदु स्पर्श ५३ हलका ५४ भारी ५५ शीत स्पर्श ५६ उश्न स्पर्श ५७ स्निग्ध स्पर्श ५८ रुक्ष स्पर्श ५९ नरकानुपूर्वी ६० तिर्यचानुपूर्वी ६१ मनुष्यानुपूर्वी ६२ देवानुपूर्वी शुभविहायगति ६४ अशुभविहायगति ६५ परघात नाम ६६ उत्स्वास ६७ आतप ६८ उद्योत नाम ६९ अगुरु लघु ७० तीर्थकर नाम ७१ निर्माण७२ उपघात नाम ७३ त्रसनाम ७४ बादर नाम ७५ पर्याप्त नाम ७६ प्रत्येकनाम ७७ स्थिर नाम ७८ शुभ नाम ७९ सुभग नाम ८० सुस्वर नाम ८१ आदेय नाम ८२ यशकीर्ति नाम ८३ स्थावर नाम सूक्ष्म नाम ८५ अपर्याप्त नाम ८६ साधारण नाम ८७ अस्थिर नाम ८८ अशुभ नाम ८९ दुर्भग

नाम ९० दुस्वर नाम ९१ अनादेय नाम ९२ अ
यश नाम ९३ ये तिरानवे भेद नाम कर्मके है
अब इनका स्वरूप लिखतेहैं गतिनाम कर्म जिस
कर्मके उदयसे जीव नरक १ तिर्यंच २ मनुष्य ३
देवताकी गति पर्याय पावें, नरकादि नाम कह-
नेमे आवे, और जीव मरे तब जिस गतिका ग-
तिनामकर्म, आयुकर्म मुख्यपणे और गतिनाम
कर्म सहचारी होवे हैं, तब जीवकों आकर्षण क
रके ले जातेहै, तब वो जीव तिस गति नाम और
आयु कर्मके वश हुआ थका जहां उत्पन्न होना
होवे तिस स्थानमें पहुचेहै जैसें मोरेवाली सूइ-
कों चमक पाषाण आकर्षण कर्त्ताहै और सूइ च
मक पाषाणकी तर्फ जाती है, मोरान्नी सूइके
साथही जाताहै, इस तरे नरकादि गतियोंका स्थान
चमक पाषाण समान है, आयु कर्म और गतिना
म कर्म लोहकी सूइ समान है, और जीव मोरे
समान है बीचमें पोया हुआहै, इस वास्ते परभ-
वमे जीवको आयु और गतिनाम कर्म ले जातेहै,
जैसा ? गतिनाम कर्मका जीवाने बंध करा है,

शुन्न वा अशुन्न तेसी गतिमें जीव तिस कर्मके नुदयसें जा रहता है, इस वास्ते जो अज्ञानी-योने कल्पना कर रक्खो है कि पापी जीवकों यम और धर्मी जोवको स्वर्गके दूत मरा पीछे ले जा तेहै तथा जवराइल फिरस्ता जीवाकों ले जाता है, सो सर्व मिथ्या कल्पना है, क्योंकि जब यम और स्वर्गीय दूत फिरस्ते मरते होगे, तब तिन-कों कौन ले जाता होवेंगा, और जीवतो जगतमें एक साथ अनते मरते और जन्मते, तिन सबके लेजाने वास्ते इतने यम कहासे आते होवेंगे, और इतने फिरस्ते कहा रहते होवेंगे १ और जीव इस स्थूल शरीरसे निकला पीछे किसीकेन्नी हाथमें नही आताहै, इस वास्ते पूर्वोक्त कल्पना जिनोंने सर्वज्ञका शास्त्र नही सुना है तिन अज्ञानीयोंने करीहै इस वास्ते मुख्य आयुकर्म और गतिनाम कर्मके नुदयमेंही जीव परन्नवमे जाताहै इति ग तिनाम कर्म ४ अथ जातिनाम कर्मका स्वरूप लिखते है. जिसके नुदयसें जीव पृथ्वी, पाणी, अग्नि, पवन, वनस्पतिरूप एकेंद्रिय, स्पर्शेंद्रियवा

ले जीव उत्पन्न होतेहै, सो एकेंद्रिय जातिनाम कर्म १ जिसके उदयसें दोइंद्रियवाले कृम्यादिपणे उत्पन्न होवे, सो द्वींद्रिय जातिनाम कर्म ७ एवं तीनेंद्रि कीमीआदि, चतुरिंद्रिय भ्रमरादि, पचेंद्रिय नरक पचेंद्रिय पशु गोमहिष्यादि मनुष्य देवतापणे उत्पन्न होवे, सो पचेंद्रिय जातिनाम कर्म. एव सर्व ए उदारिक शरीर अर्थात् एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, पचेंद्रिय, तिर्यच मनुष्यके शरीर पावनेको तथा ऊदारीक शरीरपणे परिणामकी शक्ति, तिसका नाम ऊदारिक शरीर नाम कर्म १० जिसकी शक्तिसे नारकी देवताका शरीर पावे, जिससें मन इछित रूप वणावे तथा वैक्रिय शरीरपणे पुद्गल परिणामनेकी शक्ति सौ वैक्रिय शरीरनाम कर्म ११ एव आहारिक लब्धी वालेकें शरीरपणे परिणामावे १२ तैजस शरीर अंदर शरीरमें उश्नता, आहार पचावनेकी शक्तिरूप, सो तेजस नाम कर्म १३ जिसकी शक्तिसे कर्मवर्गणाको अपने अपने कर्म प्रकृतिके परिणामपणे परिणामावे सो कार्मण शरीर नाम कर्म

१४ दो वाहु २ दो साथल ४ पीठ ५ मस्तक ६ उरगती ७ उदर पेट ८ ये आठ अंग और अगोके साथ लगा हुआ, जैसे हाथसें लगी अगुली साथलसें लगा जानु, गोरा आदि इनका नाम उपाग है, शेष अगुलीके पर्व रेखा रोम नखादि प्रमुख अगोपांगहै, जिसके उदयसें ये अंगोपाग पावे और इनपणे नवीन पुद्गल परिणमावे ऐसी जो कर्मकी शक्ति तिसका नाम उपाग नाम कर्महै उदारीकोपाग १५ वैक्रियोपाग, १६ आहारिकोपाग, १७ इति उपाग नामकर्म ॥ पूर्वे वाध्या हुआ उदारिक शरीरादि पाच प्रकृति और इन पाचोके नवीन वंध होतेको पिछले साथ मेलकरके वधावे जैसे राल लाखादि दो वस्तुयोकों मिला देते है, तैसेही जो पूर्वापर कर्मको संयोग करे, सो वधन नाम कर्म शरीरोंके समान पाच प्रकारका है. उदारिक वंधन वैक्रियबंधन इत्यादि एवं, ७२ प्रकृति हुइ पाच शरीरके योग्य विखरे हुए पुद्गलाको एकठे करे, पीछे वंधन नामकर्म वध करे, तिस एकठे करणेवाली कर्म प्रकृतिका नाम सघातन नामक

र्म है, सो पाच प्रकारका है, उदारिक संघातन, वैक्रिय सघातन इत्यादि एव, २७ सत्ताइस प्रकृति हुइ, अथ उदारिक शरीरपणे जो सात धातु परिणामी है तिनमें हाम्की संधिको जो दृढ करे सो संहनन नामकर्म, सो ब ६ प्रकारका है, तिनमेंसे जहा दोनो हाम् दोनों पासे मर्कट वंध होवे, तिसका नाम नराच है, तिन दोनो हाम्रोंके ऊपर तीसरा हाम् पट्टेकी तरें जकम् वध होवे तिसका नाम ऋषभ है, इन तीनो हाम्के नेदनेवाली ऊपर खीली होवे तिसका नाम वज्रहै, ऐसी जिस कर्मके उदयसें हाम्का संधी दृढ होवे तिसका नाम वज्रऋषभ नराच संहनन नामकर्म है २८ जहा दोनों हाम्रोंके छेहमे मर्कटवध मिले हुए होवें, और उनके उपर तीसरे हाम्का पट्टा होवे, ऐसी हाम् सधी जिस कर्मके उदयसें होवे सो ऋषभ नराच संहनन नामकर्म २९ जिन हाम्रोंका मर्कटवध तो होवे परतु पट्टा और कीलो न होवे, जिसके उदयसें सो नाराच संहनन नामकर्म, ३० जहा एक पासे मर्कटवंध और दूसरे पासे खीली

होवे जिस कर्मके उदयसें सो अर्द्ध नराच संहनन नाम कर्म ३१ जैसें खीलीसें दो काष्ट जोमे होवे तैसे हामकी संधी जिस कर्मके उदयसें होवे, सो कीलिका संहनन नामकर्म ३२ दोनो हाम्मोके छेहमे मिले हुए होवे जिस कर्मसें सो सेवार्त्त सहनन नामकर्म ३३ जिस कर्मके उदयसें सामुद्रिक शास्त्रोक्त संपूर्ण लक्षण जिसके शरीरमें होवे तथा चारो अंस बरावर होवे, पलाठी मारके बेठे तब दोनों जानुका अतर और दाहिने जानुसें वामास्कध और वामेजानुसें दाहिनास्कध और पलाठी पीठसें मस्तक मापता चारों मोरी बरावर होवे, और बत्तीस लक्षण संयुक्त होवे, ऐसा रूप जिस कर्मके उदयसे होवे तिसका नाम सम चतुरस्र सस्थान नामकर्म ३४ जैसें वम वृक्षका उपल्या न्नाग पूर्ण होवेहै, तैसेंही जो नान्नीसे ऊपर संपूर्ण लक्षणवाला शरीर होवे और नान्नीसे नीचे लक्षण हींन होवे, जिस कर्मके उदयसे सो निग्रोध परिमंमल सस्थान नामकर्म ३५ जिसका शरीर नान्नीसें नीचे लक्षणयुक्त होवे, और नान्नी

सें ऊपर लक्षण रहित होवे, जिस कर्मके उदयसें सो सादिया सस्थान नामकर्म ३६ जहा हाथ पग मुख ग्रीवादिक उत्तम सुदर होवे, और हृदय, पेट, पूठ लक्षण हीन होवे जिस कर्मके उदयसें सो कुब्ज सस्थान नामकर्म ३७ जहा हाथ पग लक्षण हीन होवे, अन्य अग लक्षण संयुक्त अच्छे होवे, जिस कर्मके उदयसें सो वामन सस्थान नामकर्म ३८ जहा सर्व शरीरके अवयव लक्षण हीन होवे सो हुडक सस्थान नामकर्म, ३९ जिस कर्मके उदयसें जीवका शरीर मषी, स्याही नील समान काला होवे तथा शरीरके अवयव काले होवे सो कृष्णवर्ण नामकर्म ४० जिसके उदयसें जीवका शरीर तथा शरीरके अवयव सूयकी पुछ तथा जगाल समान नील अर्थात् हरित वर्ण होवे, सो नीलवर्ण नामकर्म ४१ जिसके उदयसें जीवका शरीर तथा शरीरके अवयव लाल हिंगलु समान रक्त होवे, सो रक्तवर्ण नामकर्म ४२ जिस कर्मके उदयसें जीवका शरीर तथा शरीरके अवयव पीत हरिताल, हलदी चपकके फूलसमान

पीले होवे, सो पीतवर्ण नामकर्म ४३ जिस कर्म के उदयसे जीवका शरीर तथा शरीरके अवयव संख स्फटिक समान उज्वल होवे, सो शुक्लवर्ण नामकर्म ४४ जिसके उदयसें जीवके शरीर तथा शरीरके अवयव सुरभि गंध अर्थात् कर्पूर, कस्तूरी, फूल सरोखी सुगंधी होवे, सो सुरभीगंध नामकर्म ४५ जिस कर्मके उदयसें जीवके शरीर तथा शरीरके अवयव दुरभिगंध लशुन मृतक शरीर सरीखी दुरभीगंध होवे, सो दुरभिगंध नामकर्म ४६ जिसके उदयसे जीवका शरीर तथा शरीरके अवयव नींव चिरायते सरीखा रस होवे, सो तिक्तरस नामकर्म ४७ जिसके उदयसें जीवका शरीरादि सूंठ, मरिचकी तरे कटुक होवे, सो कटुकरस नामकर्म ४८ जिसके उदयसें जीवका शरीरादि हरड़, वहेड़ें समान कसायलारस होवे, सो कसायरस नामकर्म ४९ जिस कर्मके उदयसे जीवके शरीरादिका रस लिंबू, आम्ली सरीखा खट्टा रस होवे, सो खट्टारस नामकर्म ५० जिस कर्मके उदयसें जीवके शरीरादि

कराविं समान रस होवे, सो मधुर रस नामकर्म ५१ इति रस नाम कर्म जिसके उदयसें जीवके शरीरमें तथा शरीरके अवयव कठिन कर्कस गायकी जीभ समान होवे, सो कर्कस स्पर्श नाम कर्म ५२ जिसके उदयसें जीवका शरीर तथा शरीरके अवयव माखणकी तरे कोमल होवे, सो मृदु स्पर्श नामकर्म ५३ जिसके उदयसें जीवका शरीर तथा अवयव अर्क तूलकी तरे हलके होवे, सो लघु स्पर्श नामकर्म ५४ जिसके उदयसें लोहेवत् भारी शरीरके अवयव होवे, सो गुरु स्पर्श नामकर्म ५५ जिस कर्मके उदयसें जीवका शरीर तथा अवयव हिम वर्फवत् शीतल होवे, सो शीत स्पर्श नामकर्म ५६ जिसके उदयसे जीवका शरीर तथा अवयव उष्ण होवे, सो उष्ण स्पर्श नामकर्म ५७ जिस कर्मके उदयसें जीवका शरीर तथा शरीरावयव घृतकी तरे स्निग्ध होवें, सो स्निग्ध स्पर्श नामकर्म ५८ जिस कर्मके उदयसें जीवका शरीरावयव राखकी तरे रूखे होवे, सो रुक्ष स्पर्श नामकर्म ५९ इति स्पर्श नाम कर्म नरक, तिर्यंच,

मनुष्य, देव ए चार जगे जव जीव गति नाम कर्मके उदयसे वक्र वाकी गति करे, तव तिस जीवकों वाके जातेको जो अपने स्थानमें ले जावे, जैसे वैलके नाकमे नाथ तैसे जीवके अंतराल वक्र गतिमे अनुपूर्वीका उदय तथा जों जीवके हाथ पगादि सर्व अवयव यथायोग्य स्थानमे स्थापन करे, सो अनुपूर्वी नामकर्म. सो चार प्रकारका है, नरकानुपूर्वी १ तिर्यचानुपूर्वी २ मनुष्यानुपूर्वी ३ देवतानुपूर्वी ४ एवं सर्व ६३ हूइ, जिसके उदयसें हाथी वृषन्नकी तरे शुन्न चलनेकी गति होवे, सो शुन्न विहाय गति ६४ जिस कर्मके उदयसें उटकी तरे बुरी चाल गति होवे, सो अशुन्न विहाय गति नामकर्म ६५ जिसके उदयसें परकी शक्ति नष्ट हो जावे, परसें गंज्या परान्नव करा न जाय, सो पराघात नामकर्म ६६ जिसके उदयसें सासोस्वासके लेनेकी शक्ति उत्पन्न होवे, सो उस्स्वास नामकर्म ६७ जिसके उदयसें जीवाका शरीर उष्ण प्रकाश वाला होवे, सूर्य मंमलवत्, सो आतप नामकर्म ६८ जिसके उदयसें

जीवका शरीर अनुष्ण प्रकाशवाला होवे, सो उ द्योत नामकर्म, चंद्र मंम्लवत् ६७ जिसके उद-यसें जीवका शरीर अति भारी अति हलका न होवे, सो अगुरु लघु नामकर्म ७० जिसके उद-यसें चतुर्विध सघ तीर्थ थापन करकें तीर्थंकर प-दवी लहे, सो तीर्थंकर नामकर्म ७१ जिस कर्मके उदयसें जीवके शरीरमें हाथ, पग, पिम्मी, साथ ल, पेट, गती, बाहु, गल, कान, नाक, होठ, दात, मस्तक, केश, रोम शरीरकी नशाकी विचित्र र चना, आख, मस्तक प्रमुखके पम्दें यथार्थ यथा योग्य अपने ७ स्थानमे उत्पन्न करे होवे, सचयसें जैसें वस्तु वनतीहै तैसेही निर्माण कर्मके उदय-सें सर्व जीवाके शरीरोंमे रचना होतीहै, सो नि-र्माणकर्म ७७ जिसके उदयसें जीव अधिक तथा न्यून अपने शरीरके अवयव करके पीम्रा पामे, सो उपघात नामकर्म ७३ जिसके उदयसे जीव थावरपणा गेम्मी हलने चलनेकी लब्धि शक्ति पावे, सो त्रस नाम कर्म है ७४ जिस कर्मके उ-दयसें जीव सूक्ष्म शरीर गेम्कके वादर चक्षु ग्राह्य

शरीर पावे, सो बादर नामकर्म ७५ जिस कर्मके उदयसे जीव प्रारंभ करी हुइ ठ ६ पर्याप्ति अर्थात् आहार पर्याप्ति १ शरीर पर्याप्ति २ इन्द्रिय पर्याप्ति ३ सासोत्स्वास पर्याप्ति ४ भाषा पर्याप्ति ५ मन पर्याप्ति ६ पूरी करे, सो पर्याप्त नामकर्म ७६ जिसके उदयसे एक जीव एकही उदारिक शरीर पावे, सो प्रत्येक नामकर्म ७७ जिस कर्मके उदयसें जीवके हाम दातादि दृढ बंध होवे, सो थिर नामकर्म ७८ जिस कर्मके उदयसें नाभिसे ऊपरला भाग शरीरका पावे, दूसरेके तिस अंगका स्पर्श होवें तोभी बुरा न माने, सो शुभ नामकर्म ७९ जिस कर्मके उदयसें विना उपकारके करयाभी तथा सवध विना वल्लभ लागे, सो सौभाग्य नामकर्म ८० जिस कर्मके उदयसे जीवका कोकलादि समान मधुर स्वर होवे, सो सुस्वर नामकर्म ८१ जिस कर्मके उदयसें जीवका वचन सर्वत्र माननीय होवे, सो आदेय नामकर्म ८२ जिस कर्मके उदयसें जगतमें जीवकी यशकीर्ति फैले, सो यश कीर्त्ति नामकर्म ८३ जिस

कर्मके उदयसें जीव त्रसपणा छोमी स्थावर पृथ्वी, पानी, वनस्पत्यादिकका जीव हो जावे, हली चली न सके, सो स्थावर नामकर्म ८४ जिस कर्मके उदयसें सूक्ष्म शरीर जीव पावे, सो सूक्ष्म नामकर्म ८५ जिस कर्मके उदयसें प्रारंभी हुइ पर्याप्ति पूरी न कर सके, सो अपर्याप्त नामकर्म ८६ जिस कर्मके उदयसें अनते जीव एक शरीर पामे, सो साधारण नामकर्म ८७ जिस कर्मके उदयसें जीवके शरीरमें लोहु फिरे, हामादि सिथल होवे, सो अथिर नामकर्म ८८ जिस कर्मके उदयसें नाभ्नीसें नीचेका अग उपागादि पावे, सो अशुभ्न नामकर्म ८ए जिस कर्मके उदयसें जीव अपराधके विना करेही बुरा लगे, सो दौर्भाग्य नामकर्म ए० जिस कर्मके उदयसें जीवका स्वर मार्जार, ऊंट सरीखा होवे, सो उु स्वर नामकर्म ९१ जिस कर्मके उदयसें जीवका वचन अछाभी होवे, तोभ्नी लोक न माने सो अनादेय नामकर्म ९२ जिस कर्मके उदयसें जीवका अपयश अकीर्त्ति होवे, सो अपयश कीर्त्ति नामकर्म, ए३ इति

नामकर्म. ६.

अथ नामकर्म बंध हेतु लिखते है ॥ देव गत्यादि तीस ३० शुभ नामकर्मकी प्रकृतिका बंधक कौन होवे सो लिखते है. सरल कपट रहित होवे जैसी मनमें होवे तैसीही कायकी प्रवृत्ति होवे. किसीकोंभी अधिक न्यून तोला, मापा करके न ठगे, परवंचन बुद्धि रहित होवे, ऋद्धिगारव, रसगारव, सातागारव, करके रहित होवे, पाप करता हुआ मरे, परोपकारी सर्व जन प्रिय क्षमादि गुण युक्त ऐसा जीव शुभ नामकर्म बांधे तथा अप्रमत्त यतिपणे चारित्रियो आहारकद्विक बांधे, १ और अरिहंतादि वीश स्थानकको सेवता हुआ तीर्थंकर नामकर्मकी प्रकृति बांधे । और इन पूर्वोक्त कामोसे विपरीत करे अर्थात् बहुत कपटी होवे, कूरा, तोला, मान, मापा करके परकों ठगे, परद्रोही, हिंसा, जूठ, चौरी, मैथुन, परिग्रहमें तत्पर होवे, चैत्य अर्थात् जिनमंदिरादिककी विराधना करे, व्रतलेकर भग्न करे, तीनो गौरवमें मत्त होवे, हीनाचारी ऐसा जीव नरक गत्यादि अशु-

भ नाम कर्मकी ३४ चौतीस प्रकृति बांधे, येह सतसठ ६७ प्रकृतिकी अपेक्षा करके बंध कथन करा, इति नामकर्म ६ सपूर्ण

अथ गोत्रकर्म तिसके दो भेद प्रथम उच्च गोत्र, विशिष्ट जाती, क्षत्रिय कास्यपादिक उग्रादी कुल उत्तम बल विशिष्ट रूप ऐस्वर्य तपो गुण विद्यागुण सहित होवे, सो उच्चगोत्र १ तथा भिक्षाचरादिक कुल जाती आदीक लहे सो नीचगोत्र २ अथ उच्चगोत्रके बंध हेतु ज्ञान, दर्शन, चारित्रादीक गुण जिसमें जितना जाने, तिसमे तितना प्रकाशकर गुण बोले, और अवगुण देख के निंदे नही, तिसका नाम गुण प्रेक्षीहै, गुण प्रेक्षी होवे, जातिमद १ कुलमद २ बलमद ३ रूपमद ४ सूत्रमद ५ ऐश्वर्यमद ६ लाभमद ७ तपोमद८ ये आठ मदकी संपदा होवे, तोभी मद न करे, सूत्र सिद्धांत तिसके अर्थके पढने पढानेकी जिस कों रुचि होवे, निराहकारसें सुबुद्धि पुरुषको शास्त्र समझावे, इत्यादि परहित करनेवाला जीव उच्च गोत्र बांधे, तीर्थंकर सिद्ध प्रवचन सघादिकका अ-

तरंगसें न्नक्तीवाला जीव उंचगोत्र बांधे, इन पू-
र्वोक्त गुणोसें विपरीत गुणवाला अर्थात् मत्सरी
१ जात्यादि आठ मद सहित अहंकारके उदयसे
किसीकों पढावे नही, सिद्ध प्रवचन अरिहंत चै-
त्यादिककी निंदा करे, न्नक्ति न होवें, सो जीव
हीन जाति नीच गोत्र बांधे ॥ इति गोत्रकर्म ७.

अथ आठमा अंतराय कर्मका स्वरूप लिख
तेहै, तिसके पांच न्नेदहै जिस कर्मके उदयसें
जीव शुद्ध वस्तु आहारादिकके हूएन्नी दान देने-
की इछान्नी करे, परंतु दे नही सकें, सो दानांत-
राय कर्म १ जिस कर्मके उदयसे देनेवालेके हूए-
न्नी इष्ट वस्तु याचनेसेंन्नी न पावे व्यापारादिमें
चतुरन्नी होवे तोन्नी नफा न मिले, सो लान्नांत-
राय कर्म २ जिस कर्मके उदयसे एक वार न्नोग
ने योग्य फूलमाला मोदकादिकके हूएन्नी न्नोग
न कर सके, सो न्नोगांतराय कर्म ३ जिस कर्मके
उदयसे जो वस्तु बहुत वार न्नोगनेमें आवे, स्त्री
आन्नर्ण वस्त्रादि तिनके हूएन्नी वारंवार न्नोग न
कर सके, सो उपन्नोगांतराय कर्म ४ जिस कर्म

के उदयसें मिथ्या मतकी क्रिया न कर सके, सो वालवीर्यांतराय कर्म १ जिसके उदयसें सम्यगृष्ट ष्टी, देश वृत्ति धर्मादि क्रिया न कर सके, सो वाल पंमित वीर्यांतराय कर्म, जिसके उदयसें सम्यग् दृष्टी साधु मोक्ष मार्गकी सपूर्ण क्रिया न कर सके, सो पंमित वीर्यांतराय कर्म अथ अंतराय कर्मके बंध हेतु लिखतेहै श्री जिन प्रतिमाकी पुजाका निषेध करे, उत्सूत्रकी प्ररूपणा करे, अन्य जीवा कों कुमार्गमे प्रवर्त्तावे, हिंसादिक अठारह पाप सेवनेमें तत्पर होवे तथा अन्य जीवाकों दान ला भादिकका अंतराय करे, सो जीव अंतराय कर्म बांधे. इति अंतराय कर्म ८

इस तरें आठ कर्मकी एकसो अठतालीस १४८ कर्म प्रकृतिके उदयसें जीवोंके शरीरादिक- की विचित्र रचना होतीहै, जैसें आहारके खाने सें शरीरमें जैसें जैसें रंग और प्रमाण संयुक्त हाड़, नशा, जाल, आखके परदे मस्तकके विचित्र अवयवपणें तिस आहारका रस परिणमता है, यह सर्व कर्माके उदयसें शरीरकी सामर्थ्येसें होता

है, परंतु यहां ईश्वर नही कुछभी कर्त्ताहै, तैसेंही काल १ स्वभाव २ नियति ३ कर्म ४ उद्यम ५ इन पांचो कारणोंसें जगतकी विचित्र रचना हो रहीहै जेकर ईश्वर वादी लोक इन पूर्वोक्त पांचो के समवायको नाम ईश्वर कहते होवे, तब तो हमभी ऐसे ईश्वरकों कर्त्ता मानतेहैं. इसके सिवाय अन्य कोइ कर्त्ता नहीहै, जेकर कोइ कहे जैनीयोंने स्वकपोल कल्पनासें कर्मोके भेद बना रखेहै. यह कहना महा मिथ्याहै, क्योंकि कार्यानुमानसे जो जैनीयोने कर्मके भेद मानेहै वे सर्व सिद्ध होतेहै, श्रौर पूर्वोक्त सर्व कर्मके भेद सर्वज्ञ वीतरागने प्रत्यक्ष केवल ज्ञानसें देखेहै इन कर्मोके सिवाय जगतकी विचित्र रचना कदापि नही सिद्ध होवेगी, इस वास्ते सुज्ञ लोकोकों अरिहंत प्रणीत मत अंगीकार करना उचितहै, श्रौर ईश्वर वीतराग सर्वज्ञ किसी प्रमाणसेंभी जगतका कर्त्ता सिद्ध नही होताहै, जिसका स्वरूप ऊपर लिख आये है

प्र. १५५–जैन मतके ग्रथ श्री महावीर-

जीसें लेके श्री देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण तक कंठाग्र रहे क्योंकर माने जावे, और श्वेतांबर मत मूल का है और दिगंबर मत पीछेसें निकला, इस कथनमें क्या प्रमाण है

उ—जैन मतके आचार्य सर्व मतोंके आचार्योंसें अधिक बुद्धिमान थे, और दिगंबराचार्यों सें श्वेतांबर मतके आचार्य अधिक बुद्धिमान् आत्मज्ञानी थे, अर्थात् बहुत कालतक कंठाग्र ज्ञान रखनेमें शक्तिमान थे, क्योंकि दिगंबर मतके तीन पुस्तक धवल ७०००० श्लोक प्रमाण १ जयधवल ६०००० श्लोक प्रमाण २ महाधवल ४०००० श्लोक प्रमाण ३ श्री वीरात् ६८३ वर्षे ज्येष्ठशुदि ५ के दिन भूतवलि १ पुष्पदंतनामें दो साधुयोंनें लिखे थे, और श्वेतांबर मतके पुस्तक गिणतीमें और स्वरूपमें अलग अलग एक कोटि १०००००००० पांचसौ आचार्योंनें मिलके और हजारों सामान्य साधुयोंने श्री विरात् ९८० वर्षे वल्लभी नगरीमे लिखे थे, और बौद्धमतके पुस्तकतो श्री वीरात् थोडेसें वर्षों पीछेही लिखे गयेथे, जिनोकी बुद्धि

अल्प थी तिनोने अपने मतके पुस्तक जलदीसें लिख लीने, और जिनोकी महा प्रौढ धारणा करनेकी शक्तिवाली बुद्धिथी तिनोने पीछेसे लिखे यह अनुमानसे सिद्ध है, और दिगंबर मतमे श्री महावीरके गणधरादि शिष्योसे लेके ५८५ वर्ष तकके काल लग हुए हजारों आचार्योंमेसें किसी आचार्यका रचा हुआ कोइ पुस्तक वा किसी पुस्तकका स्थल नही है, इस वास्ते दिगंबर मत पीछेसें उत्पन्न हुआ है

प्र १५६–देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणने जो ज्ञान पुस्तकोंमे लिखाहै, सो आचार्योंकी अविछिन्न परंपरायसें चला आया सो लिखा है, परं स्वकपोल कल्पित नही लिखा, इसमें क्या प्रमाण है, जिससें जैनमतका ज्ञान सत्य माना जावे

उ.–जनरल कनिंगहाम साहिब तथा डाक्तर हॉरनल तथा डाक्तर बूलर प्रमुखोंनें मथुरा नगरीमेंसें पुरानी श्री महावीरस्वामिकी प्रतिमाकी पलाठी ऊपरसे तथा कितनेक पुराने स्तंभो ऊपरसें जो जूने जैनमत संबंधी लेख अपनी

बुद्धिके प्रज्ञावसें वाचके प्रगट करे है, और अंग्रेजी पुस्तकोंमें छापके प्रसिद्ध करेहै तिन जूने लेखोंसे निस्संदेह सिद्ध होताहै कि श्री महावीरजीसे लेके श्री देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण तक जैन श्वेतांवर मतके आचार्य कराग्र ज्ञान रखनेमे वहुत उद्यमी और आत्मज्ञानी थे, इस वास्ते हम जैन मतवाले पूर्वोक्त यूरोपीयन विद्वानोका वहुत उपकार मानते है, और मुंबइ समाचार पत्रवाला भी तिन लेखोंको वाचके अपने संवत् १९४४ के वर्षाके चार मासके एक प्रतिदिन प्रगट होते पत्रमे लिखताहै कि, जैनमतका कल्पसूत्र कितनेक लोक कल्पित मानते थे, परंतु इन लेखोंसे जैन मतका कल्पसूत्र सच्चा सिद्ध होता है

प्र १५७–व लेख कौनसेहै, जिनका जिकर आप पहले प्रश्नोत्तरमें लिख आए है, और तिन लेखोंसे तुमारा पूर्वोक्त कथन क्योंकर सिद्ध होता है?

उ –वे लेख जैसें डाक्तर बूलर साहिवने सुधारके लिखेहै और जैसे हमको गुजराती भा

पातरमे जापातर कर्त्ताने होयेहै तेसेही लिखतेहै, येह पूर्वोक्त लेख सर ए. कनिंगहामके आर्चिन्नलोजिकल (प्राचीन कालकी रही हुइ वस्तुयो संबंधी) रिपोर्टका पुस्तक ८ भागमेमें चित्र १३-१४ तरमे चोदवें तक प्रगट करे हुए मथुराके शिला लेख तिनमे केवल जैन साधुयोंका संप्रदाय आचार्योंकी पंक्तियां तथा शाखायों लिखी हुइहै, केवल इतनाही नही लिखा हुआहै, किंतु कल्पसुत्रमें जे नवगण (गच्छ) तथा कुल तथा शाखायो कहीहै, सोभी लिखी हुइहै, इन लेखोमे जो संवत् लिखा हुआ है, सो हिंदुस्थान और सीथीया देशके बीचके राजा कनिश्क १ हुविश्क २ और वासुदेव ३ इनके समयके संवत् लिखे हुएहैं और अब तक इन संवतोकी शरुआत निश्चित नही हुइहै; तोभी यह निश्चय कह सकते है कि येह हिंदुस्थान और सीथीया देशके राजायोंका राज्य इसवीसनके प्रथम सैकेके अंतसें और दूसरे सैकेके पहिले पोणेभागसे कम नही गरा सक्तेहै, क्यो कि कनिश्क सन इशवीसनके ७८ वा ७९ मे

धर्म गद्दी ऊपर बेठा सिद्द हुआहे, और कितनेक लेखोमे इन राजायोका सवत् नही हे, सो लेख इन राजायोके राज्यसें पहिलेंका है, ऐसें डाक्तर बूलर साहिब कहता हे

प्रथम लेख सुधरा हुआ नीचे लिखा जाता है सिद्द। स २० । ग्रामा १ । दि १०+५ । कोट्टियतो, गणातो, वाणियतो, कुलतो, वएरितो, शाखातो, शिरिकातो, ञत्तितो वाचकस्य अर्य्यसंघ सिहस्य निर्व्वर्त्त नदत्तिलस्य वि –लस्य कोठुंबिकिय, जयवालस्य, देवदासस्य, नागदिनस्य च नागदिनाये, च मातु श्राविकाये दिनाये दानं । इ । वर्द्धमान प्रतिमा इस पाठका तरजुमा रूप अर्थ नीचे लिखते है "फतेह" सवत् २० का ऊष्ण कालका मास १ पहिला मिति १५ ज्यवल (जय पाल)की माता बी लाकी स्त्री दत्तिलकी (बेटी) अर्थात् (दिन्ना अथवा दत्ता) देवदास और नागदिन्न अथवा नागदत्त) तथा नागदिना (अर्थात् नागदिन्ना अथवा नागदत्ता) की ससारिक स्त्री शिष्यकी बक्षीस कीर्त्तिमान् वर्द्धमानकी प्रतिमा

(यह प्रतिमा) कौटिक गच्छमेंसे वाणिज नामे कुलमेंसे वैरी शाखाका सीरीका नागके आर्य संघ सिद्दकी निर्वरतन है, अर्थात् प्रतिष्ठित है ॥ इति स्माक्तर बूलर ॥

अथ दूसरा लेख. नमो अरहंतानं, नमो सिद्धान, सं ६० + ७ ग्र ३ दि ५ एताये पुर्वायेरार क्स्य अर्यककसघ स्तस्य शिष्या आतापेको गहवरी यस्य निर्वतन चतुवस्यर्न सघस्य या दिन्ना पभिन्ना (न्नो ?) ग (? ? वेहिका ये दत्ति ॥ इसका तरजमा ॥ अरहंतने प्रणाम, सिद्धने प्रणाम, संवत ६२ यह तारीख हिंदुस्थान और सीथीआ वीचके राजायोंके सवत्के साथ सवध नही रखती है, परंतु तिनोंसे पहिलेके किसी राजेका सवत् है, क्योंकि इस लेखकी लिपी बहुत असल है उष्ण कालका तीसरा मास ३ मिति ५ इसरकी तारीखमें जिस समुदायमें चार वर्गका समावेश होताहै, तिस समुदायके उपभोग वास्ते अथवा हरेक वर्गके वास्ते एकैक हिस्सा इस प्रमाणसें एक। या। देनेमें आया था। या। यह क्या

वस्तु होवेगी सो मै नही जानता हु, पति भोग अथवा पति भाग इन दोनोंमेसे कौनसा शब्द पसिद्ध करने योग्य हे के नही, यहभी मै नही कह सक्ताहू (आ) आतपीको गहवरोरारा (राघा) कारहीस आर्य--र्क्क सघस्त (आर्य-कर्क रुघशी त) का शिष्यका निर्वतन (होइके) वइहीक (अथवा वइहीता) को बक्षीस, यह नाम तोमके इस प्रमाणे अलग कर सक्ते है, आतपीक-ओगहत्र-आर्य । पीछेके भागमे यह प्रगट हे कि निर्वतन याके साथ एकही विभक्तिमे है, तिस वास्ते अन्य दूसरे लेखोमेंभी बहुत करके ऐसीही पद्धतिके लेख लिखे हुए हे, निर्वर्तयतिका अर्थ सामान्य रीते सो रजु करता हे, अथवा सो पूरा करता हे ऐसा हे, तिसमे बहुत करके ऐसे बतलाता है के दीनी हुइ वस्तु रजु करनेमे आइथी, अर्थात् जिस आचार्यका नाम आगे आवेगा तिसकी इछासे अर्पण करनेमे आइथी, अथवा तिससें सो पूरी करनेमे आइथी गणतो, कुलतों इत्यादि पाचमी विभक्तिके रूप वियोजक अर्थमे लेने चाहिये, स्येऽ-

जरका संस्कृतकी वाक्य रचनाका पुस्तक ११६ । १ देखो । इति भाक्तर बूलर. अथ तीसरा लेख॥ सिद्ध महाराजस्य कनिश्कस्य राज्ये संवत्सरे नवमे ॥९॥ मासे प्रथ १ दिवसे ५ अस्या पूर्वाये कोटियतो, गणतो, वाणियतो, कुलतो, वइरीतो, साखातो वाचकस्य नागनदि सनिर्वरतनं ब्रह्मधूतुये भट्टिमितस कुटुविनिये विकटाये श्री वर्द्धमानस्य प्रतिमा कारिता सर्व सत्वान हित सुखाये, यह लेख श्री महावीरकी प्रतिमा ऊपरहै ॥ इस का तरजुमा नीचे लिखतेहै ॥ फतह महाराजा कनिश्यके राज्यमे ९ नवमें वर्षमेका १ पहिले महीनेमे मिति ५ पाचमीमे ब्रह्माकी वेटी और भट्टिमित (भट्टिमित्र) की स्त्री विकटा नामकीने, सर्व जीवाके कल्याण तथा सुखके वास्ते कीर्त्ति-मान वर्द्धमानकी प्रतिमा करवाइ है, यह प्रतिमा कोटिक गण (गच्छ) का वाणिज कुलका और वइरी शाखाका आचार्य नागनदिकी निर्वत्तन है, (प्रतिष्ठितहै), अब जो हम कल्पसूत्र तर्फ नजर करीये तो तिस मूल प्रतके पंन्ने । ८१–८२ । इस.

वी इ. वाल्युम (पुस्तक) १७ पत्रे ११०१, हमकों मालम होताहैकि सुठिय वा सुस्थित नामे आचार्य श्री महावोरके आठमे पट्टके अधिकारोंने कौटिक नामे गण (गच्छ) स्थापन कराथा, तिसके विभाग रूप चार शाखा तथा चार कुल हूए, जिसकी तीसरी शाखा वइरीथी और तोसरा वाणिज नामे कुलथा, यह प्रगट हैकि गण कुल तथा शाखाके नाम मथुराके लेखोंमे जो लिखेहै वे कल्पसूत्रके साथ मिलते आतेहै कोटियकुठक को टीयका पुराना रूपहै, परतु इस वातकी नकल लेनी रसिकहैकि वइरी शाखा सीरीकाभत्ती (स्त्री काभक्ति) जो नवर ६ के लेखमें लिखी हूइहै तिसके भागका कल्पसूत्रके जाननेमें नही था, अर्थात् जव कल्पसूत्र हूआथा तिस समयमें सो भाग नही था यह खाली स्थान ऐसाहैकि जो मुहकी दंत कथा (परंपरायसें चला आया कथन) सें लिखीहूइ यादगीरीसे मालुम होताहै इति मा क्तर वूलर ॥

अथ चौथा लेख ॥ सवत्सरे ९० व

स्य कुटुवनि. वदानस्य वोधुय क गणाता
. वहुकतो, कालातो, मझमातो, शाखाता
सनिकाय न्नतिगालाए थवानि सिद्दस ५ हे
१ दि १५+१ अस्य पूर्वा येकोटो इस लेखकी
लीनी हुइ नकल मेरे वसमे नहीहै, इस वास्ते
इसका पूर्ण रूप मे स्थापन नही कर सकताहूं,
परतु पक्तिके एक टुकमेके देखनेसे ऐसा अनुमान
हो सक्ताहैके यह अर्पण करनेका काम एक स्त्रीसे
हूआथा, ते स्त्री एक पुरुषको वहु (कुटुवनी) तरी
के और दूसरेके वेटेकी वहु (वधु) तरीके लिखने
में आइथी ॥ दूसरी पक्तिका प्रथम सुधारे साथ
लेख नीचे लिखे मूजव होताहै ॥ कोटीयतो गण
तो (प्रश्न) वाहनकतो कुलतो मज्झमातो साखा-
तो सनीकायेके समाजमें कोटीय गच्छके प्रश्न-
वाहनकी मध्यम शाखामेंके कोटीय और प्रश्नवा
हनकये दो नाम होवेंगे, ऐसें मुझकों निसदेह
मालुम होताहै, क्योंकि इस लेखकी खाली जगा
तिस पूर्वोक्तशब्द लिखनेसे बरावर पूरी होजाती
है, और दूसरा कारण यहहैकि कल्पसूत्र एस

वी ३. पत्र—७०३ मेंमें मध्यम शाखा विषयक हकीकतको पूर्वोक्तही सूचन करतीहैं, यह कल्प सूत्र अपनेकों एसे जनाताहैकि सुस्थित और सु-प्रतिवुधका दूसरा शिष्य प्रीयग्रथ स्थविर मध्यमा शाखा स्थापन करीथी, हमकों इन लेखोपरसे मालुम होताहैके प्रोफेसर जेकूवीका करा हुआ गण, कुल तथा शाखायोंकी सज्ञाका खुलासा खराहै, और प्रथम सज्ञा शाखा वतातोहे, दूसरी आचार्यो की पक्ति और तीजी पक्तिमेंसें अलग हो गइ, शाखा वतावेहे, तिससें ऐसा सिद्ध होता है, कल्प सूत्रमें गण (गछ) तथा कुल जणाया विना जो शाखायोंका नाम लिखताहे, सो शाखा इस कल्पवृक्षपे पिछले गणके तावेकी होनो चाहिये, और तिसकी उत्पत्ति तिस गछके एक कुलमेंसें हुइ होइ चाहिये, इस वास्ते मध्यम शाखा निसंदेह कौटिक गछमें समाइ हुइथी, और तिसके एक कुलमेंसे फटी हुइ वाकी शाखाथी के जिसके वीचका चौथा कुल प्रश्नवाहनक अर्थात् पणहवाहणय कहलाताहे, इस अनुमानकी सत्यता करने

वाला राजशेखर अपने रचे प्रबंध कोशमे जो कोश तिनोमे विक्रम संवत् १४०५ मे रचा है, तिसकी समाप्तिमें अपनी धर्म सबंधी उलाद विषयिक लिखो हुइ हकीकतसे साबूत होतीहै, सो अपनेकों जनाता है कि मै कोटिक गण प्रश्नवाहन कुल मध्यम शाखा हर्षपुरीय गच्छ और मलधारी सतान, जो मलधारी नाम अभयदेवसूरिको विरद मिला था, तिसमेंसे हु॥ १, २, के पिछले शब्दोको सुधारे करनेमे मै समर्थ नहोहुं, परंतु इतना तो कह सक्ताहुंके यह बक्षीस स्तंभोकी लिखी हुइ मालुम होती है, ५, कोटिय गण अतनवर २ में लिखा हुआ मालुम होताहै, जहा १, १, की २ दूसरी तर्फकी यथार्थ नकल नोचे प्रमाणे वचातीहै, सि८=स ५ हे १ दी १०+२ अस्य पुरवाये कोटो सर ए कनिगहामकी लोनी हुइ नकलसें मै पिछले शब्द सुधार सक्ताहू, सो ऐसें अस्यापुरवाये कोट (ीय) मालुम होता है, परतु टकारके ऊपरका स्वर स्पष्ट मालुम नही होता है, और यकारके वामे तर्फका स्थान थोमासाही मा

प्रपा (दी) ना   इसका तरजुमा नीचे लिखते है ॥

संवत् ४७ ग्रुष्ण कालका महीना ७ दूसरा मिति २० ऊपर लिखी मितिमे यह ससारी शिष्य द का ।   यह एक पाणी पीनेका गाम देनेमें आयाथा, यह रोहनदी (रोहनदि) का शिष्य और चारण गणके पेतिधमिक (प्रइतिधर्मिक) कुलका आचार्य सेनका निवतन (है) ॥ ८ पिछला लेख जो ऐसीहो रीतीसे कल्पसत्रमे जनाया हुआ एक गण कुल तथा शाखाका कुछक अपभ्रंस और करे हुए नामाकों वतलाता है, सो नवर २० चित्र १५का लख है, तिसकी असली नकल नीचे लिखे मूजब वंचाती है ॥ पक्ति पहिली ॥ सिद्ध नमो अरहतो महावीरस्ये देवनासस्य राज्ञा वासुदेवस्य सवतसरे । ए+८ । वर्प मासे ४ दिवसे १०+१ एतास्या ॥ पक्ति दूसरी ॥ पूर्ववया अर्यरेहे नियातो गण पुरीध. का कुल व पेत पुत्रीका ते शाखातो गणस्य अर्य—देवदत्त   वन   ॥ पंक्ति तीसरी ॥ रयय—क्षेमस्य ॥ पक्ति ४ ॥ प्रकगीरीणे ॥ पक्ति ,

५ मी ॥ किइदिये प्रज. ॥ पक्ति ६ ठ्ठी ॥ तस्य प्र
वरकस्यधीतु वर्णास्य गत्व कस्यम युय मित्र [१]
स दत्तगा ॥ पंक्ति ७ मी ॥ ये वतोमद
तीसरी पक्तिसे लेके सातमी पंक्तिताइतो सुधारा
हो सके तैसा है नही, और मै तिनके सुधारने-
की मेहनतभ्नी नही करता हुं, क्योके मेरे पास
मुझको मदत करे तैसी तिसकी लीनी हुइ नक
ल नही है, इतनोही टीका करनी वस है के ठ्ठी
पंक्तिमे वेटीका शब्द धितु और लिस पीछेका म
युयसो वहुलतासें (माताका) मातुयेके वदले भ्नू
लसे वाचनेमे आया है, सो लेख यह वतलाता है,
के यह अर्पणाभ्नी एक स्त्रीने करा या ॥ पक्ति १।
३ ॥ दूसरी तीसरीमें लिखे हुए नामवाले आचा
र्योंके नामोकों यह वक्रीस साथका सवध अधेरेमें
रहता है पिछले वार विडुयेकी जगे दूसरा नम-
स्कार नमो भ्नगवतो महावीरस्यको प्रायें रहो हुइ
है, प्रथम पक्तिमें सिद्धओ के वदले निश्चित शब्द
प्राये करके सिद्ध है, सर ए कनिंगहामे आ वाचा
हुआ अक्षर मेरी समझ मुजव विराम के साथै

म है, दूसरा महावीरास्येकी जगें महावीरस्य धरना चाहिये, दूसरी पक्तिमे पूर्व वयाके बदले पूर्ववाये गणके बदले गणतो, काकुलवके बदले० काकुलतो० टे के बदले पेतपुत्रिकातो, और गण-स्यके बदले गणिस्य बाञ्चनेकी जरुरीआत इनेंक कोइकों प्रगट मालुम पमेगी, नामोके सबधमे अर्य-रेहनीय अशक्य रुपहै, परंतु जेकर अपने ऐसे मानीयेके हकी ऊपर इका असल खरेखरा पिछले चिन्हके पेटेका है, तद पीछे सो अर्य-रोहनिय (आर्य रोहनके तावेका) अथवा आर्य रोहनने स्थाप्या हुआ, अर्थात् सस्कृतमें आर्य रो हण होता है, इस नामका आचार्य जैन दत क-थामे अछीतरे प्रसिद्ध है, कल्पसूत्र एस वी. इ. पत्र २९१ में लिखे मूजब सो आर्य सुहस्तिका पहिला शिष्य था, और तिसने उदेह गण स्थाप न करा था इस गणकी चार शाखा और ठकुल हुएथे, तिसकी चौथी शाखाका नाम पूर्ण पत्रि-का मुख्यकरके तिसके विस्तारकी बाबतमे इस लेखके नाम पेतपुत्रिकाके साथ प्रायें मिलता आ

ताहै, और यह पिछला नाम सुधारके तिसको पोनपत्रिका लिखनेमे मै शकाभी नही करताहू, सोइ नाम संस्कृतमें पौर्ण पत्रिकाकी वरावर होवेगी, और सो व्याकरण प्रमाणे पूर्ण पत्रिका करते हूए अधिक शुध्नाम है, इन छहो कुलोमेसे परिहासक नामभी एक कुलहै, जो इस लेखमें कर गए हूए नाम पुरिध-क के साथ कुछक मिलतापणा बतलाताहै, दूसरे मिलते रूपो ऊपर विचार करता हूआ मै यह संभवित मानताहू के, यह पिछला रूपपरिहा क के वदले भूलसें वाचनेमें आयाहै, दूसरी पंक्तिके अतमे पुरुषका नाम प्राये छठी विभक्तिमें होवे, और देवदत्त व सुधारके देवदतस्य कर सक्तेहै ॥ ऐसें पूर्वोक्त सुधारेसें प्रथम दो पंक्तिया नीचे मूजव होतीहै ॥ १

सिध (म्) नमो अरहतो महावीर (अ) स्य् (अ) देवनासस्या. २, पूर्वव्, (ओ) य् (ए) अर्यय-१ (ओ) ह् (अ) नियतागेण (तो) प् (अ) रि (हास क् (अ) कुल (तो) प् (ओन्) अप् (अ) त्रिकात (ओ) साखातोगण (२) स्य अर्यद-देवदत्त (स्य

न   इसका तरजुमा नीचे लिखे मुजब होवेगा

"फतेह" देवतायोंका नाश करता अरहत महावीरकों प्रणाम (यह गुण वाचक नामके ख रेपणेमें मेरेकों वहुत शकहै, परंतु तिस्का सुधा रा करनेकों में असमर्थहूं) राजा वासुदेवके सव-तूके ए८ मे वर्षमे वर्षाऋतुके चोथे महीनेमें मिति ११ मीमें इस मितिमे   परिहासक (कुल) में कापोन पत्रिका (पोर्णपत्रिका) शाखा का अरयूय–रोहने (आर्यरोहने) स्थापन करी शाला (गण) मेंका अरयय देवदत (देवदत्त) ए शालाका मुख्य गणि॥ येह लेख एकत्र देखनेसें यह सिद्द करतेहैके मधुराके जैन साधुयोंने सवत् ५ से ए८ अगानवें तक वा इसवोसन ८३। वा ८४ सें लेके सन इसवी १६६ वा १६७ के वीचमें जैनधर्माधिकारी हुदेवालोंने परम्पर एक सप क राया, ओर तिनमेंसे कितनेक गच्छोंमे मतानुचा रीयोमे विज्ञाग पराया, और सो ज्ञाम हरेक शाला (गण) का कितनेक तिसके अदर ज्ञाग हू एथे ऊपर लिखे हूए नामों वाले पुरुषाको वाचक

अथवा आचार्यका इलकाव मिलताहै, जो वुध्दि ज्ञाणकके साथ मिलताहै और सो इलकाव (पद वीका नाम) वहुत प्रसिध्द रीतीसें जैनके जो यति लोक साधु धर्म सवधी पुस्तकों श्रावक साधुयों को समझने लायक गिणनेमे आतेथे तिनको देनेमें आतेथे, परतु जो साधु गणि (आचार्य) एक गछका मुखीया कहनेमे आताथा, तिसका यह न्नारी इलकाव था, और हालमेंन्नी पिछली रीती प्रमाणे वमे साधु मुख्य आचार्यकों देनेमें आता हे. शाला (गणो) मेसे कोटिक गणके वहुत फाटे है, और तिसके पेटे न्नाग होके दो कुल, दो सा खायों और एक न्नत्ति हुआहै, इस वास्ते तिसका वमा लवा इतिहास होना चाहिये, और यह कहना अधिक नही होवेगा, क्योंकि लेखोंके पुरावे ऊपरसें तिसकी स्थापना अपणे ईसवी सनको शूरुआतसें पहिले थोमेसें थोमा काल एक सैकमा (सो वर्ष) मे हूइथी, वाचक और गणि सरीपे इलकावोंकी तथा ईसवी सन पहिले सैकेके अंतमें असलकी शालाकी हयाती वतलावेहैके तिस,

वखतमें जैन पथकी वहुत मुदत हुआ चलती आत्मज्ञानोकी हयाती हो चुकीथी (कितनेही का लसें कंठाग्र ज्ञानवान् मुनियोकि परंपरायसें स-ततिं चली आतीथी) तिस संततिमें साधु लोक तिस वखतमें अपने पथकी वृद्धिकी वहुत हुस्या रीसें प्रवृत्ति राखतेथे, और तिस कालसें पहिले-न्नो राखी होनी चाहिये, जेकर तिनोमे वाचक थे तो यहन्नो संन्नवितहैके कितनेक पुस्तक वचा ने सीखाने वास्ते वरावर रीतीसे मुकरर करा हूआ संप्रदाय तथा धर्म सवधी शास्त्रन्नी था. क ल्पसुत्रके साथ मिलनेसें येह लेखों श्वेतावरमत-की दत कथाका एक वमा न्नागकों (श्वेतावरके शास्त्रके वमे न्नागकों) वनावटकें शक (कलक) सें मुक्त करते हैं, (श्वेतावर शास्त्रके वहुत हिस्से वनावटके नही है किंतु असली सचे है) और स्थिविरावलिके जिस न्नाग ऊपर हालमे हम अ ख्तियार चला सक्ते है, सो न्नाग नि केवल जैन-के श्वेतावर शाखाकी वृद्धिका न्नरोंसा राखने ला यक हवाल तिसमें हयाती सावित कर देता है,

और तिस जागमेंजी ऐसीयां अकस्मात् जूले तथा खामीयों मालुम होती है, के जैसे कोइ कं ग्रथको दंत कथाको हालमे लिखता हुआ बोच- मे रही जाए ऐसें हम धार सक्तेहै, यह परिणाम (आशय) प्रोफेसर जेकोबी और मेरी माफक जे सखस तकरार करता होवे के जैन दत कथा (जैन श्वेतावरके लिखे हुए शास्त्रोको वात) टी- काके असाधारण कायदे हेठ नही रखनी चाहि ये, अर्थात् तिसमेके इतिहास सर्वधी कथनो अ थवा दूसरे पथोकी दतकथामेसें मिली हुइ दूसरी स्वतंत्र खबरोसें पुष्टी मिलती होवे तो, सो मा- ननी चाहिये, और जो ऐसी पुष्टी न होवे तो जैनमतकी कहनी [स्यादवा] तिसकों लगानी चाहिये, तैसे सखसोंकों उत्तेजन देनेवाला है क ल्पसूत्रकी साथे मथुराके शिला लेखोंका जो मि लतापणा है, सो दूसरी यह वातजी तव लाता है कि इस मथुरा सहरके जैनलोक श्वेताम्बरी थे॥ इति माक्तर बूलर॥ अव हम [इस ग्रथके कर्त्ता] जी इन लेखोंकों वांचके जो कुछ समजे है सोइ

लिख दिखलाते है॥ जैनमतके वाचक १ दिवाकर २ क्षमाश्रमण ३ यह तीनो पदके नाम जो आचार्य इग्यारे अग, और पूर्वोके पढे हुएथे तिनको देनेमे आतेथे, जैसे उमास्वातिवाचक १ सिद्धसेन दिवाकर २ देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण ३; इस वास्ते मथुराके शिला लेखोंमे जो वाचकके नामसें आचार्य लिखे है, वे सर्व इग्यारे अग और पूर्वोके कणग्र ज्ञानवाले थे, और सुस्थित नामे आचार्यका नाम जो बूलरसाहिबने लिखाहै सो सुस्थित नामे आचार्य विरात् तीसरे सैकेमे हुआ है, तिससें कोटिक गणकी स्थापना हुइहै, और जो वइरी शाखा लिखी है सो विरात् ५८५ वर्षे स्वर्ग गये, वज्रस्वामीसें स्थापन हुइथी वइरी शाखाके विना जो कुल और शाखाके आचार्य स्थापनेवाले सुस्थित आचार्यके लगभग कालमें हुए सम्भव होतेहै, इन लेखोंको देखके हम अपने भाइ दिगवरोंसे यह विनती करते है कि जरा मतका पक्षपात छोडके इन लेखोंकी तर्फ जरा ख्याल करोके इन लेखोंमें लीखे हुए गण, कुल शाखाके

नाम श्वेतावरोके कल्पसूत्रके साथ मिलते है, वा तुमारेभी किसी पुस्तकके साथ मिलते है, मेरी समझमे तो तुमारे किसी पुस्तकमें ऐसे गण, कुल, शाखाके नाम नही है, जे मथुराके शिला लेखोंके साथ मिलते आवें इससे यह निसंदेह सिद्ध होता है, कि मथुराके शिला लेखोंमें सर्व गण, कुल शाखा, आचार्योंके नाम श्वेतावरोंके है, तो फेर तुमारे देवनसेनाचार्यने जो दर्शन सार ग्रंथमें यह गाथा लिखीहैकि छत्तीस बाससए, विक्कम निवस्स, मरण पत्तस्स, सोरठे वल्लहीए, सेवम संघस मुपन्नो ॥१॥

अर्थ. विक्रमादित्य राजाके मरा एकसौ छत्तीस १३६ वर्ष पीछे सोरठ देशकी वल्लभी नगरीमें श्वेतपट (श्वेतावर सघ उत्पन्न हुआ) यह कहना क्योंकर सत्य होवेगा, इस वास्ते इन शिला लेखोसें तुमारा मत पीछेसें निकला सिद्ध होता हे, इस वास्ते श्री विरात् ६०९ वर्ष पीछे दिगबर मतोत्पत्ति, इस वाक्यसे श्वेतांबरोका कथन सत्य मालुम होता है, और अधुनक मतवाले

ढुंढक, तेरापथी वगेरे मतोवालोंसेंन्नो हम मित्रतासें विनती करते हैके, तुमन्नो जरा इन लेखेकों वाचके विचार करोके श्री महावीरजीकी प्रतिमा के ऊपर जो राजा वासुदेवका संवत् ए७ अगनवेका लिखा हुआहै, और एक श्री महावीरजी की प्रतिमाकी पलाठी ऊपर राजा विक्रमसें पहिले हो गए किसी राजेका संवत् विसका लिखा हुआहै, और इन प्रतिमाके वनवनेवाले श्रावक श्राविकाके नाम लिखे हूएहै, और दश पूर्वधारी आचार्योंके समयके आचार्योंके नाम लखे हूएहै॥ जिनोने इन प्रतिमाकी प्रतिष्टा करीहै, तो फेर तुम लोक शास्त्राके अर्थ तो जिनप्रतिमाके अधिकारमें स्वकल्पनासें जूठे करके जिन प्रतिमाको उत्थापना करतेहो, परतु यह शिला लेख तो तुमारेसें कदापि जूठे नही कहे जाएगे, क्योंके इन शिला लेखोंको मर्व यूरोपीयन अग्रेज सर्व विद्वानोने सत्य करके मानेहै, इस वास्ते मानुष्य जन्म फेर पाना दुर्लभहै, और थोमे दिनकी जिंदगीहै, इस वास्ते पक्षपात गेमके तुम सच्चा धर्म

तप गछादि गछोंका मानो, और स्वकपोल क-
ल्पित बावीस २२ टोलेका पंथ और तेरापंथीयों
का मत छोड देवो, यह हित शिक्षा मै आपकों
अपने प्रिय बंधव मानके लिखीहै ॥

प्र १५८–हमारे सुननेमे ऐसा आयाहैकि
जैनमतमे जो प्रमाण अंगुल (भरत चक्रीका अ-
गुल) सो उत्सेधांगुल (महावीरस्वामिका आधा-
अगुल) सें चारसौ गुणा अधिकहै, इस वास्ते
उत्सेधांगुलके योजनसें प्रमाणांगुलका योजन
चारसौ गुणा अधिकहै, ऐंसे प्रमाण योजनसें ऋ
षभदेवकी विनोता नगरी लाबी बारा योजन और
चौडी नव योजन प्रमाणथी जब इन योजनाके
उत्सेधांगुलके प्रमाणसे कोस करीये, तब १४४००
चौद हजार चारसौ कोस विनीता चौडी और
१९२०० कोस लंबी सिद्ध होतीहै, जब एक नग
री विनिता इतनी बडी सिद्ध हूइ, तबतो अमेरि
का, अफरीका, रुस, चीन, हिंदुस्थान प्रमुख सर्व
देशोंमें एकही नगरी हूइ, और कितनेक तो चा-
रसौ गुणेसेंभी संतोष नही पातेहै, तो एक हजार

गुणा उत्सेध योजनसें प्रमाण योजन मानते हैं,
तब तो विनीता ३६००० हजार कोस चौडी और
४८००० हजार कोस लांबी सिद्द होती है, इस
कालके लोकतो इस कथनको एक मोटी गप्प स
मान समझेंगे, इस वास्ते आपसें यह प्रश्न पूछते
हैं कि जैनमतके शास्त्र मुजब आप कितना बडा,
प्रमाण अंगुलका योजन मानतेहो ?

उ जैनमतके शास्त्र प्रमाणे तो विनीता
नगरी और द्वारकाका मापा और सर्व द्वीप, स-
मुद्र, नरक, विमान पर्वत प्रमुखका मापा जिस
प्रमाण योजनमें कहाहै सो प्रमाण योजन उ-
त्सेधांगुलके योजनसें दश गुणा और श्री महावी
रस्वामीके हाथ प्रमाणसें दो हजार धनुषके एक
कोस समान (श्री महावीरस्वामीके मापेसे सवा
योजन) पाच कोस जो क्षेत्र होवे सो प्रमाण यो
जन एक होताहै, ऐसे प्रमाण योजनसें पूर्वोक्त
विनीता जबू द्वीपादिका मापाहै, इस हिसावसे
विनीता द्वारकादि नगरीया श्री महावीरके प्रमा
णके कोसोंसे चौडीया ४५ पैंतालीस कोस और

लंबीया साठकोस प्रमाण सिद्द होतीया है इतनी वमी नगरीको कोइन्नी बुद्दिमान् गप्प नही कह सकताहै, क्योंकि पीछले कालमे कनोज नगरीमे ३०००० तीस हजार डुकानो तो पान वेचनेवालो की थी, ऐसे इतिहास लिखनेवाले लिखतेहै तो, सो नगर वहुत वमा होना चाहिये अन्यन्नी इस कालमे पैकिन नदन प्रमुख वमे वमे नगर सुने जातेहै, तो चौथे तीसरे आरेके नगर इनसे अधिक वमे होवे तो क्या आश्चर्य है, और जो चारसौ गुणा तथा एक हजार गुणा उत्सेधागुलके योजनसे प्रमाणागुलका योजन मानते हैं, वे शास्त्रके मतसें नही है, जो श्री अनुयोगद्वार सूत्रके मूल पाठमें ऐसा पाठ है, उत्सेधागुलसे सहस्सगुणं प्रमाण गुलंन्नवति इस पाठका यह अन्निप्राय है कि एक प्रमाणागुल उत्सेधागुलसें चारसौ गुणीतो लाबी है, और अढाइ उत्सेधागुल प्रमाण चौमी है, और एक उत्सेधागुल प्रमाण जामी [मोटी] है, इस प्रमाण अंगुलके जब उत्सेधांगुल प्रमाण सूची करोये तब प्रमाणागुलके तीन

गुणी एसे प्रमाणागुलसें पृथ्वी आदिकका मापा करना, अब चूर्णिकार कहता है कि ये दोनो मत हजार गुणो अगुल और चारसों गुणी अगुलके मापेसें पृथ्वी आदिकके मापनेके मत, सूत्र ऽन- णित नही (सिद्धात सम्मत नही) है, और अंगुल सत्तरी प्रकरणके कर्त्ता श्री मुनिचद्र सूरिजी (जो के विक्रम सवत् ११६१ मे विद्यमान थे) इन पूर्वोक्त दोनो मतोंकों दषण देतेहै तथाच तत्पाठ ॥ किचमयेसुदोसुविमगहगकलिगमाइ आसव्वेपाये- णारियदेसाएगमियजोयणेहुति ॥ १६ ॥ गाथा ॥ इसकी व्याख्या ॥ जेकर ऐसे मानीयेके एक प्र- माण अगुलमें एक सहस्र उत्सेधागुल अथवा चा रसौ उत्सेधागुल मावे, ऐसे योजनोसे पृथ्वी आ दिक मापीए, तवतो प्रायें मगधदेश, अगदेश, कलिगदेशादि सर्व आर्य देश एकही योजनमें मा जावेगे, इस वास्ते दशगुणें उत्सेधागुलके विष्कं- भपणेसें मापना सत्य है, इस चर्चासे अधिक पाचसौ धनुपकी अवगाहना वाले लोक इस छो टेसें प्रमाणवाली नगरीमें क्योंकर मावेंगे, और

द्वारकाके करोमों घर कैसें मावेंगे, और चक्रवर्त्ती के ठानवे ए६ करोम गाम इस ग्रेटेसे ज्ञरतखममें क्योंकर वसेंगे, इनके उत्तर अगुलसत्तरीमे वहूत अच्छीतरेसें दीने हैं, सो अंगुलसत्तरी वाचके देखना, चिंता पूर्वोक्त नही करनी, यह मेरा इस प्रश्नोत्तरका लेख बुध्धिमानोंको तो संतोपकारक होवेगा, और असत् रूढीके माननेवालोंकों अप्रज्ञा जनक होवेगा, इसी तरे अन्यज्ञी जैनमतकी कितनीक वाते असतरुढीसें शास्त्रसें जो विरुद्द हे, सो मान रक्खी है, तिनका स्वरुप इहा नही लिखते है

प्र १५ए—गुरु कितगे प्रकारके किस किस की उपमा समान और रूप १ उपदेश २ क्रिया ३ कैसी और कैसेके पासों धर्मोपदेश नही सुनना और किस पासो सुनना चाहिये

उ —इस प्रश्नका उत्तर सपूर्ण नीचे मुजव समऊ लेना

एक गुरु चास (नीलचास) पक्षी समान है १

जैसे चाष पक्षीमें रूप है, पाच वर्ण सुदर होनेसे और शकुनमेंभी देखने लायक है १ परतु उपदेश (वचन) सुदर नही है, २ कीडे आदिके खानेसें क्रिया (चाल) अछी नही है ३ तैसेही कि, तनेक गुरु नामधारीयोमें रूप (वेष) तो सुविदित साधुका है १ पर अशुद्द (उत्सूत्र) प्ररूपनेसें उपदेश शुद्ध नही, २ और क्रिया मूलोत्तर गुण रूप नही है, प्रमादसे निरवद्याहारादि नही गवेषण करते हैं ३ यडुक्त ॥ दगपाणपुप्फफलअणेसणिज्जं गिहछकिच्चाइअजयापडिसेवतिजइवेसविडवगानर ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ अस्यार्थ ॥ सचित्त पाणी, फूल, फल, अनेषणीय आहार गृहस्थके कर्त्तव्य जिवहिंसा १ असत्य २ चोरी ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ रात्रिभोजन स्नानादि असयमी प्रति सेवतेहैं, वेभी गृहस्थ तुल्यही है, परंतु यतिके वेषकी विटबना करनेसे इस वातसें अधिक है, ऐसे तो सप्रति कालमे दुखम आरेके प्रभावसे वहूत है, परतु तिनके

नाम नही लिखते है, अतीत कालमेंतो ऐसे कु-
लवालकादिकोंके दृष्टात जान लेने, कुलवालकमें
सुविहित यतिका वेषतो था. १ पर मागधिका ग
णिकाके साथ मैथुन करनेमें आशक्त था, इस वास्ते
अछो क्रिया नहोथी २ और विशाला नगादि महा
आरम्भादिका प्रवर्त्तक होनेसे उपदेशभी शुद्ध नहीं
था, सामान्य साधु होनेसे वा उपदेशका तिसकों
अधिकार नही था, ३ ऐसेही महाव्रतादि रहित
१ उत्सूत्र प्ररूपक (गुरु कुलवास त्यागी) सो
कदापि शुद्ध मार्ग नही प्ररूप शक्ताहै २ निकेवल
यति वेषधारक है ३ इति प्रथमो गुरु भेद स्वरु
प कथन ॥१॥

दूसरा गुरु क्रौंच पक्षी समान है २ १

क्रोचपक्षीमे सुदर रूप नही है, देखने योग्य
वर्णादिके अभावसे १ क्रियाभी अछो नही, कीमे
आदिकोंके भक्षण करनेसे २ केवल उपदेश (म
धुर ध्वनि रूप) है ३ ऐसेही कितनेक गुरुयोंमे
रूप नही चारित्रिये साधु समान वेषके अभाव
से १ सत क्रियाभी नही, महाव्रत रहित और

प्रमादके सेवनेसे २ परंतु उपदेश शुद्ध मार्ग प्ररूपण रूप है ३ प्रमादमें पमे और परिव्राजकके वेषधारी ऊपन्न तीर्थंकरके पोते मरीच्यादिवत् अथवा पासत्थे आदिवत् क्योंकि पासत्थेमें साधु समान क्रिया तो नही है १ और प्रायें सुविहित साधु समान वेषन्नी नही, यदुक्त ॥ वत्थंडुपम्लि दियमपाणसकन्निअंडुकूलाई इत्यादि॥ अर्थ —वस्त्र डुप्रति लेखित प्रमाण रहित सदशक पछेवमी रखनेसें सुविहितका वेष नही २ पर शुद्ध प्ररूपक है, एक यथाछंदेकों वर्जके पासत्था १ अवसन्ना २ कुशील ३ संसक्त ४ ये चारों शुद्ध प्ररूपक होसकेहै, परंतु दिन प्रतिदश जणोका प्रतिबोधक नंदिषेणसरीषे इस न्नागेमें न जानने, क्योंके नंदिषेणके श्रावकका लिंग था ॥ इति डुसरा गुरु स्वरूप न्नेद ॥२॥

तीसरा गुरु न्नमरे समान है ३

न्नमरमे सुदर रुप नही, कृश्न वर्ण होनेसें १ उपदेश (तिसका उदात्त मधुर स्वर) नही है २ केवल क्रियाहै उत्तम फूलोंमेंसे फूलोंको विना डुख देनेसे तिनका परिमल पीनेसे ३ तैसेही कितनेक

गुरु यतिके वेषवालेभी नहीहै १ और उपदेशक भी नही है २ परंतु क्रिया है, जैसे प्रत्येक बुद्ध दिकोमे प्रत्येकबुद्ध, स्वयंबुद्ध तीर्थंकरादि यद्यपि साधुतो है, परंतु तीर्थगत साधुयोके साथ प्रवचन १ लिंगसे २ साधर्मिक नही है, इस वास्ते यति वेष भी नही,१ उपदेशक भी नही २ "देशनाऽनासेवक. प्रत्येकबुद्धादि गित्यागमात्" क्रियातो है, क्योंकि तिस भवसेंही मोक्ष फल होनाहै ॥ इति तृतियो गुरु स्वरूप भेद ॥३॥

चौथा गुरु मोर समान है. ४

जैसे मोरमें रूपतो है पंच वर्ण मनोहर १ और शब्द मधुर केकारूप है २ परं क्रिया नही है, सर्प्पादिकोकोभी भक्षण कर जाता है, निर्दय होनेसें ३ तैसे गुरुयो कितनेकमें वेष १ उपदेश तो है २ परंतु सत्क्रिया नही है, ३ मंग्वाचार्य वत् ॥ इति चोथा गुरु स्वरूप भेद ॥४॥

पाचमा गुरु कोकोला समान है. ५

कोकिलामे सुंदर उपदेश (शब्द) तो है, पंचम स्वर गानेसे १ और क्रिया आबकी माजर

दि शुचि आहारके खाने रूपहै तथा चाहु ॥ आहारे शुचिता, स्वरे मधुरता, नोमे निरारम्नता। वंघौ निर्ममता, वने रतिकता, वाचालता माधवे॥ त्यक्त्वा तद्विज कोकीलं, मुनिवरं दूरात्पुनर्दंजिक। वदंते वत खजन, कमि ऊुज चित्रा गति कर्मणा ॥१॥ परतु रूप नही काकादिसेंजी हीनरूप होनेसें ३ तैसेहो कितनेक गुरुयोंमे सम्यक् क्रिया १ उपदेश २ तोहै, परतु रूप (साधुका वेष) किसी हेतुसें नही है, सरस्वतीके छुडाने वास्ते यति वेष त्यागि कालिकाचार्य वत् ॥ इति पाचमा गुरु स्वरूप नेद ॥ ५ ॥

छठा गुरु हस समान है. ६

हसमे रूप प्रसिद्ध है १ क्रिया कमल नालादि आहार करनेसें अच्छोहै २ परतु हंसमे उपदेश (मधुर स्वर) पिक शुकादिवत् नही है ३ तैसे ही कितने एक गुरुयोंमें साधुका वेष १ सम्यक् क्रियातो है २ परतु उपदेश नही, गुरुने उपदेश करनेकी आज्ञा नही दीनी है, अनधिकारी होनेसें धन्यशालिभद्रादि महा ऋषियोवत् ॥ इति छठा

गुरु स्वरूप भेद ॥६॥

सातमा गुरु पोपट तोते समान है. ७

तोता इहा वहुविध शास्त्र सूक्त कथादि परिज्ञान प्रागल्भ्यवान् ग्रहण करना तोता रूप करके रमणीय है १ क्रियां आब कदली दाडिम फलादि शुचि आहार करता है इस वास्ते अछी है. २ उपदेश वचन मधुरादि तोतेका प्रसिद्ध है ३ तैसे कितनेक गुरु वेष १ उपदेश २ सम्यक क्रिया ३ तीनो करके सयुक्त है, श्रीजवु श्रीवज्रस्वाम्यादिवत् इति सातमा गुरु स्वरूप भेद ॥७॥

आठमा गुरु काक समान है ८

जेसे काकमे रूप सुदर नही है १, उपदेशभी नही, कडुया शब्द बोलनेसें २ क्रियाभी अछी नही है, रागी, वूढे वलदादिकोंके आख कढ लेनी, चूच रगडनी और जानवरोका रुधिर मास, मलादि अशुचि आहारि होनेसें ३ ऐसेंही कितनेक गुरुयोंमे रूप १ उपदेश २ क्रिया ३ तीनोंही नही है, अशुद्ध प्ररूपक सयम रहित पासत्थे आदि जनने, सर्व परतीर्थीकभी इसी भगमे जानने ।

इति आठमा गुरु स्वरूप भेद ॥ ८ ॥

इनमेसें उपदेश सुनने योग्यायोग्य कौन है

इन आगेही भागोमें जो भग क्रिया रहित (संयमरहित) है वे सर्व त्यागने योग्य है, और जो भग सम्यकू क्रिया सहित है वे आदरने योग्य है, परतु तिनमें भी जो उपदेश विकल भंगहै वे स्वतारकभी है, तोभी परकों नही तारसक्ते है, और जे भग अशुद्धोपदेशक है वेतो अपनेकों और श्रोताकों ससार समुद्रमें डबोनेही वाले है, इस वास्ते सर्वथा त्यागने योग्य है, और शुद्धोपदेशक, क्रियावान् पक्ष कोकिलाके दृष्टात सूचित अंगीकार करने योग्य है, त्रीक योगवाला पक्ष आतेके दृष्टात सूचित सर्वसे उत्तमहै । और शुद्ध प्ररूपक पासत्थादि चारोके पास उपदेश सुनना भी शुद्ध गुरुके आज्ञावसे अपवादमें सम्मत है

प्र १६०—इस जगतमें धर्म कितने प्रकारके और कैसी उपमासें जानने चाहिये

उ इस प्रश्नोत्तरका स्वरूप नीचेके लिखे

यंत्रसें जानना धर्म पांच प्रकारका है

एक धर्म कं-
थेरी वन स
मानहै, जैसें
कथेरी वननि
ष्फल हैं सर्व
प्रकारसें केव
ल कांटो क
रके व्याप्त हो
नेसें लोकाकों
विदारणादि
अनर्थ जन-
क होता है,
और तिस व-
नमे प्रवेश नि
र्गमनभी दु
ष्कर है॥१॥

इस वन समान नास्तिक मतियों-
का माना हुआ धर्म है, सर्वथा थो-
डासाभी शुभ फल नही देता है,
और परभवमें नरकादि गतियोंमे
दुख अनर्थकों देता है, और इस लो
कमें लोक निंदा! धिक्कार नृप दण्डा-
दिके भयसे इस कुकर्मी नास्तिक म-
तमे प्रवेश करना मुशकल है और
जो इस मतमे प्रवेश कर गये हैं, ति
नकों स्व इछानुसार मद्य मांसादि भ
क्षण मात, बहिन बेटोको अपेक्षा
रहित स्त्रीयोंसें भोगादि विषयके सुख
स्वादके सुखको लपटतासें तिस ना-
स्तिक मतमेंसें निकलनाभी मुशकल
है, इस वास्ते यह धर्म सर्वथा सुज्ञ-
जनोको त्यागने योग्यहै, इस मतमें
धर्मके लक्षणतो नही है, परंतु तिसके
माननेवाले लोकोंने धर्म मान रक्खा

है, इस वास्ते इसका नामभी धर्मही लिखाहै ॥ इति प्रथम धर्म भेद॥१॥

एकधर्मशमी खेजमो बबूल कीकर खदिर बेरी करीरादि करके मिश्रित वन समानहै यह वन विशिष्ट शुभ फल नही देता है किंतु सागरी बब्बूल फलादि सामान्य नीरस फल देतेहै, सागरोपको शुष्क हुइ होइ किं-

इस वन समान बौद्धका धर्म है, क्योंकि ब्रह्मचर्यादि कितनेक सत् क्रिया और ध्यान योगाभ्यासादिकके करनेसें मरा पीछे व्यंतर देवताकी गतिमे उत्पन्न होनेसें कुछक शुभ सुख रूप फल भोगमे देताहै, तथा चोक्त बौद्ध शास्त्रे ॥ मृद्वीशय्या प्रातरुत्थाय पेया॥ भक्त मध्ये पानकचा परान्हे ॥ द्राक्षा षाण शर्कराच र्द्धरात्रौ ॥ मोक्षश्चात शाक्य पुत्रेण दृष्ट ॥१॥ मणुन्न भोयणं, भुच्चा मणुन्न, सयणासण मणुन्न, सिअगारंसि मणुन्न, झायए मुणी ॥२॥ इत्यादि ॥ बौद्ध मतके शास्त्रानुसारे अपने शरीरकों पुष्ट करना, मनके अनुकूल आहार, शय्यादिकके भोगसे और वाहनिकुके पात्रमें कोइ मास दे देवे तो तिसकोभी खा लेना,

चित् प्रथम खाते हूए मो ठी लगती हे परंतु कंटका कोर्स होनेसें विदारणादि अनर्थका हेतु होवेहे ॥२॥	स्नानादिकके करनेसें पाचो इंद्रियोंके पोपनरूप और तप न करनेसें आदिमें तो मीठा (अछा) लगता है, परंतु भवांतरमें दुर्गति आदिक अनर्थ फल उत्पन्न करताहे, इस वास्ते यह धर्मभी त्यागने योग्य हे ॥ इति दूसरा धर्म भेद ॥१॥
एक धर्म पर्वतके वनतथा जंगली वन समानहै,इस वनमें थोहर, कथेरो, कुमार प्रमुखके फल देनेवाले वृक्षहै और कंटकादिसे विदारण करणे	इम वन समान तापस ? नैयायिक, वैशेषिक, जैमनीय, सांख्य, वैश्नवआदि आश्रित सर्व लौकिक धर्म और चरक परिव्राजक इनके विचित्रपणे, ले विचित्र प्रकारका फलहै सोइ खातेहै, कितनेक वेदोक्त महा पशुवध रूप स्नान होमादि करके ध. माननेहै, वे कथेरो वनवत् हे. परभवमें अनर्थरूप जिनका प्राये फल होवेगा. और कितनेक तो तुरमणीइदत्तराजाकी तरे निकेवल नरकादि

से अनर्थके-
न्नी जनकहै
१ और कित
नेक धव स
ल्लकोके सुप
लाश पनस
सीसमादि वृ
दहै,इनके फ
लतो नि सा
रहै, परतु वि
शिष्ट अनर्थ
नक नहीहै
और कित
वरी खे-
री खयरा
दि नि सार
नशनफलदेते
हैकटकोसिचि
दारणादि अ

फल वाले होते हैं। तथाचोक्त आर-
एयके ॥ येवैइहयथा श यज्ञेपुपशुन्विश
नतितेतथा ७ इत्यादि ॥ तथाशुकर्स-
वादे॥ यूप छित्वा, पशून् हत्वा, कृत्वा
रुधिर कर्दम, यद्येव गम्यते स्वर्गे, नर-
के केन गम्यते ॥ १ ॥ स्कधपुराणे ॥
वृक्षा छित्वा, पशून् हत्वा, कृत्वा रु
धिर कर्दम, दग्ध्वा वन्हौ तिलाज्यादि,
चित्र स्वर्गोभिलष्यते ॥१॥ कितनेक
अपात्रको अशुद्ध दान गायत्र्यादिके
जापादि धव पलाशादिवत् प्राय फल
देनेवालेको सामग्री विशेष मिले कि
चित् फलजनक है, परं अनर्थ जनक
नही, विवक्षितहै, इस स्थलमे प्रतिदिन
लक्ष दान देनेवाला मरके हाथी हूए
सेठवत्, तथा दानशालादि करानेवाले
नंदमणिकारवत् और सेचनक हाथीके
जीव लक्ष भोजी ब्राह्मणवत् दृष्टांत
जानने ॥२॥ कितनेक तो सावद्य (स

निष्टके जन-
कन्नीहोतहै३
और कितने-
क किपाका-
दि वृक्ष है,
मुख मीठे प-
रिणाममे वि
रस फलके दे
नेवालेहै४कि
तनेक नडुम्बर
(गूलर) वि
ल्वादि फल
नि.सारशुन्न
फलवाले क-
टकादिकें अ-
न्नावसे अन-
र्थ जनकनहो
है५ कितनेक
नारिंग, जबी

पाप) अनुष्टान, तप, नियम दानादि
अन्यायसे द्र्योपार्जन करी कुपात्रदा
नादि वेरी खेजमीवत् किंचित् राज्या
दि असार शुन्न फल दुर्लन्न बोधिप-
णा हीन जातित्व परिणाम विरसादि
अनर्थन्नी देवेहै, कौणिक पिछले न्न-
वमें तपस्वीवत् और जैनमति नाम
मिथ्यादृष्टी सुसढादि देव गतिमें गए
बहुल ससारी हूए, वे न्नी मिथ्या
तप करनेमे तत्पर हूए होए,इसी न्नगमे
जानने ॥३॥ कितनेक किपाकादिकी
तरें असत् आग्रह देव गुरुके प्रत्यनी-
कादि न्नाव वाले तथाविध तपोनुष्टा-
नादि करके एकवार स्वर्गादि फल देवें
बहुल ससार तिर्यच नरकादिके दुःख
देनेवाले होतेहैं, गौशालक, जमालि
आदिवत् ॥४॥ तथा कितनेक नडन्ना
व विशेष पात्र गुणादि परिज्ञान रहि
त दान पूजादि मिथ्यात्वके रागसें
करतेंहैं, वे नडुंबरादिवत् किंचित् राज्य

र, करणादि
मध्यम फल
के वृक्षहे, परं
तु अनर्थ ज-
नक नहीहै६
कितनेक रा
यण (खिर-
णी) आव,
प्रियगु प्रमु
ख सरस शु-
भ पुष्प फल
वाले है, ये
सुर्व मालकी
रहित जानने
व ऐसे तार-
तम्यतासें अ
धम, मध्यम,
उत्तम वृक्षों-
की विचित्र-

मनुष्यके भोग समयादि असार शुभ
फलही देतेहै, दूसरेके उपरोधसे दान
देनेवाले सुदर वाणीयेकीतरें जैनधर्मा
श्रित भी निदान सहीत अविधिसें
तप अनुष्टान दानादि करनेवालेभी
इसी भगमें जान लेने, चद्र, सूर्य वहु
पुत्रिकादिके दृष्टा । जान लेने ॥ ५ ॥
कितनेक तापसादिधर्मी वहुत पाप र
हित तपोनुष्टान कदमूल फलादि स-
चित्त भोजन करनेवाले अल्प तपवाले
नारग, जबीर, करणादि तरुवत् ज्यो
तिषि भवनपत्यादि वि मध्यम देवर्द्धि
फलदायीहै. श्री वीर पिछले भवोंमे
परिव्राजक पूर्ण तापसवत् तथा जैन
मति सरोस गोरव प्रमाद सयमीआ
दि मगुकी वध करनेवाले रूपक मुनि
मगु आचार्यादिवत् ॥ ६ ॥ कितनेक
तामलि ऋषिको तरें उग्र तप करने-
वाले चरक परिव्राजकादि धर्मवाले

तासें पर्वतके वनोकी भी विचित्रताजा ननी ॥३॥	आंबादि वृक्षोंवत् ब्रह्मदेवलोकावधि सुख फल देतेहै ॥७॥ ये सर्व पर्वतके वन समान कथन करे, परंतु सम्यग् दृष्टीकों ये सर्व त्यागने योग्यहै ॥ इति तीसरा धर्म भेद ॥३॥
एक धर्म भ्र पवन समान श्रावक धर्महै राजके वनमें अंब, जंबू रा- जादनादि ज घन्य वृक्ष है केला, नालो केर सोपारी आदिमध्यम माधवी लता तमाल एला, लवग चदना गुरुतगरा दय	इस वन समान श्राद्ध (श्रावक) धर्म सम्यक्त्वे पूर्वक बाराव्रताकी अपेक्षा तेरासौकरोड अधिक भेद होनेसें वि- चित्र प्रकारका सम्यग् गुरु समीपे अं- गीकार करनेसें परिगृहीतहै, अज्ञान मए लोकिक धर्मसे अधिकहै, और अ तिचार विषय कषायादि चौर श्वाप- दादिकोसें सुरक्षितहै, और गुरु उप- देश आगमाभ्यासादि करके सदा सु- सिच्य मानहै, सौ धर्म देवलोकके सुख जघन्य फल है, सुलभबोधि हो- नेसे और निश्चिन जलदी सिद्धि सु- खाके देनेवाले होनेसे और मिथ्या- त्वोके सुखासें बहुत सुभग आनंद

उत्तम चंपक राज चंपक जाति पाढलादि फूल तरु विचित्र हे, ये सर्व गिरिवनके वृक्षोसें सींचे, पाले हुए होनेसे अधिक फल, पत्र पुष्पवाले हे, सदा सरस बहु मोले फलादि देते हे ॥४॥

दि श्रावकोकी तरे देतेहै, और उत्कृष्टसें तो जीर्ण सेठादिकी तरें बारमे अच्युत देवलोकके सुख देतेहै ॥ इस वास्ते बारावत रूप श्राद्ध (श्रावक) धर्म यत्नसें अंगीकार गृहस्थ लोकोने करना, और अधिक अधिक शुद्धभावांसे पालना आराधना चाहिये ॥
इति चौथा धर्म भेद ॥ ४ ॥

एक धर्म देवताके वनसमान साधु धर्म हे, देवताके वनमें देव

इस वन समान चारित्र धर्मभी पुलाक वकुश कुशील निर्ग्रंथ स्नातकादि विचित्र भेदमय है, विराधक श्रावक साधुयोंका धर्म तीसरे मिथ्यात्व धर्ममे ग्रह करनेसे इस धर्ममे अवि-

तायोंकी तार ताम्यतासें ऊ दि मानोके क्रोमाकरनेके नदन वनादि मेंजो राजा के वनवत् ज घन्य,मध्यम, उत्तमवृक्ष हो तेहै,सर्व ऋतु के फलवान् वृक्षोंके होने- से और देव- ताके प्रजाव- से सर्व रोग विषादि दूर करे. मनचि तित रूप क रण जरा प	राधक यति धर्मवाले जानने, तिन को जघन्य सौधर्म देवलोकके सुखरूप फ लहै आराधिक श्रावक धर्मवालेसे अ धिक और बारा कल्प देवलोक, नव ग्रैवेयकादि मध्यम सुख और उत्कृ- ष्टतो अनुत्तर विमानके सुख ससारि- क और ससारातीत मोक्ष फल देतेहै, इस वास्ते ते यह धर्म सर्व शक्तिसे उत्तरोत्तर अधिक अधिक आराधना चाहिये, यह सर्व धर्मासे उत्तम धर्महै, यह कथन उपदेश रत्नाकरसे किंचित् लिखाहै ॥

लित नाशक इत्यादि बहु प्रभाववाली वनस्पतीया पत्र फलादिकरके संयुक्तहै, पिछले सर्व वनोंसें यह प्रधान वन है।	इति पांचमा धर्म भेद ॥५॥

प्र १६१–जो जैनमतमें राजे जैनधर्मी होते होवेगे, वे जैनधर्म क्योंकर पाल सक्ते होवेंगे, क्योंकि जैनधर्म राज्यधर्मका विरोधी हमको मालुम होताहै

उ–गृहस्थावस्थाका जैनधर्म राज्यधर्म (राज्यनीति) का विरोधी नही है क्योंकि राज्यधर्म चोर यार खूनी असत्यभाषी प्रमुखाकों कायदे मूजब दंड देनाहै इस राज्यनीतिका जैनराजाके प्रथम स्थूल जीवहिंसा रूप व्रतका विरोध नही है, क्योंकि प्रथम व्रतमें निरपराधिकों नही मा-

रना ऐसा त्याग है, और चौर यार खूनी असत्य न्नापी आदिक अन्याय करनेवालेतो राजाके अ-पराधी है, इस वास्ते तिनके यथार्थ दम देनेसे जैन धर्मी राजाका प्रथम व्रत न्नंग नही होताहे, इसी तरें अपने अपराधि राजाके साथ लमाइ करनेसें न्नी व्रत न्नग नही होताहे. चेटक महाराज संप्रति कुमारपालादिवत्, और जैनधर्मी राजे वारां-व्रतरूप गृहस्थका धर्म वहुत अछी तरेंसे पालते थे, जैसे राजा कुमारपालने पाले

प्र १६२–कुमारपाल राजाने वाराव्रत किस तरेके करे, और पाले थे

ज –श्री कुमारपाल राजाके श्री सम्यक्त्व मूल वाराव्रत पालनके थे ॥ त्रिकाल जिन पूजा १ अष्टमी चतुर्दशीमे पोपधोपवासके पारणेमे जो देखनेमे कोइ पुरुष आया तिसको यथार्थ वृत्ति दान देकर संतोष करना २ और जो कुमारपाल-के साथ पोपध करते थे तिनको अपने आवासमे पारणा कराना ३ टूटे हुए साधर्मिकका उद्धार क रना, एक हजार दीनार देना ४ एक वर्षमे साध

लित नाशक इत्यादि बहु प्रन्नाववाली ज्ञपधीया पत्र फलादिकरके सयुक्तहै, पिछले सर्व व नोसें यह प्रधान वन है॥ इति पाचमा धर्म ज्ञेद ॥५॥

प्र १६१–जो जैनमतमें राजे जैनध होते होवेगे, वे जैनधर्म क्योंकर पाल सक्ते — गे, क्योंकि जैनधर्म राज्यधर्मका विरोधी लुम होताहै

उ–गृहस्थावस्थाका जैनधर्म • नीति) का विरोधी नही है धपे

" ―ी असत्यज्ञापो मसु

बनवाए १६ ― २१

का उद्धार । रूप प्र

ऐसे अम्यक्तकी अ. ५१

तमे सपराधी विना मारो ऐसे श्[ऊपर चढाइ
एक नुपवास करना १ दूसरे व्रत्[त्रेमें कायोत्स
बोला जावे तो आचाम्लादि तप न्[थ करनेवालों
व्रतमे निसतान मरेका धन नही ले्[त्याग वृतमे
व्रतमे जैनी हुआ पीछे विवाह करणेका त्[नक द्रव्य
चोमासेके चार मास त्रिधा शील पालना, [की धर्म
न्नगे एक नुपवास करना, वचनसे न्नगे एक[धर्मि-
म्ल, कायसे न्नंगे एकाशन एक परनारी सदो[मो
विरुद धरना न्नोपलदेवी आदि आठों राणीयोके
मरे पीछे प्रधानादिकोंके आग्रहसेन्नी विवाह क-
रना नही, ऐसा नियम न्नग नहो करा आरात्रि-
कार्थ सोनेमयि न्नोपलदेवीकी मूर्त्ति करवाइ, श्री
हेमचड्सूरिजीए वासक्षेप पूर्वक राजर्षि विरु
दीना ४ पाचमे वृतमें छ करोम्का सोना, आठ
करोम्का रूपा, हजार तुला प्रमाण महर्घ्य म-
णिरत्न, वत्तीस हजारमण घृत, वत्तीस हजारम
ण तेल, लक्षा शालि चने, जुवार, मूग प्रमुख
धान्योके मूंढक रक्के पाच लाख ५००००० अश्व,
पाच हजार ५०००, हाथी, पाचसौ ५०० ऊट, घर,

हाट, सन्नायान पात्र गाडे वाहिनीये सर्व अलग अलग पाचसो पाचसो रखे इग्यारेसो हाथी ११००, पंचास हजार ५०००० संग्रामी रथ, इग्यारे लाख ११००००० घोडे, अठारह लाख १८००००० सुन्नट ऐसे सर्व सैनका मेल रखा ५ छठे वृतमें वर्षाकालमें पट्टनके परिसरसें अधिक नही जाना ६ सातमें न्नोगोपन्नोग वृतमे मद्य, मास, मधु, म्रक्षण, बहुबीज पचोडु वरफल, अन्नक्ष, अनंतकाय, घृत पूरादि नियम देवताके विना टीना वस्त्र, फल आहारादि नही लेना सचित्त वस्तुमे एक रानकी जाति तिसके बीडे आठ, रात्रिमें चारों आहारका त्याग वर्षाकालमे एक घृत विकृती थैनी, हरित शाक सर्वका त्याग सदा एकाशनक करना, पर्वके दिन अब्रह्मचर्य सर्व सचित विगयका त्याग ७ आठमें वृतमें सातों कुव्यसन अपने देशसें काढ देने, ८ नवमें वृतमें उन्नय काल सामायिक करना, तिसके करे हुए श्री हेमचद्रसूरिके विना अन्य जनसें बोलना नही दिनप्रते १२ प्रकाश योग शास्त्रके २० वीस वीतराग स्तोत्रके प

ढने ए दशमे वृतमें चतुर्मासेमे शत्रू ऊपर चढाइ नही करनी १० पोषधोपवासमे रात्रिमें कायोत्स र्ग करना, पोषधके पारणे सर्व पोषध करनेवालों कों न्नोजन कराना ११ अतिथी संविन्नाग वृतमें छुखिये साधर्मि श्रावक लोकोका, ७७ लक्ष ड्व्य का कर गेम्ना, श्री हेमचड्सूरिके ज्ञत्तरनेकी धर्म शालामें जो मुखवस्त्रिकाका प्रतिलेखक साधर्मि- कों ५०० पाचसौ घोम्रे ओर बारा गामका स्वामो करा, सर्व मुख वस्त्रिकाके प्रतिलेखकाको ५०० पाचसौ गाम दीने १७ इत्यादि अनेक प्रकारकी शुन्नकरणी विवेक शिरोमणि कुमारपाल राजाने करीथी यह गुरु १ धर्म २ और कुमारपालके वृ- ताके स्वरूप ज्ञपदेश रत्नाकरसें लिखे है

प्र १६३—इस हिंदुस्थानमें जितने पंथ चल रहेहै, वे प्रथम पीछे किस क्रमसें हूएहै, जैसें आ पके जाननेमे होवे तैसें लिख दीजिये ?

ज —प्रथम ऋषन्नदेवसें जैनधर्म चला१ पीछे सांख्यमत २ पीछे वैदिक कर्म कांम्रका ३ पीछे वे दात मत ४ पीछे पातंजलि मत ५ पीछे नैयायि-

क मत ६ पीछे बौद्धमत ७ पीछे वैशेषिक मत ८ पीछे शैव मत ९ पीछे वामीयोंका मत १० पीछे रामानुज मत ११ पीछे मध्व १२ पीछे निवार्क १३ पीछे कबीर मत १४ पीछे नानक मत १५ पीछे वल्लभ मत १६ पीछे दादुमत १७ पीछे रामानंदीयोंका मत १८ पीछे स्वामिनारायणका मत १९ पीछे ब्रह्म समाज मत २० पीछे आर्या समाज मत दयानंद सरस्वतीने स्थापन करा २१ इस कथनमें जैनमतके शास्त्र १ वेदभाष्य २ दत कथा ३ इतिहासके पुस्तकादिकोंका प्रमाण है ॥ त्यलम् ॥ अहमदावादका वासी और पालणपुरमें न्यायाधीश राज्याधिकारी श्रावक गिरधरला ल हीराभाइ कृत कितनेक प्रश्न तिनके उत्तर पा लिताणेमें चार प्रकार महा संघके समुदायने आ चार्य पद दत्त नाम विजयानंद सूरि अपर प्रसिद्ध नाम आत्माराम मुनि कृत समाप्त हुएहैं ॥ इन सर्व प्रश्नोत्तरोंमें जो वचन जिनागम विरुद्ध भूलसें लिखा होवे तिसका मिथ्या दुःकृत देताहुं । सर्व सुज्ञ जन आगमानुसार सुधारके लिख दीजो,

और मेरे कहे उत्सूत्रका अपराध माफ करजो ॥
इति प्रश्नोत्तरावलि नाम ग्रंथ समाप्तम्

(अथ गुरु प्रशस्तिः)

(अनुष्टुप् वृत्तम्-)

श्रीमद्वीर जिनेशस्य शिष्य रत्नेषु ह्युत्तम
सुधर्म इति नाम्नाऽभूत् पचम गणभृत् सुधी १
अयमेव तपागच्छ महाद्रोर्मूलमुच्चकैः
ज्ञेय· पौरस्त्यपट्टस्य भूषणं वाग्वि भूषण २
परंपराया तस्यासीत् शासनोत्तेजक· प्रधी
श्रीमद्विजयसिंहाख्यः कर्मठ· धर्म कर्मणि- ३
तस्य पट्टावरे चड विजय सत्यपूर्वक·
अभूत् श्रेष्ठ गुणग्रामैः संसेव्य· निखिलैर्जनै
पट्टे तदीयके श्रीमत् कर्पूरविजयाभिधः
आसीत् सुयशा· ज्ञान क्रिया पात्रं सदोद्यम· ५
तत्पट्ट वंश मुक्तासु मणिरिवेप्सितप्रद
सिद्धात हेमनिकष· क्षमा विजय इत्यभूत् ६
जिनोत्तम पद्म रूप कीर्त्ति कस्तूर पूर्वका
विजयाता क्रमेणैते वभूवुर्बुद्धिसागरा·

क मत ६ पीछे बौद्धमत ७ पीछे वैशेपिक मत ८ पीछे शैव मत ए पीछे वामीयोंका मत १० पीछे रामानुज मत ११ पीछे मध्व १२ पीछे निंबार्क १३ पीछे कबीर मत १४ पीछे नानक मत १५ पीछे वल्लभ मत १६ पीछे दाडुमत १७ पीछे रामानदीयोंका मत १८ पीछे स्वामिनारायणका मत १ए पीछे ब्रह्म समाज मत २० पीछे आर्या समाज मत दयानंद सरस्वतीने स्थापन करा २१ इस कथनमें जैनमतके शास्त्र १ वेदभाष्य २ दूत कथा ३ इतिहासके पुस्तकादिकोंका प्रमाण है॥ इत्यलम् ॥ अहमदावादका वासी और पालणपुरमें न्यायाधीश राज्याधिकारी श्रावक गिरधरलाल हीराभाइ कृत कितनेक प्रश्न तिनके उत्तर पालिताणेमें चार प्रकार महा संघके समुदायने आचार्य पद दत्त नाम विजयानद सूरि अपर प्रसिद्ध नाम आत्माराम मुनि कृत समाप्त हुएहै ॥ इन सर्व प्रश्नोत्तरोंमें जो वचन जिनागम विरुद्ध भूलसें लिखा होवे तिसका मिथ्या दुःकृत देताहु । सर्व सुज्ञ जन आगमानुसार सुधारके लिख दीजो,

और मेरे कहे उत्सूत्रका अपराध माफ करजो ॥
इति प्रश्नोत्तरावलि नाम ग्रंथ समाप्तम्.

(अथ गुरु प्रशस्तिः)

(अनुष्टुप् वृत्तम्-)

श्रीमद्वीर जिनेशस्य शिष्य रत्नेषु ह्युत्तम
सुधर्म इति नाम्नाऽभूत् पचम. गणभृत् सुधीः १
अयमेव तपागच्छ महाद्रोर्मूलमुच्चकैः
ज्ञेय पौरस्त्यपट्टस्य भूषणं वाग्वि भूषण २
परंपराया तस्यासीत् शासनोत्तेजक. प्रधी
श्रीमद्विजयसिंहाव्ह कर्मठ. धर्म कर्मणि- ३
तस्य पट्टावरे चञ्च विजय सत्यपूर्वकः
अभूत् श्रेष्ठ गुणग्रामैः ससेव्य. निखिलैर्जनै.
पट्टे तदीयके श्रीमत् कर्पूरविजयाभिधः
आसीत् सुयशाः ज्ञान क्रिया पात्र सदोद्यम' ५
तत्पट्ट वंश मुक्तासु मणिरिवेप्सितप्रद
सिद्धात हेमनिकष क्षमा विजय इत्यभूत् ६
जिनोत्तम पद्म रूप कीर्त्ति कस्तूर पूर्वकाः
विजयांता क्रमेणैते बभूवुर्बुद्धिसागराः ७

तस्य पट्टाकरे चिंता मणिरिवेप्सितप्रद'
मणिविजय नामाऽभूत् घोरेण तपसाकृश '
ततोऽभूत् बुद्धि विजय बुध्यष्टगुणगुम्फि
प्रस्तुतस्या स्मदीयस्य गच्छवर्यस्य नायक'
चक्रे शिष्येण तस्येय जैन प्रश्नोत्तरावली
सद्युक्त्या श्रीमदानद विजयेन सविस्तरा
सवत् वाण युगाऽकें डु पोप मास्यऽसित
त्रयोदश्या तिथौ रम्ये वासरे मगलात्मनि
पल्लवि पार्श्वनाथाऽधिष्ठिते प्रह्लादनेपुरे
स्थित्वाऽयं पूर्णतानीत ग्रथ प्रश्नोत्तरात्मक